

नमो नमो निम्मलदंसणस्स
पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरुभ्यो नमः

On Line – आगममंजूषा

[४०] आवस्सयं-[निज्जुत्तिसहियं]

* संकलन एवं प्रस्तुतकर्ता *

मुनि दीपरत्नसागर [M.Com., M.Ed., Ph.D.]

॥ किञ्चित् प्रास्ताविकम् ॥

ये आगम-मंजूषा का संपादन आजसे ७० वर्ष पूर्व अर्थात् वीर संवत् २४६८, विक्रम संवत्-१९९८, ई.स.1942 के दौरान हुआ था, जिनका संपादन पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री [आनंदसागरसूरिजी](#) म.सा.ने किया था। आज तक उन्ही के प्रस्थापित-मार्ग की रोशनी में सब अपनी-अपनी दिशाएँ ढूँढते आगे बढ़ रहे हैं।

हम ७० साल के बाद आज ई.स.-2012, विक्रम संवत्-२०६८, वीर संवत्-२५३८ में वो ही आगम-मंजूषा को कुछ उपयोगी परिवर्तनों के साथ इंटरनेट के माध्यम से सर्वथा सर्वप्रथम “**OnLine-आगममंजूषा**” नाम से प्रस्तुत कर रहे हैं।

*** मूल आगम-मंजूषा के संपादन की किञ्चित् भिन्नता का स्वीकार ***

- [१] आवश्यक सूत्र-(आगम-४०) में केवल मूल सूत्र नहीं है, मूल सूत्रों के साथ निर्युक्ति भी सामिल की गई है।
[२] जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) में भी केवल मूल सूत्र नहीं है, मूलसूत्रों के साथ भाष्य भी सामिल किया है।
[३] जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) का वैकल्पिक सूत्र जो “पंचकल्प” है, उनके भाष्य को यहाँ सामिल किया गया है।

[४] “ओघनिर्युक्ति”-(आगम-४१) के वैकल्पिक आगम “पिंडनिर्युक्ति” को यहाँ समाविष्ट तो किया है, लेकिन उनका मुद्रण-स्थान बदल गया है।

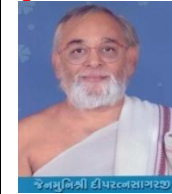
[५] “कल्प(बारसा)सूत्र” को भी मूल आगममंजूषा में सामिल किया गया है।

-मुनि दीपरत्नसागर

: Address:-

Mnui Deepratnasagar,
MangalDeep society, Opp.DholeswarMandir,
POST:- THANGADH Dist.surendranagar.
Mobile:-9825967397 jainmunideepratnasagar@gmail.com

मुनि दीपरत्नसागर



श्रीआवश्यकसूत्रं (सनिर्युक्तिकम्)

आभिणिबोहियनाणं सुयनाणं चैव ओहिनाणं च । तह मणपज्वनाणं केवलनाणं च पञ्चमयं ॥ १ ॥ उग्गह ईहाऽवाओ य धारणा
 एव हुंति चत्तारि । आभिणिबोहिअनाणस्स भेयवत्थू समासेणं ॥ २ ॥ अत्थाणं ओगहणम्मि उग्गहो तह वियारणे ईहा । ववसा-
 यम्मि अवाओ धरणंमि य धारणं बिंति ॥ ३ ॥ उग्गह इकं समयं ईहाऽवाया मुहुत्तमद्धं(मंतं) तु । कालमसंखं संखं च धारणा होइ नायवा ॥ ४ ॥ पुट्टं सुणेइ सद्धं रूवं पुण पासई अपुट्टं
 तु । गंधं रसं च फासं च बद्धपुट्टं वियागरे ॥ ५ ॥ भासासमसेटीओ सद्धं जं सुणइ मीसयं सुणई । वीसेटी पुण सद्धं सुणेइ नियमा पराघाए ॥ ६ ॥ गिण्हइ य काइएणं निसरइ तह वाइ-
 एण जोएणं । एगंतरं च गिण्हइ निसरइ एगंतरं चैव ॥ ७ ॥ तिबिहम्मि सरीरंमि उ जीवपएसा हवंति जीवस्स । जेहि उ गिण्हइ गहणं तो भासइ भासओ भासं ॥ ८ ॥ ओरालिय वेउ-
 द्विय आहारउ गेण्हई मुयइ भासं । सच्चं सच्चामोसं मोसं च असच्चमोसं च ॥ ९ ॥ कइहिं समएहिं लोगो भासाए निरन्तरं तु होइ फुडो ? । लोगस्स य कइभाए कइभाओ होइ भासाए ?
 ॥ १० ॥ चउहिं समयेहिं लोगो भासाए निरंतरं तु होइ फुडो । लोगस्स य चरिमंते चरिमंतो होइ भासाए ॥ १ ॥ ईहा अपोह वीमंसा, मग्गणा य गवेसणा । सण्णा सई मई पण्णा, सच्चं
 आभिणिबोहियं ॥ २ ॥ संतपयपरूवणया दव्वपमाणं च खित्त फुसणा य । कालो अंतर भागो भावे अप्पाबहुं चैव ॥ ३ ॥ गई इंदिए य काए जोए वेए कसाय लेसासु । सम्मत्त नाण
 दंसण संजय उवओग आहारे ॥ ४ ॥ भासग परित्त पज्जत्त सुहुमे सण्णी य होइ भव चरिमे । आभिणिबोहिअनाणं मग्गिज्जइ एसु ठाणेसु (चू० एएहिं तु पदेहिं संतपदे होति वक्खाणं
 प्र० पुव्वपडिवन्नए वा मग्गिज्जइ एसु ठाणेसु) ॥ ५ ॥ आभिणिबोहियनाणे अट्टावीसइ हवन्ति पयडीओ । सुयणाणे पयडीओ वित्थरओ आवि वोच्छामि ॥ ६ ॥ पत्तेयमक्खराइ अ-
 क्खरसंजोग जत्तिया लोए । एवइया पयडीओ सुयनाणे होंति नायवा ॥ ७ ॥ कत्तो मे वण्णेउं सत्ती सुयनाणसव्वपयडीओ ? । चउदसविहनिक्खेवं सुयनाणे आवि वोच्छामि ॥ ८ ॥
 अक्खर सण्णी सम्मं साईयं खलु सपज्जवसिअं च । गमियं अंगपविट्टं सत्तवि एए सपडिवक्खा ॥ ९ ॥ ऊससियं नीससिअं निच्छूढं खासिअं च छीयं च । णीसिं (सं)घियमणुसारं अण-
 क्खरं छेलियाईअं ॥ २० ॥ आगमसत्थग्गहणं जं बुद्धिगुणेहिं अट्टहिं दिट्टं । बिंति सुयणाणलंभं तं पुव्वविसारया धीरा ॥ १ ॥ सुस्सुसइ पडिपुच्छइ सुणेइ गिण्हइ य ईहए वावि । तत्तो
 अवोहए वा धारेइ करेइ वा सम्मं ॥ २ ॥ मुअं हुंकारं वा बाढक्कार पडिपुच्छ वीमंसा । तत्तो पसंगपारायणं च परिणिट्ट सत्तमए ॥ ३ ॥ सुत्तत्थो खलु पढमो बीओ निज्जुत्तिमीसओ
 भणिओ । तइओ य निरवसेसो एस विही भणिअ अणुओगे ॥ ४ ॥ संखाईआओ खलु ओहीनाणस्स सव्वपयडीओ । काउइ भवपच्चइया खओवसमिआओ काओवि ॥ ५ ॥ कत्तो मे
 वण्णेउं सत्ती ओहिस्स सव्वपयडीओ ? । चउदसविहनिक्खेवं इइढीपत्ते य वोच्छामि ॥ ६ ॥ ओही खित्तपरिमाणे, संठाणे आणुगामिए । अवट्टिए चले तिव्वमन्द पडिवाउप्पयाइय ॥ ७ ॥
 नाणदंसणविभंगे, देसे खित्ते गई इअ । इइढिपत्ताणुओगे य, एमेआ पडिवत्तिओ ॥ ८ ॥ नामं ठवणा दविए खित्ते काले भवे य भावे य । एसो खलु ओहिस्सा निक्खेवो होइ सत्तविहो
 ॥ ९ ॥ जावइया तिसमयाहारगस्स सुहुमस्स पणगजीवस्स । ओगाहणा जहण्णा ओहीखित्तं जहण्णं तु ॥ ३० ॥ सव्वबहुअगणिजीवा निरन्तरं जत्तियं भरिजंसु । खित्तं सव्वदिसागं
 परमोही खित्त निदिट्टो ॥ १ ॥ अंगुलमावलियाणं भागमसंखिज्ज दोसु संखिज्जा । अंगुलमावलिअंतो आवलिआ अंगुलपुहुत्तं ॥ २ ॥ हत्थंमि मुहुत्तन्तो दिवसंतो गाउयंमि बोद्धवो ।
 जोयण दिवसपुहुत्तं पक्खंतो पण्णवीसा उ ॥ ३ ॥ भरहंमि अद्धमासो जंबूदीवंमि साहिओ मासो । वासं च मणुअलोए वासपुहुत्तं च रुयगंमि ॥ ४ ॥ संखिज्जंमि उ काले दीवसमुदावि
 हुंति संखिज्जा । कालंमि असंखिजे दीवसमुदा उ भइयवा ॥ ५ ॥ काले चउण्ह वुड्ढी कालो भइयव्वु खित्तवुड्ढीए । वुड्ढीइ दव्वपज्जव भइयवा खित्तकाला उ ॥ ६ ॥ सुहुमो य होइ
 कालो तत्तो सुहुमयरं हवइ खित्तं । अंगुलसेटीमित्ते ओसप्पिणीओ असंखेज्जा ॥ ७ ॥ तेआभासादव्वाण अन्तरा इत्थ लहइ पट्टवओ । गुरुलहुअगुरुलहुउ तंपिअ तेणेव निट्टाइ ॥ ८ ॥
 ओरालविउव्वाहारतेअभासाऽऽणपाणमणकम्मे । अह दव्ववग्गणाणं कमो विवजासओ खित्ते ॥ ९ ॥ कम्मोवरिं धुवेयर सुण्णेयरवग्गणा अणंताओ । चउ धुवऽणंतं तणुवग्गणा य मीसो तहा-
 ऽचित्तो ॥ ४० ॥ ओरालिअवेउव्विअआहारगतेअ गुरुलहु दव्वा । कम्मगमणभासाई एआइ अगुरुलहुआइ ॥ १ ॥ संखिज्ज मणोदव्वे भागो लोगपलियस्स बोद्धवो । संखिज्ज कम्मदव्वे लोए
 थोवूणगं पलियं ॥ २ ॥ तेयाकम्मसरीरे तेआदव्वे अ भासदव्वे अ । बोद्धवमसंखिज्जा दीवसमुदा य कालो अ ॥ ३ ॥ एगपएसोगाढं परमोही लहइ कम्मगसरीरं । लहइ य अगुरुयलघुअं
 तेयसरीरे भवपुहुत्तं ॥ ४ ॥ परमोहि असंखिज्जा लोगमित्ता समा असंखिज्जा । रूवगयं लहइ सच्चं खित्तोवमिअं अगणिजीवा ॥ ५ ॥ आहारतेयलंभो उक्कोसेणं तिरिक्खजो णीसु । गाउय
 जहण्णमोही नरएसु उ जोयणुक्कोसो ॥ ६ ॥ चत्तारि गाउयाइ अद्धुट्टाइ तिगाउयं चैव । अट्टाइज्जा दुण्णि य दिवइढमेगं च नरएसु ॥ ७ ॥ (अद्धुट्टाइयाइं जहण्णयं (२९४)

११७६ आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं

- सनिर्युक्ति -

* आ. आ. ग. म. सू. १० मा. मूलसूत्रं आ. ग. म. सनिर्युक्ति प. ११ अ. ६, मा. मूलसूत्रं न. १

अद्दगाउयंताइं । जं गाउअंति भणिअं तंपिअ उक्कोसगजहणं ॥ प्र०१ ॥ सकीसाणा पढमं दुच्चं च सणकुमारमाहिंदा । तच्चं च बंभलंतग सुक्कसहस्सारय चउत्थी ॥ ८ ॥ आणयपाण-
 यकप्पे देवा पासंति पंचमिं पुढवीं । तं चेव आरणच्चुय ओहिन्नाणेण पासंति ॥ ९ ॥ छट्ठिं हिट्ठिममज्झिमगेविजा सत्तमिं च उवरिह्हा । संभिण्णलोगनालिं पासंति अणुत्तरा देवा ॥ ५० ॥
 एएसिमसंखिजा तिरियं दीवा य सागरा चेव । बहुअअरं उवरिमगा उड्डं सग(च स प्र०)कप्पथूभाई ॥ १ ॥ संखेज्जोयणा खलु देवाणं अद्दसागरे ऊणे । तेण परमसंखेज्जा जहणयं
 पंचवीसं तु ॥ २ ॥ उक्कोसो मणुएसुं मणुस्सतिरिएसु य जहणो य । उक्कोस लोमिन्तो पडिवाइ परं अपडिवाइ ॥ ३ ॥ थिबुयायार जहणो वट्ठो उक्कोसमायओ किंची । अजहणमणु-
 क्कोसो य खित्तओ णेगसंठाणो ॥ ४ ॥ तप्पागारे पड्डग पडहग झल्लरि मुइंग पुप्फ जवे । तिरियमणुएसु ओही नाणाविहसंठिओ भणिओ ॥ ५ ॥ अणुगामिओ उ ओही नेरइयाणं तहेव
 देवाणं । अणुगामी अणुगामी मीसो य मणुस्सतेरिच्छे ॥ ६ ॥ खित्तस्स अवट्ठाणं तितीसं सागरा उ कालेणं । दब्बे भिण्णमुहुत्तो पज्जवलंभे य सत्तट्ठ ॥ ७ ॥ अद्दाइ अवट्ठाणं छावट्ठी
 सागरा उ कालेणं । उक्कोसगं तु एयं इक्को समओ जहणेणं ॥ ८ ॥ वुड्ढी वा हाणी वा चउव्विहा होइ खित्तकालाणं । दब्बेसु होइ दुविहा छव्विह पुण पज्जवे होइ ॥ ९ ॥ फड्डा य असं-
 खिजा संखेज्जा यावि एगजीवस्स । एकप्फड्डुवओगे नियमा सब्बत्थ उवउत्तो ॥ ६० ॥ फड्डा य आणुगामी अणुगामी य मीसगा चेव । पडिवाइ अपडिवाइ मीसो य मणुस्सते-
 रिच्छे ॥ १ ॥ बाहिरलंभे भज्जो दब्बे खित्ते य काल भावे य । उप्पा पडिवाओऽविय तं उभयं एगसमएणं ॥ २ ॥ अब्भितरलद्धीए उ तदुभयं नत्थि एगसमएणं । उप्पा पडिवाओऽविय
 एगयरो एगसमएणं ॥ ३ ॥ दब्बाओ असंखिज्जे संखेज्जे आवि पज्जवे लहइ । दो पज्जवे दुगुणिए लहइ य एगाउ दब्बाउ ॥ ४ ॥ सागारमणागारा ओहिविभंगा जहणगा तुह्हा । उवरिमगे-
 वेजेसु उ परेण ओही असंखिज्जो ॥ ५ ॥ णेरइयदेवतित्थंकरा य ओहिस्सऽबाहिरा हुंति । पासंति सब्बओ खलु सेसा देसेण पासंति ॥ ६ ॥ संखिज्जमसंखिज्जो पुरिसमबाहाइ खित्तओ
 ओही । संबद्धमसंबद्धो लोमलोगे य संबद्धो ॥ ७ ॥ गइ नेरइयाईया हिट्ठा जह वणिया तहेव इहं । इड्ढी एसा वणिज्जइत्ति तो सेसियाओऽवि ॥ ८ ॥ आमोसहि विप्पोसहि खेलोसहि
 जल्लमोसही चेव । संभिन्नसोउज्जुमई सब्बोसहि चेव बोद्धवो ॥ ९ ॥ चारण आसीविस केवली य मणनाणिणो य पुव्वधरा । अरहंतं चक्कवट्ठी बलदेवा वासुदेवा य ॥ ७० ॥ सोलस रायस-
 हस्सा सब्बबलेणं तु संकलनिबद्धं । अंछंति वासुदेवं अगडतडंमी ठियं संतं ॥ १ ॥ धित्तूण संकलं सो वामगहत्थेण अंछमाणाणं । भुंजिज्ज विलिपिंज्ज व महुमहणं ते न चायंति ॥ २ ॥ दो
 सोला बत्तीसा सब्बबलेणं तु संकलनिबद्धं । अंछंति चक्कवट्ठिं अगडतडंमी ठियं संतं ॥ ३ ॥ धित्तूण संकलं सो वामगहत्थेण अंछमाणाणं । भुंजिज्ज विलिपिंज्ज व चक्कहरं ते न चायंति ॥ ४ ॥
 जं केसवस्स उ बलं तं दुगुणं होइ चक्कवट्ठिस्स । तत्तो बला बलवगा अपरिमियबला जिणवरिंदा ॥ ५ ॥ मणपज्जवनाणं पुण जणमणपरिचिन्तियत्थपायडणं । माणुसखित्तनिबद्धं गुणप-
 च्चइयं चरित्तवओ ॥ ६ ॥ अह सब्बदब्बपरिणामभावविण्णत्तिकारणमणंतं । सासयमप्पडिवाइ एगविहं केवलं नाणं ॥ ७ ॥ केवलणाणेणऽत्थे णाउं जे तत्थ पण्णवणजोगे । ते भासइ ति-
 त्थयरो वयजोग सुयं हवइ सेसं ॥ ८ ॥ इत्थं पुण अहिगारो सुयनाणेणं जओ सुएणं तु । सेसाणमप्पणोऽविअ अणुओग पर्ईवदिट्ठन्तो ॥ ९ ॥ पेढिया समत्ता । तित्थयरे भगवंते अणुत्तर-
 परक्कमे अमियनाणी । तिण्णे सुगइगइगए सिद्धिपहपदेसए वंदे ॥ ८० ॥ वंदामि महाभागं महामुणिं महायसं महावीरं । अमरनररायमहिअं तित्थयरमिमस्स तित्थस्स ॥ १ ॥ इक्कारसवि
 गणहरे पवायए पवयणस्स वंदामि । सब्बं गणहरवंसं वायगवंसं पवयणं च ॥ २ ॥ ते वंदिऊण सिरसा अत्थपुहुत्तस्स तेहिं कहियस्स । सुयनाणस्स भगवओ निज्जुत्तिं कित्तइस्सामि
 ॥ ३ ॥ आवस्सगस्स दसकालिअस्स तह उत्तरज्झमायारे । सूयगडे निज्जुत्तिं वुच्छामि तहा दसाणं च ॥ ४ ॥ कप्पस्स य निज्जुत्तिं ववहारस्सेव परमणिउणस्स । सूरिअपण्णत्तीए वुच्छं
 इसिभासिआणं च ॥ ५ ॥ एतेसिं निज्जुत्तिं वुच्छामि अहं जिणोवएसेणं । आहरणहेउकारणपयनिवहमिणं समासेणं ॥ ६ ॥ सामाइयनिज्जुत्तिं वुच्छं उवएसियं गुरुजणेणं । आयरियपरं-
 परएण आगयं आणुपुव्वीए ॥ ७ ॥ णिज्जुत्ता ते अत्था जं बद्धा तेण होइ निज्जुत्ती (अहवा सुयपरिवाडी सुओवयेसोऽयं विशेषा०) । तहवि य इच्छावेइ विभासिउं सुत्तपरिवाडी ॥ ८ ॥
 तवनियमनाणरुक्खं आरूढो केवली अमियनाणी । तो मुयइ नाणवुट्ठिं भवियजणविबोहणट्ठाए ॥ ९ ॥ तं बुद्धिमएण पडेण गणहरा गिण्हिउं निरवसेसं । तित्थयरभासियाइं गंथंति तओ
 पंवयणट्ठा ॥ ९० ॥ धित्तुं च सुहं सुहगुण(गह)णधारणा दाउ पुच्छिउं चेव । एएहिं कारणेहिं जीयंति कयं गणहरेहिं ॥ १ ॥ अत्थं भासइ अरहा सुत्तं गंथंति गणहरा निउणं । सासणस्स हिय-
 ट्ठाए तओ सुत्तं (तित्थं) पवत्तइ ॥ २ ॥ सामाइयमाईयं सुयनाणं जाव विन्दुसाराओ । तस्सवि सारो चरणं सारो चरणस्स निव्वाणं ॥ ३ ॥ सुअनाणंमिवि जीवो वट्ठतो सो न पाउणइ
 मोक्खं । जो तवसंजममइए जोए न चएइ वोढुं जे ॥ ४ ॥ जह छेयलद्धनिज्जामओवि वाणियगइच्छियं भूमिं । वाएण विणा पोओ न चएइ महण्णवं तरिउं ॥ ५ ॥ तह नाणलद्धनिज्जा-
 मओऽवि सिद्धिवसहिं न पाउणइ । निउणोवि जीवपोओ तवसंजममारुअविहूणो ॥ ६ ॥ संसारसागराओ उब्बुड्डो मा पुणो निबुड्डिज्जा । चरणगुणविप्पहीणो बुड्डइ सुबहुं पि जाणंतो

॥ ७ ॥ सुबहुंपि सुयमहीयं किं काही ? चरणविष्पहीण(मुक्क)स्स । अंधस्स जह पलित्ता दीवसयसहस्सकोडीवि ॥ ८ ॥ अप्पंपि सुयमहीयं पयासयं होइ चरणजुत्तस्स । इक्कोवि जह पईवो सचक्खुअस्स प्पयासेइ ॥ ९ ॥ जहा खरो चंदणभारवाही, भारस्स भागी नहु चंदणस्स । एवं खु नाणी चरणेण हीणो, नाणस्स भागी नहु सोग्गईए ॥ १० ॥ हयं नाणं कियाहीणं, हया अन्नाणओ किया । पांसतो पंगुलो दड्ढो, धावमाणो अ अंधओ ॥ १ ॥ संजोगसिद्धीइ फलं वयंति, न हु एगचक्केण रहो पयाइ । अंधो य पंगू य वणे समिच्चा, ते संपउत्ता नगरं पविट्ठा ॥ २ ॥ णाणं पयासगं सोहओ तवो संजमो य गुत्तिकरो । तिण्हंपि समाजोगे मोक्खो जिणसासणे भणिओ ॥ ३ ॥ भावे खओवसमि ए दुवालसंगंपि होइ सुयनाणं । केवलिय-नाणलंभो नऽन्नत्थ खए कसायाणं ॥ ४ ॥ अट्टण्हं पयडीणं उक्कोसठिईइ वट्टमाणो उ । जीवो न लहइ सामाइयं चउण्हंपि एगयरं ॥ ५ ॥ सत्तण्हं पयडीणं अब्भितरओ उ कोडिकोडीए । काऊण सागराणं जइ लहइ चउण्हमण्णयरं ॥ ६ ॥ पल्लय गिरिसरिउवला पिवीलिया पुरिस पह जरग्गहिया । कुइव जल वत्थाणि य सामाइयलाभदिट्टन्ता ॥ ७ ॥ पढमिह्लुयाण उदए नियमा संजोयणा कसायाणं । सम्मइंसणलंभं भवसिद्धीयावि न लहंति ॥ ८ ॥ बिइयकसायाणुदए अपच्चक्खाणनामधेज्जाणं । सम्मइंसणलंभं विरयाविरइं न उ लहंति ॥ ९ ॥ तइयक-सायाणुदए पच्चक्खाणावरणनामधिज्जाणं । देसिक्कदेसविरइं चरित्तलंभं न उ लहंति ॥ ११० ॥ मूलगुणाणं लंभं न लहइ मूलगुणघाइणं उदए । संजलणाणं उदए न लहइ चरणं अह-क्खायं ॥ १ ॥ सव्वेऽविअ अइयारा संजलणाणं तु उदयओ हुंति । मूलच्छिज्जं पुण होइ बारसण्हं कसायाणं ॥ २ ॥ बारसविहे कसाए खइए उवसामि ए व जोगेहिं । लब्भइ चरित्तलंभो तस्स विसेसा इमे पंच ॥ ३ ॥ सामाइयं च पढमं छेओवट्टावणं भवे बीयं । परिहारविसुद्धीयं सुहुमं तह संपरायं च ॥ ४ ॥ तत्तो य अहक्खायं खायं सव्वंमि जीवलोगंमि । जं चरिऊण सु-विहिआ वच्चंतऽयरामरं ठाणं ॥ ५ ॥ अण दंस नपुंसिथी वेयच्छक्कं च पुरस्सवेयं च । दो दो एगन्तरि ए सरिसे सरिसं उवसमेइ ॥ ६ ॥ लोभाणुं वेअंतो जो खलु उवसामओ व खवगो वा । सो सुहुमसंपराओ अहखाया ऊणओ किंची ॥ ७ ॥ उवसामं उवणीआ गुणमहया जिणचरित्तसरिसंपि । पडिवायंति कसाया किं पुण सेसे सरागत्ये ? ॥ ८ ॥ जइ उवसंतकसाओ लहइ अणंतं पुणोऽवि पडिवायं । ण हु भे वीससियव्वं थेवे य (वि) कसायसेसंमि ॥ ९ ॥ अण थोवं वण थोवं अग्गी थोवं कसाय थोवं च । ण हु भे वीससियव्वं थेवंपि हु तं बहुं होइ ॥ १२० ॥ अण मिच्छ मीस सम्मं अट्ट नपुंसिथी वेयच्छक्कं च । पुंवेयं च खवेइ कोहाईए य संजलणे ॥ १ ॥ गइ आणुपुट्ठी दो दो जाईनामं च जाव चउरिंदी । आयावं उज्जोयं थावरनामं च सुहुमं च ॥ २ ॥ साहारणमपजत्तं निहानिइं च पयलपयलं च । थीणं खवेइ ताहे अवसेसं जं च अट्टण्हं ॥ ३ ॥ वीसमिऊण नियंठो दोहि उ समएहिं केवले सेसे । पढमे निइं पयलं नामस्स इमाउ पयडीओ ॥ ४ ॥ देवगइआणुपुट्ठी विउट्ठी संघयण पढमवजाइं । अन्नयरं संठाणं तित्थयराहारनामं च ॥ ५ ॥ चरमे नाणावरणं पंचविहं दंसणं चउवियप्पं । पंचविहमंतरायं खवइत्ता केवली होइ ॥ ६ ॥ संभिण्णं पासंतो लोगमलोगं च सव्वओ सव्वं । तं नत्थि जं न पासइ भूयं भव्वं भविस्सं च ॥ ७ ॥ जिणपवयणउप्पत्ती पवयणएगट्टिया विभागो य । दारविही य नय-विही वक्खाणविही य अणुओगो ॥ ८ ॥ एगट्टियाणि तिण्णि उ पवयण सुत्तं तहेव अत्थो अ । इक्किक्कस्स य इत्तो नामा एगट्टिआ पंच ॥ ९ ॥ सुयधम्म तित्थ मग्गो पावयणं पवयणं च एगट्टा । सुत्तं तंतं गंथो पाढो सत्थं च एगट्टा ॥ १३० ॥ अणुओगो य नियोगो भास विभासा य वत्तियं चेव । अणुओगस्स उ एए नामा एगट्टिआ पंच ॥ १ ॥ णामं ठवणा दविए खित्ते काले य वयण भावे अ । एसो अणुओगस्स उ णिक्खेवो होइ सत्तविहो ॥ २ ॥ वच्छग गोणी खुज्जा सज्झाए चेव बहिरउल्लावो । गामिह्लुए य वयणे सत्तेव य हुंति भावंमि ॥ ३ ॥ साव-गभज्जा सत्तवइए अ कुंकणगदारए नउले । कमलामेला संबस्स साहसं सेणिए कोवो ॥ ४ ॥ कट्टे पुत्थे चित्ते सिरिघरिए पुंड देसिए चेव । भासग विभासए या वत्तीकरणे अ आहरणा ॥ ५ ॥ गोणी चंदणकंथा चेडीओ सावए बहिर गोहे । टंकणओ ववहारो पडिक्खो आयरियसीसे ॥ ६ ॥ कस्स न होही वेसो अणुभुवमओ अ निरुवगारी अ । अप्पच्छंदमइओ पट्टि-अओ गंतुकामो अ ? ॥ ७ ॥ विणओणएहिं कयपंजली(पंजलिउडे)हिं छंदमणुअत्तमाणेहिं । आराहिओ गुरुजणो सुयं बहुविहं लहुं देइ ॥ ८ ॥ सेलघण कुडग चालिणि परिपूणग हंस महिस मेसे अ । मसग जलूग बिराली जाहग गो भेरि आभीरी ॥ ९ ॥ उहेसे निहेसे निग्गमे खित्त काल पुरिसे अ । कारण पच्चय लक्खण नए समोआरणाऽणुमए ॥ १४० ॥ किं कइविहं कस्स कहिं केसु कहं केच्चिरं हवइ कालं । कइ संतरमविरहिअं भवागरिस फोसण निरुत्ती ॥ १ ॥ नामं ठवणा दविए खित्ते काले समास उहेसे । उहेसुहेसंमि अ भावंमि अ होइ अट्टमओ ॥ २ ॥ एमेव य निहेसो अट्टविहो सोऽवि होइ णायव्वो । अविसेसिअमुहेसो विसेसिओ होइ निहेसो ॥ ३ ॥ दुविहंपि णेगमणओ णिहेसं (दिट्ठं)संगहो य ववहारो । निहेसगमुज्जुसुओ उ-भयसरित्थं च सहस्स ॥ ४ ॥ नामं ठवणा दविए खित्ते काले तहेव भावे अ । एसो उ निग्गमस्सा णिक्खेवो छविहो होइ ॥ ५ ॥ पंथं किर देसित्ता साहूणं अडविविप्पणट्टाणं । सम्मत्तप-ढमलंभो बोद्धवो वट्टमाणस्स ॥ ६ ॥ अवरविदेहे गामस्स चित्तओ रायदारुवणगमणं । साहू भिक्खनिमित्तं सत्था हीणे तहिं पासे ॥ १ ॥ भाष्यं । दाणऽन्न पंथनरुगं अणुकंप गुरू क-

११७८ आवश्यकं सनिर्यु-सूक्तिकं मूलसूत्रं - निर्युक्ति

हण सम्मत्तं। सोहम्मे उववण्णो पलियाउ सुरो महिइढीओ ॥ २ ॥ भाष्यं। लद्धूण य सम्मत्तं अणुकंपाए उ सो सुविहियाणं। भासुरवरबोदिधरो देवो वेमाणो जाओ ॥ ७ ॥ चइऊण देवलोगा इह चैव य भारहंमि वासंमि। इक्खागकुले जाओ उसभसुअसुओ मरीइत्ति ॥ ८ ॥ इक्खागकुले जाओ इक्खागकुलस्स होइ उप्पत्ती। कुलगरवंसेइए भरहस्स सुओ मरी-इत्ति ॥ ९ ॥ ओसप्पिणी इमीसे तइयाए समाए पच्छिमे भागे। पल्लोवमट्टभाए सेसंमि उ कुलगरुप्पत्ती ॥ १५० ॥ अद्धभरहमज्झिह्हे तियभागे गङ्गसिंधुमज्झंमि। इत्थ बहुमज्झदेसे उप्पण्णा कुलगरा सत्त ॥ १ ॥ पुब्वभवजम्मनामं पमाण संघयणमेव संठाणं। वण्णित्थियाउ भागा भवणोवाओ य णीई य ॥ २ ॥ अवरविदेहे दो वणिय वयंसा माइ उज्जुए चैव। काल-गया इह भरहे हत्थी मणुओ अ आयाया ॥ ३ ॥ दट्ठुं सिणेहकरणं गयमारुहणं च नामणिप्फत्ती। परिहाणि गेहि कलहो सामत्थण विन्नवण हत्ति ॥ ४ ॥ पढमित्थ विमलवाहण चक्खुम जसमं चउत्थमभिचन्दे। ततो अ पसेणइए मरुदेवे चैव नाभी य ॥ ५ ॥ णव धणुसया य पढमो अट्ट य सत्तइसत्तमाइं च। छच्चेव अद्धछट्टा पंच सया पण्णवीसं तु ॥ ६ ॥ वजरिसहसंघयणा समचउरंसा य हुंति संठाणे। वण्णंपि य वुच्छामि पत्तेयं जस्स जो आसी ॥ ७ ॥ चक्खुम जसमं च पसेणइअं एए पिअंगुवण्णाभा। अभिचंदो ससिगोरो निम्मल-कणगप्पभा सेसा ॥ ८ ॥ चंदजस चंदकंता सुरूव पडिरूव चक्खुकंता य। सिरिकंता मरुदेवी कुलगरपत्तीण नामाइं ॥ ९ ॥ संघयणं संठाणं उच्चत्तं चैव कुलगरेहिं समं। वण्णेण एगव-ण्णा सव्वाउ पियंगुवण्णाओ ॥ १६० ॥ पल्लोवमदसभागो पढमस्साउं तओ असंखिजा। ते आणुपुव्वि हीणा पुव्वा नाभिस्स संखेजा ॥ १ ॥ जं चैव आउयं कुलगराण तं चैव होइ ता-सिंपि। जं पढमगस्स आउं तावइयं चैव हत्थिस्स ॥ २ ॥ जं जस्स आउयं खलु तं दस भागे समं विभइऊणं। मज्झिह्हेइएविभागे कुलगरकालं वियाणाहि ॥ ३ ॥ पढमो य कुमारत्ते भागो चरमो य वुड्ढभावंमि। ते पयणुपिज्जदोसा सब्बे देवेषु उववण्णा ॥ ४ ॥ दो चैव सुवण्णेसुं उदहिकुमारेसु हुंति दो चैव। दो दीवकुमारेसुं एगो नागेषु उववण्णो ॥ ५ ॥ हत्थी छ-च्चित्थीओ नागकुमारेसु हुंति उववण्णा। एगा सिद्धिं पत्ता मरुदेवी नाभिणो पत्ती ॥ ६ ॥ हक्कारे मक्कारे धिक्कारे चैव दंडनीईओ। वुच्छं तासिं विसेसं जहक्कमं आणुपुव्वीए ॥ ७ ॥ पढम-बियाणं पढमा तइयचउत्थाण अभिनवा बीया। पंचम छट्टस्स य सत्तमस्स तइया अभिनवा उ ॥ ८ ॥ सेसा उ दंडनीई माणवगनिहीउ होति भरहस्स। उसभस्स गिहावासे असक्कओ आसि आहारो ॥ ९ ॥ परिभासणा उ पढमा मंडलिबंधंमि होइ बीया उ। चारग छविळेआई भरहस्स चउव्विहा नीई ॥ ३ ॥ भाष्यं। नाभी विणीयभूमी मरुदेवी उत्तरा य साढा य। राया य वइरणाहो विमाणसव्वट्टसिद्धाओ ॥ १७० ॥ धणसत्थवाह घोसण जइगमण अडवि वासठाणं च। बहु बोलीणे वासे चिंता घयदाणमासि तया ॥ १ ॥ उत्तरकुरु सोहम्मे महावि-देहे महब्बलो राया। ईसाणे ललियंगो महाविदेहे वइरजंघो ॥ १ ॥ (प्रक्षिप्ता) उत्तरकुरु सोहम्मे विदेहि तेगिच्छियस्स तत्थ सुओ। रायसुयसेट्टिइमंचासत्थाहसुया वयंसा से ॥ २ ॥ विज्जसुअस्स य गेहे किमिकुट्टोवद्दुअं जइं दट्ठुं। बिंति य ते विज्जसुयं करेहि एअस्स तेगिच्छं ॥ ३ ॥ तिहं तेगिच्छसुओ कंबलगं चंदणं च वाणियओ। दाउं अभिणिक्खंतो तेणेव भवेण अंतगडो ॥ ४ ॥ साहुं तिगिच्छिऊणं सामण्णं देवलोगगमणं च। पुंडरगिणिए उ चुया तओ सुया वइरसेणस्स ॥ ५ ॥ पढमित्थ वइरणाभो बाहु सुबाहु य पीढ महपीढे। तेसिं पिआ तित्थअरो णिक्खंता तेइवि तत्थेव ॥ ६ ॥ पढमो चउदसपुव्वी सेसा इक्कारसंगविउ चउरो। बीओ वेयावच्चं किइकम्मं तइअओ कासी ॥ ७ ॥ भोगफलं बाहुबलं पसंसणा जिट्ट इयर अचियत्तं। पढमो तित्थ-यरत्तं वीसहिं ठाणेहिं कासीय ॥ ८ ॥ अरिहंत सिद्ध पवयण गुरु थेर बहुस्सुए तवस्सीसुं। वच्छलया एएसिं अभिक्खनाणोवओगे य ॥ ९ ॥ दंसण विणए आवस्सए य सीलव्वए निर-इआरो। खणलव तव च्चिद्याए वेयावच्चे समाही य ॥ १८० ॥ अप्पुव्वनाणगहणे सुयभत्ती पवयणे पभावणया। एएहिं कारणेहिं तित्थयरत्तं लहइ जीवो ॥ १ ॥ पुरिमेण पच्छिमेण य एए सब्बेइवि फासिया ठाणा। मज्झिमएहिं जिणेहिं एकं दो तिण्णि सब्बे वा ॥ २ ॥ तं च कहां वेइज्जइ? अगिलाए धम्मदेसणाईहिं। बज्झइ तं तु भगवओ तइयभवोसक्कइत्ताणं ॥ ३ ॥ नियमा मणुयगईए इत्थी पुरिसेयरो य सुहलेसो। आसेवियबहुलेहिं वीसाए अण्णयरएहिं ॥ ४ ॥ उववाओ सब्बट्टे सब्बेसिं पढमओ चुओ उसभो। रिक्खेण असाढाहिं असाढबहुले चउत्थीए ॥ ५ ॥ जम्मणे नाम वुड्ढी अ, जाईए सरणे इअ। वीवाहे अ अवच्चे अभिसेए रजसंगहे ॥ ६ ॥ चित्तबहुलट्टमीए जाओ उसभो असाढणक्खत्ते। जम्मणमहो अ सब्बो णेयव्वो जाव घोसणयं ॥ ७ ॥ संवट्ट मेह आयंसगा य भिंजार तालियंटा य। चामर जोई रक्खं करेति एयं कुमारीओ ॥ ८ ॥ देसूणगं च वरिसं सक्कागमणं च वंसठवणा य। आहारमंगुलीए ठवंति देवा मणुण्णं तु ॥ ९ ॥ सक्को वंसट्टवणे इक्खु अगू तेण हुंति इक्खागा। जं च जहा जंमि वए जोगं कासीय तं सव्वं ॥ १९० ॥ अह वड्ढइ सो भयवं दियलोयचुओ अणोवमसिरीओ। देवगणसंपरिवुडो नंदाइ सुमंगलासहिओ ॥ १ ॥ असिअसिरओ सुनयणो बिंबुट्टो धवलदंतपंतीओ। वरपउमगब्भगोरो फुल्लुप्पलगंधनीसासो ॥ २ ॥ जाइस्सरो अ भयवं अप्परिवडिइएहिं तिहि उ नाणेहिं। कंतीहि य बुद्धीहि य अब्भहिओ तेहि मणुएहिं ॥ ३ ॥ पढमो अकालमच्चू तहिं तालफलेण दारओ पहओ। कण्णा य कुलगरेणं सिट्टे गहिआ उसहपत्ती ॥ ४ ॥ भो-

११७९ आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं, निर्युक्ति

गसमत्थं नाउं वरकम्मं तस्स कासि देविंदो । दुण्हं वरमहिलाणं बहुकम्मं कासि देवीओ ॥ ५ ॥ छप्पुसयसहस्सा पुबिं जायस्स जिणवरिंदस्स । तो भरहबंभिसुंदरिवाहुबली चैव जायाइं ॥ ६ ॥ देवीसुमंगलाए भरहो बंभी य मिहुणयं जायं । देवीइ सुनंदाए बाहुबली सुंदरी चैव ॥ ४ ॥ मूलभाष्यं । अउणापण्णं जुअले पुत्ताण सुमंगला पुणो पसवे । नीईणमइक्कमणे निवेअणं उसभसामिस्स ॥ ७ ॥ राया करेइ दंडं सिट्ठे ते विंति अम्हवि स होउ । मग्गह य कुलगरं सो अ बेइ उसभो य भे राया ॥ ८ ॥ आभोएउं सक्को उवागओ तस्स कुणइ अभिसेअं । मउडाइअलंकारं नरिंदजोग्गं च से कुणइ ॥ ९ ॥ भिसिणीपत्तेहिअरे उदयं धित्तुं छुहंति पाएसु । साहु विणीआ पुरिसा विणीअनयरी अह निविट्ठा ॥ २०० ॥ आसा हत्थी गावो गहियाइं रज्जसंगहनिमित्तं । धित्तुण एवमाई चउव्विहं संगहं कुणइ ॥ १ ॥ उग्गा भोगा रायण्ण खत्तिआ संगहो भवे चउहा । आरक्खि गुरु वयंसा सेसा जे खत्तिआ ते उ ॥ २ ॥ आहारे सिप्प कम्मे अ, मामणा अ विभूसणा । लेहे गणिए अ रूवे अ, लक्खणे माण पोअए ॥ ३ ॥ ववहारे नीइ जुद्धे अ, ईसत्थे अ उवासणा । तिगिच्छा अत्थसत्थे अ, बंधे घाए अ मारणा ॥ ४ ॥ जण्णूसव समवाए, मंगले कोउगे इअ । वत्थे गंधे अ मल्ले अ, अलंकारे तहेव य ॥ ५ ॥ चोलोवणय विवाहे अ, दत्तिया मडयपूयणा । झावणा थूम सहे य, छेलावणय पुच्छणा ॥ ६ ॥ आसी अ कंदहारा मूलाहारा य पत्तहारा य । पुप्फफलभोइणोऽविअ जइआ किर कुलगरो उसभो ॥ ५ ॥ मू० । आसी अ इक्खुभोई इक्खागा तेण खत्तिआ हुंति । सणसत्तरसं धण्णं आमं ओमं च भुंजीआ ॥ ६ ॥ मू० । ओमंऽपाहारंता अजीरमाणंमि ते जिणमुविंति । हत्थेहिं घंसिऊणं आहारेहत्ति ते भणिआ ॥ ७ ॥ मू० । आसी अ पाणिघंसी तिम्मिअतंदुलपवालपुडभोई । हत्थतलपुडाहारा जइआ किर कुलकरो उसहो ॥ ८ ॥ मू० । घंसेऊणं तिम्मण घंसणतिम्मणपवालपुडभोई । घंसणतिम्मणपवाले हत्थउडे कक्खसेए य ॥ ९ ॥ मू० । अगणिस्स य उट्ठाणं दुमघंसा दट्ठु भीअ परिकहणं । पासेसुं परिच्छिंदह गिण्हह पागं च तो कुणह ॥ १० ॥ मू० । पक्खेव डहणमोसहि कहणं निग्गमण हत्थिसीसंमि । पयणारंभपवित्ती ताहे कासी अ ते मणुआ ॥ ११ ॥ मू० । पंचेव य सिप्पाइं घड लोहे चित्त णंत कासवए । इक्किक्कस्स य इत्तो वीसं वीसं भवे भेया ॥ ७ ॥ कम्मं किसिवाणिज्जाइ मामणा जा परिग्गहे ममया । पुबिं देवेहिं कया विभूसणा मंडणा गुरुणो ॥ १२ ॥ भाष्यं । लेहं लिवीविहाणं जिणेण बंभीइ दाहिणकरेणं । गणिअं संखाणं सुंदरीइ वामेण उवइट्ठं ॥ ३ ॥ भरहस्स रूवकम्मं नराइलक्खणमहोइयं बलिणो । माणुम्माणऽवमाणप्पमाणगणिमाइ वत्थूणं ॥ ४ ॥ मणिआई दोराइसु पोआ तह सागरंमि वहणाइं । ववहारो लेहवणं कज्जपरिच्छेदणत्थं वा ॥ ५ ॥ णीई हक्काराई सत्तविहा अहव सामभेआई । जुद्धाईं बाहुजुद्धाइआइं वट्ठाइआणं वा ॥ ६ ॥ ईसत्थं धणुवेओ उवासणा मंसुकम्ममाईआ । गुरुरायाईणं वा उवासणा पज्जुवासणया ॥ ७ ॥ रोगहरणं तिगिच्छा अत्थागमसत्थमत्थसत्थंति । निअलाइजमो बंधो घाओ दंडाइताडणया ॥ ८ ॥ मारणया जीववहो जण्णा नागाइआण पूआओ । इंदाइ महा पायं पइनिअया ऊसवा हुंति ॥ ९ ॥ समवाओ गोट्ठीणं गामाईणं च संपसारो वा । तह मंगलाइं सत्थियसुवण्णसिद्धत्थयाईणि ॥ २० ॥ पुबिं कयाइं पहुणा सुरेहिं रक्खाइं कोउगाइं च । तह वत्थगन्धमल्लालंकारा केसभूसार्इ (य) ॥ १ ॥ तं दट्ठूण पवत्तोऽलंकारेउं जणोऽवि सेसोऽवि । विहिणा चूलाकम्मं बालाणं चोलयं नाम ॥ २ ॥ उवणयणं तु कलाणं गुरुमूले साहुणो तओ धम्मं । धित्तुं हवंति सड्ढा केई दिक्खं पवज्जंति ॥ ३ ॥ दट्ठुं कयं विवाहं जिणस्स लोगोऽवि काउमारद्धो । गुरुदत्तिआ य कण्णा परिणिज्जंते तओ पायं ॥ ४ ॥ दत्ती व दाणमुसभं दिंतं दट्ठुं जणंमिवि पवत्तं । जिणभिक्षवादाणंपिय दट्ठुं भिक्षवा पवत्ताओ ॥ ५ ॥ मडयं मयस्स देहो तं मरुदेवीइ पढमसिद्धत्ति । देवेहिं पुरा महिअं झावणया अग्गिसक्कारो ॥ ६ ॥ सो जिणदेहाईणं देवेहिं कओ चिआसु थूभाई । सहो अ रुण्णसहो लोगोऽवि तओ तहा पगओ ॥ ७ ॥ छेलावणमुक्किट्ठाइ बालकीलावणं च सेंटाई । इंखिणिआ(मा)इ रुयं वा पुच्छा पुण किं कहं कज्जं ? ॥ ८ ॥ अहव निमित्ताईणं सुहसइआइ सुह(इसु)दुक्खपुच्छा वा । इच्चेवमाइ पाएणु(पुबिं उ)प्पन्नं उसभकालंमि ॥ ९ ॥ किंचिच्च(त्थ) भरहकाले कुलगरकालेऽवि किंचि उप्पन्नं । पहुणा य देसिआइं सव्वकलासिप्पकम्माइं ॥ ३० ॥ (भाष्यं) उसभचरिआहिगारे सब्बेसिं जिणवराण सामण्णं । संबोहणाइ वुत्तुं वुच्छं पत्तेअमुसभस्स ॥ ८ ॥ संबोहण परिच्चाए, पत्तेयं उवहिंमि य । अन्नलिंगे कुलिंगे य, गामायार परीसहे ॥ ९ ॥ जीवोवलंभ सुयलंभे, पच्चक्खाणे य संजमे । छउमत्थ तवोकम्मं, उप्पाया नाण संगहे ॥ २१० ॥ तित्थं गणो गणहरा, धम्मोवायस्स देसगा । परिआअ अंतकिरिया, कस्स केण तवेण वा ? ॥ १ ॥ सब्बेऽवि सयंबुद्धा लोगन्तिअबोहिआ य जीएणं(न्ति) । सब्बेसिं परिच्चाओ संवच्छरियं महादाणं ॥ २ ॥ रज्जाइच्चाओऽविय पत्तेअं को व कत्तिअसमग्गो । को कस्सुवही ? को वाऽणुण्णाओ केण सीसाणं ? ॥ ३ ॥ सारस्सयमाइच्चा वण्ही वरुणा य गहतोया य । तुसिआ अक्खाबाहा अग्गिच्चा चैव रिट्ठा य ॥ ४ ॥ एए देवनिकाया भयवं बोहिंति जिणवरिंदं तु । सव्वजगजीवहिअं भयवं ! तित्थं पवत्तेहि ॥ ५ ॥ संवच्छरेण होही अभिणिक्खमणं तु जिणवरिंदाणं । तो अत्थसंपयाणं पवत्तए पुव्वसूरंमि ॥ ६ ॥ एगा हिरण्णकोडी अट्ठेव अणूणगा सयसहस्सा । सूरुदयमाईअं दिज्जइ जा पायरासीओ ॥ ७ ॥ सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरचउमुहमहापहपहेसुं । दारेसु पुरवराणं रत्थामुहमज्झयारेसु ॥ ८ ॥ वरवरिआ घोसिज्जइ किमिच्छिअं दिज्जए बहुविहीअं । सुरअसुरदेवदाणवनरिंदमहिआण निक्खमणे ॥ ९ ॥ तिण्णेव य कोडिसया अट्ठासीइं च हुंति कोडीओ । असिइं च (२९५)

सयसहस्सा एयं संवच्छरे दिण्णं ॥ २२० ॥ वरवरिया समत्ता । वीरं अरिट्टनेमिं पासं मल्लिं च वासुपुजं च । एए मुत्तूण जिणे अवसेसा आसि रायाणो ॥ १ ॥ रायकुलेसुऽवि जाया
 विसुद्धवंसेसु खत्तिअकुलेसु । न य इच्छिआभिसेआ कुमारवासंमि पव्वइआ ॥ २ ॥ संती कुंथू अ अरो अरिहंता चैव चक्कवट्टी अ । अवसेसा तित्थयरा मंडलिआ आसि रायाणो ॥ ३ ॥
 एगो भगवं वीरो पासो मल्ली अ तिहिं तिहिं सएहिं । भयवं च (पि) वासुपुजो छहि पुरिससएहि निक्खंतो ॥ ४ ॥ उग्गाणं भोगाणं राइण्णाणं च खत्तिआणं च । चउहिं सहस्सेहिं उसहो
 सेसा उ सहस्सपरिवारा ॥ ५ ॥ वीरो अरिट्टनेमी पासो मल्ली अ वासुपुजो अ । पढमवए पव्वइआ सेसा पुण पच्छिमवयंमि ॥ ६ ॥ सव्वेऽवि एगदूसेण निग्गया जिणवरा चउव्वीसं । न य
 नाम अण्णलिंगे नो गिहिलिंगे कुलिंगे वा ॥ ७ ॥ सुमईऽत्थ निच्चभत्तेण निग्गओ वासुपुज्ज चउत्थेणं । पासो मल्लीविअ अट्टमेण सेसा उ छट्टेणं ॥ ८ ॥ उसभो अ विणीआए बारवईए
 अरिट्टवरनेमी । अवसेसा तित्थयरा निक्खंता जम्मभूमीसुं ॥ ९ ॥ उसभो सिद्धत्थवणंमि वासुपुज्जो विहारगेहंमि । धम्मो अ वप्पगाए नीलगुहाए अ मुणिनामा ॥ २३० ॥ आसमपयंमि
 पासो वीरजिणिंदो अ नायसंडंमि । अवसेसा निक्खंता सहसंबवणंमि उज्जाणे ॥ १ ॥ पासो अरिट्टनेमी सिजंसो सुमइ मल्लिनामो अ । पुव्वण्हे निक्खंता सेसा पुण पच्छिमण्हंमि ॥ २ ॥
 गामायारा विसया निसेविआ ते कुमारवज्जेहिं । गामागराइएसु व केसु विहारो भवे कस्स ? ॥ ३ ॥ मगहारायगिहाइसु मुणओ खित्तारिएसु विहरिसु । उसभो नेमी पासो वीरो य अणा-
 रिएसुंमि ॥ ४ ॥ उदिआ परीसहा सिं पराइआ ते य जिणवरिंदेहिं । नव जीवाइपयत्थे उवलभिऊणं च निक्खंता ॥ ५ ॥ पढमस्स बारसंगं सेसाणिक्कारसंग सुयलंभो । पंच जमा पढमंति-
 मजिणाण सेसाण चत्तारि ॥ ६ ॥ पव्वक्खाणमिणं संजमो य पढमंतिमाण दुविगप्पो । सेसाणं सामइओ सत्तरसंगो अ सव्वेसिं ॥ ७ ॥ वाससहस्सं बारस चउदस अट्टार वीस वरिसाइं ।
 मासा छन्नव तिण्णि य चउ तिग दुगमिक्कग दुगं च ॥ ८ ॥ तिग दुगमिक्कग सोलस वासा तिण्णि य तहेवऽहोरत्तं । मासिक्कारस नवगं चउपण्ण दिणाइं चुलसीई ॥ ९ ॥ तह बारस वासाइं
 जिणाण छउमत्थकालपरिमाणं । उग्गं च तवोकम्मं विसेसओ वद्धमाणस्स ॥ २४० ॥ फग्गुणबहुलिक्कारसि उत्तरसाढाहि नाणमुसभस्स । पोसिक्कारसि सुद्धे रोहिणिजोएण अजिअस्स
 ॥ १ ॥ कत्तिअबहुले पंचमि मिगसिरजोगेण संभवजिणस्स । पोसे सुद्धचउदसि अभीइ अभिणंदणजिणस्स ॥ २ ॥ चित्ते सुद्धिक्कारसि महाहिं सुमइस्स नाणमुप्पण्णं । चित्तस्स पुण्णि-
 माए पउमाभजिणस्स चित्ताहिं ॥ ३ ॥ फग्गुणबहुले छट्टी विसाहजोगे सुपासनामस्स । फग्गुणबहुले सत्तमि अणुराह ससिप्पहजिणस्स ॥ ४ ॥ कत्तिअसुद्धे तइया मूले सुविहिस्स पुप्फ-
 दंतस्स । पोसे बहुलचउदसि पुव्वासाढाहिं सीअल(जिण)स्स ॥ ५ ॥ पण्णरसि माहबहुले सिजंसजिणस्स सवणजोएण । सयभिसय वासुपुजे बीयाए माहसुद्धस्स ॥ ६ ॥ पोसस्स सुद्धछट्टी
 उत्तरभद्वय विमलनामस्स । वइसाहबहुलचउदसि रेवइजोएणऽणंतस्स ॥ ७ ॥ पोसस्स पुण्णिमाए नाणं धम्मस्स पुस्सजोएण । पोसस्स सुद्धनवमी भरणीजोगेण संतिस्स ॥ ८ ॥ चित्त-
 स्स सुद्धतइआ कित्तिअजोगेण नाण कुंथुस्स । कत्तिअसुद्धे बारसि अरस्स नाणं तु रेवइहिं ॥ ९ ॥ मगसिरसुद्धइक्कारसीइ मल्लिस्स अस्सिणीजोगे । फग्गुणबहुले बारसि सवणेणं सुव्वय-
 जिणस्स ॥ २५० ॥ मगसिरसुद्धिक्कारसि अस्सिणिजोगेण नमिजिणिंदस्स । आसोअमावसाए नेमिजिणिंदस्स चित्ताहिं ॥ १ ॥ चित्ते बहुलचउत्थी विसाहजोएण पासनामस्स । वइसा-
 हसुद्धदसमी हत्थुत्तरजोगि वीरस्स ॥ २ ॥ तेवीसाए नाणं उप्पण्णं जिणवराण पुव्वण्हे । वीरस्स पच्छिमण्हे पमाणपत्ताए चरिमाए ॥ ३ ॥ उसभस्स पुरिमताले वीरस्सुजुवालिआनईतीरे ।
 सेसाण केवलाइं जेसुजाणेसु पव्वइआ ॥ ४ ॥ अट्टमभत्तंतमी पासोसहमल्लिरिट्टनेमीणं । वसुपुज्जस्स चउत्थेण छट्टभत्तेण सेसाणं ॥ ५ ॥ चुलसीइं च सहस्सा एगं च दुवे य तिण्णि लक्खाइं ।
 तिण्णि य वीसहिआइं तीसहिआइं च तिण्णेव ॥ ६ ॥ तिण्णि य अड्ढाइज्जा दुवे य एगं च सयसहस्साइं । चुलसीइं च सहस्सा विसत्तरि अट्टसट्टिं च ॥ ७ ॥ छावट्टिं चउसट्टिं बावट्टिं
 सट्टिमेव पण्णासं । चत्ता तीसा वीसा अट्टारस सोलस सहस्सा ॥ ८ ॥ चउदस य सहस्साइं जिणाण जइसीससंगहपमाणं । अज्जासंगहमाणं उसभाईणं अओ वुच्छं ॥ ९ ॥ तिण्णेव य
 लक्खाइं तिण्णि य तीसा य तिन्नि छत्तीसा । तीसा य छच्च पंच य तीसा चउरो य वीसा य ॥ २६० ॥ चत्तारि अ तीसाइं तिण्णि य असिआइं तिण्हमेत्तो य । वीसुत्तरं छ अहिअं तिस-
 हस्सहियं च लक्खं च ॥ १ ॥ लक्खं अट्टसयाणि य बावट्टिसहस्स चउसयसमग्गा । एगट्टी छच्च सया सट्टिसहस्सा सया छच्च ॥ २ ॥ सट्टि पणपण्ण पण्णेगचत्त चत्ता तहऽट्टतीसं च ।
 छत्तीसं च सहस्सा अज्जाणं संगहो एसो ॥ ३ ॥ पढमाणुओगसिद्धो पत्तेअं सावयाइआणंमि । नेओ सव्वजिणाणं सीसाण परिग्गहो (संगहो) कमसो ॥ ४ ॥ तित्थं चाउव्वण्णो संघो सो
 पढमए समोसरणे । उप्पण्णो अ जिणाणं वीरजिणिंदस्स बीयंमि ॥ ५ ॥ चुलसीईं पंचनउईं बिउत्तरं सोलसुत्तर सयं च । सत्तहियं पणनउईं तेणउईं अट्टसीईं य ॥ ६ ॥ इक्कासीईं छावत्तरी
 य छावट्टि सत्तवण्णा य । पण्णा तेयालीसा छत्तीसा चैव पणतीसा ॥ ७ ॥ तिच्चीस अट्टवीसा अट्टारस चैव तहय सत्तरस । इक्कारस दस नवगं गणाण माणं जिणिंदाणं ॥ ८ ॥ एक्कारस उ
 गणहरा जिणस्स वीरस्स सेसयाणं तु । जावइया जस्स गणा तावइया गणहरा तस्स ॥ ९ ॥ धम्मोवाओ पवयणमहवा पुव्वाइं देसगा तस्स । सव्वजिणाण गणहरा चउदसपुव्वी व जे जस्स

॥ २७० ॥ सामाह्याइया वा वयजीवणिकायभावणा पढमं । एसो धम्मोवाओ जिणेहिं सवेहिं उवइट्टो ॥ १ ॥ उसभस्स पुबलक्खं पुबंगूणमजियस्स तं चेव । चउरंगूणं लक्खं पुणो पुणो जाव सुविहित्ति ॥ २ ॥ पणवीसं तु सहस्सा पुब्राणं सीयलस्स परियाओ । लक्खाइं इक्कीसं सिजंसजिणस्स वासाणं ॥ ३ ॥ चउपण्णं पण्णारस तत्तो अद्धट्टमाइं लक्खाइं । अद्धट्टाइजाइं तओ वाससहस्साइं पणवीसं ॥ ४ ॥ तेवीसं च सहस्सा सयाणि अद्धट्टमाणि य हवंति । इगवीसं च सहस्सा वाससऊणा य पणपण्णा ॥ ५ ॥ अद्धट्टमा सहस्सा अद्धट्टाइजा य सत्त य सयाइं । सयरी बिचत्तवासा दिक्खाकालो जिणिंदाणं ॥ ६ ॥ उसभस्स कुमारत्तं पुब्राणं वीसई सयसहस्सा । तेवट्टी रज्जंमी अणुपालेऊण णिक्खंतो ॥ ७ ॥ अजियस्स कुमारत्तं अट्टारस पुब्रसयस-हस्साइं । तेवण्णं रज्जंमी पुब्रंगं चेव बोद्धव्वं ॥ ८ ॥ पण्णरस सयसहस्सा कुमारवासो य संभवजिणस्स । चोयालीसं रज्जे चउरंगं चेव बोद्धव्वं ॥ ९ ॥ अद्धत्तेरस लक्खा पुव्वाणऽभिणंदणे कुमारत्तं । छत्तीसा अद्धं चिय अट्टंगा चेव रज्जंमि ॥ २८० ॥ सुमइस्स कुमारत्तं हवंति दस पुव्वसयसहस्साइं । अउणातीसं रज्जे बारस अंगा य बोद्धव्वा ॥ १ ॥ पउमस्स कुमारत्तं पुब्राण-ऽद्धट्टमा सयसहस्सा । अद्धं च एगवीसा सोलस अंगा य रज्जंमि ॥ २ ॥ पुव्वसयसहस्साइं पंच सुपासे कुमारवासो उ । चउदस पुण रज्जंमी वीसं अंगा य बोद्धव्वा ॥ ३ ॥ अद्धट्टाइजा लक्खा कुमारवासो ससिप्पहे होइ । अद्धं छ चिय रज्जे चउवीसंगा य बोद्धव्वा ॥ ४ ॥ पण्णं पुव्वसहस्सा कुमारवासो उ पुप्फदंतस्स । तावइयं रज्जंमी अट्टावीसं च पुव्वंगा ॥ ५ ॥ पणवीससहस्साइं पुव्वाणं सीयले कुमारत्तं । तावइयं परियाओ पण्णासं चेव रज्जंमि ॥ ६ ॥ वासाण कुमारत्तं इगवीसं लक्ख हुंति सिजंसे । तावइयं परिआओ बायालीसं च रज्जंमि ॥ ७ ॥ गिहवासे अट्टारस वासाणं सयसहस्स निअमेणं । चउपण्ण सयसहस्सा परियाओ होइ वासुपुजे ॥ ८ ॥ पण्णरस सयसहस्सा कुमारवासो य तीसई रज्जे । पण्णरस सयसहस्सा परियाओ होइ विमलस्स ॥ ९ ॥ अद्धट्टमलक्खाइं वासाणमणंतई कुमारत्ते । तावइयं परियाओ रज्जंमी हुंति पण्णरस ॥ २९० ॥ धम्मस्स कुमारत्तं वासाणऽद्धट्टाइआइं लक्खाइं । तावइयं परियाओ रज्जे पुण हुंति पंचेव ॥ १ ॥ संतिस्स कुमारत्तं मंडलिअचक्किपरिआअ चउसुं पि । पत्तेयं पत्तेयं वाससहस्साइं पणवीसं ॥ २ ॥ एमेव य कुंथुस्सवि चउसुवि ठाणेसु हुंति पत्तेयं । तेवीससहस्साइं वरिसाण-ऽद्धट्टमसया य ॥ ३ ॥ एमेव अरजिणिंदस्स चउसुवि ठाणेसु हुंति पत्तेयं । इगवीससहस्साइं वासाणं हुंति णायवा ॥ ४ ॥ मल्लिस्सवि वाससयं गिहवासे सेसयं तु परियाओ । चउपण्ण सहस्साइं नव चेव सयाइं पुण्णाइं ॥ ५ ॥ अद्धट्टमा सहस्सा कुमारवासो उ सुब्रयजिणस्स । तावइयं परियाओ पणरससहस्स रज्जंमि ॥ ६ ॥ नमिणो कुमारवासो वाससहस्साइं दुण्णि अद्धं च । तावइयं परियाओ पंच सहस्साइं रज्जंमि ॥ ७ ॥ तिण्णेव य वाससया कुमारवासो अरिट्टनेमिस्स । सत्त य वाससयाइं सामण्णे होइ परियाओ ॥ ८ ॥ पासस्स कुमारत्तं तीसं परियाओ सत्तरी होइ । तीसा य वद्धमाणे बायालीसा उ परिआओ ॥ ९ ॥ उसभस्स पुबलक्खं पुबंगूणमजिअस्स तं चेव । चउरंगूणं लक्खं पुणो पुणो जाव सुविहित्ति ॥ ३०० ॥ सेसाणं परियाओ कुमारवासेण सहियओ भणिओ । पत्तेयंपि य पुब्रं सीसाणमणुग्गहट्टाए ॥ १ ॥ छउमत्थकालमित्तो सोहेउं सेसओ उ जिणकालो । सव्वाउअंपि इत्तो उसभाईणं निसामेह ॥ २ ॥ चउरासीइ बिसत्तरि सट्टी पण्णासमेव लक्खाइं चत्ता तीसा वीसा दस दो एगं च पुब्राणं ॥ ३ ॥ चउरासीइ बावत्तरी य सट्टी य होइ वासाणं । तीसा य दस य एगं च एवमेए सयसहस्सा ॥ ४ ॥ पंचाणउइ सहस्सा चउरासीई य पंचवण्णा य । तीसा य दस य एगं सयं च बावत्तरी चेव ॥ ५ ॥ निव्वाणमंतकिरिआ सा चउदसमेण पढमनाहस्स । सेसाण मासिएणं वीरजिणिंदस्स छट्टेणं ॥ ६ ॥ अट्टावयचंपुज्जितपावासम्मैअसेलसिहरेसुं । उसभ वासुपूज्ज नेमी वीरो सेसा य सिद्धिगया ॥ ७ ॥ एगो भयवं ! वीरो तिच्चीसाएँ सह निबुओ पासो । छत्तीसहिंएहिं पंचहिं सएहिं नेमी उ सिद्धिगओ ॥ ८ ॥ पंचहिं समणसएहिं मल्ली संती उ नवसएहिं तु । अट्टसएणं धम्मो सएहिं छहिं वासुपूज्जजिणो ॥ ९ ॥ सत्तसहस्साणंतइजिणस्स विमलस्स छस्सह-स्साइं । पंचसयाइं सुपासे पउमाभे तिण्णि अट्ट सया ॥ ३१० ॥ दसहिं सहस्सेहिं उसभो सेसा उ सहस्सपरिवुडा सिद्धा । कालाइ जं न भणियं पढमणुओगाउ तं णेयं ॥ १ ॥ इच्चेवमाइ सव्वं जिणाण पढमाणुओगओ णेयं । ठाणासुण्णत्थं पुण भणियं पगयं अओ वुच्छं ॥ २ ॥ उसभजिणसमुट्टाणं उट्टाणं जं तओ मरीइस्स । सामाइअस्स एसो जं पुब्रं निग्गमोऽहिगओ ॥ ३ ॥ चित्तवहुलट्टमीए चउहिं सहस्सेहिं सो उ अवरण्हे । सीआसुदंसणाए सिद्धत्थवणंमि छट्टेणं ॥ ४ ॥ चउरो साहस्सीओ लोअं काऊण अप्पणा चेव । जं एस जहा काही तं तह अम्हेऽवि काहामो ॥ ५ ॥ उसभो वरवसभगई धित्तूणमभिग्गहं परमघोरं । वोसट्टचत्तदेहो विहरइ गामाणुगामं तु ॥ ६ ॥ णवि ताव जणो जाणइ का भिक्खा ? केरिसा व भिक्खयरा ? । ते भिक्खमलभमाणा वणमज्झे तावसा जाया ॥ ३१ ॥ मू० ॥ नमिविनमीणं जायण नागिंदो विज्जदाण वेअड्ढे । उत्तरदाहिणसेढी सट्टी पण्णास नगराइं ॥ ७ ॥ भगवं अदीणमणसो संवच्छरमणसिओ विहरमाणो । कण्णाहिं निमंतिज्जइ वत्थाभरणासणेहिं च ॥ ८ ॥ संवच्छरेण भिक्खा लद्धा उसभेण लोगनाहेण । सेसेहिं बीयदिवसे लद्धाउ पढमभिक्खाओ ॥ ९ ॥ उसभस्स उ पारणए इक्खुरसो आसि लोगनाहस्स । सेसाणं परमण्णं अमयरसरसोवमं आसी ॥ ३२० ॥ घुट्टं च अहोदाणं दिव्वाणि य आहयाणि तूराणि । देवा य संनिवइआ वसुहारा ११८२ आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं, निर्युक्ति

चेव वुट्टा य ॥ १ ॥ गयउर सिजंसिक्खुरसदाण वसुहार पीढ गुरुपूआ । तक्खसिलायलगमणं बाहुबलिनिवेअणं चेव ॥ २ ॥ हत्थिणउरं अओज्झा सावत्थी तहय चेव साकेअं । विजयपुर
 बंभथलयं पाडलिसंडं पउमसंडं ॥ ३ ॥ सेयपुरं रिट्टपुरं सिद्धत्थपुरं महापुरं चेव । धण्णकड वद्धमाणं सोमणसं मंदिरं चेव ॥ ४ ॥ चक्कपुरं रायपुरं मिहिला रायगिहमेव बोद्धवं । वीरपुरं बारवई
 कोअगडं कोल्लयग्गामो ॥ ५ ॥ एएसु पढमभिक्षा लद्धाओ जिणवरेहिं सब्बेहिं । दिण्णाउ जेहिं पढमं तेसिं नामाणि वोच्छामि ॥ ६ ॥ सिजंसं बंभदत्ते सुरेददत्ते य इंददत्ते य । पउमे य
 सोमदेवे मर्हिद तह सोमदत्ते य ॥ ७ ॥ पुस्से पुणवसू पुणनंद सुनंदे जए य विजए य । तत्तो य धम्मसीहे सुमित्त तह वग्घसीहे य ॥ ८ ॥ अपराजिय विस्ससेणे वीसइमे होइ बंभदत्ते
 य । दिण्णे वरदिण्णे पुण धण्णे बहुले य बोद्धव्वे ॥ ९ ॥ एए कयंजलिउडा भत्तीबहुमाणसुकलेसागा । तक्कालपहट्टमणा पडिलाभेसुं जिणवरिंदे ॥ ३३० ॥ सब्बेहिंपि जिणेहिं जहिअं
 लद्धाउ पढमभिक्षाओ । तहिअं वसुहाराओ वुट्टाओ पुप्फवुट्टीओ ॥ १ ॥ अद्धत्तेरसकोडी उक्कोसा तत्थ होइ वसुहारा । अद्धत्तेरसलक्खा जहण्णिआ होइ वसुहारा ॥ २ ॥ सब्बेसिंपि जि-
 णाणं जेहिं दिण्णाउ पढमभिक्षाओ । ते पयणुपिज्जदोसा दिव्ववरपरक्कमा जाया ॥ ३ ॥ केई तेणेव भवेण निव्वुया सब्बकम्मउम्मुक्का । अच्चे (केई) तइयभवेणं सिज्झिस्संती जिणसगासे
 ॥ ४ ॥ कल्लं सव्विड्ढीए पूएऽहमददत्तु धम्मचक्कं तु । विहरइ सहस्समेगं छउमत्थो भारहे वासे ॥ ५ ॥ बहलीअडंबइल्ला जोणगविसओ सुवण्णभूमी य । आहिंडिया भगवया उसभेण तवं
 चरंतेण ॥ ६ ॥ बहली य जोणगा पल्हगा य जे भगवया समणुसिट्ठा । अच्चा य मिच्छजाई ते तइया भइया जाया ॥ ७ ॥ तित्थयराणं पढमो उसभरिसी(सिरी)विहरिओ निरुवसग्गो । अट्टा-
 वओ णगवरो अग्गयभूमी जिणवरस्स ॥ ८ ॥ छउमत्थो परियाओ वाससहस्सं तओ पुरिमताले । णग्गोहस्स य हेट्टा उप्पण्णं केवलं नाणं ॥ ९ ॥ फग्गुणबहुले एक्कारसीइ अह अट्टमेण
 भत्तेणं । उप्पण्णंमि अणंते महव्वया पंच पण्णवए ॥ ३४० ॥ उप्पण्णंमि अणंते नाणे जरमरणविप्पमुक्कस्स । तो देवदाणविंदा करिंति महिमं जिणिंदस्स ॥ १ ॥ उज्जाणपुरिमताले पुरीइ
 विणियाइ तत्थ नाणवरं । चक्कुप्पायो य भरहे निवेयणं चेव दोण्हंपि ॥ २ ॥ तायंमि पूइए चक्क पूइयं पूयणारिहो ताओ । इहलोइयं तु चक्कं परलोयसुहावहो ताओ ॥ ३ ॥ सह मरुदेवाइ
 निगओ कहणं पव्वज्ज उसभसेणस्स । बंभीमरीइदिक्खा सुंदरी ओरोह सुअदिक्खा ॥ ४ ॥ पंच य पुत्तसयाइं भरहस्स य सत्त नत्तुअसयाइं । सयराहं पव्वइया तंमि कुमारा समोसरणे
 ॥ ५ ॥ भवणवइवाणमंतरजोइसवासी विमाणवासी य । सव्विड्ढीइ सपरिसा कासी नाणुप्पयामहिमं ॥ ६ ॥ ददूठूण कीरमाणिं महिमं देवेहिं खत्तिओ मरिई । सम्मत्तलद्धबुद्धी धम्मं सो-
 ऊण पव्वइओ ॥ ७ ॥ मागहमाई विजयो सुंदरि पव्वज्ज बारसऽभिसेओ । आणवण भाउगाणं समुसरणे पुच्छ दिट्ठंतो ॥ ८ ॥ बाहुबलिकोवकरणं निवेयणं चक्कि देवया कहणं । नाहम्मणेणं
 जुज्झे दिक्खा पडिमा पइण्णा य ॥ ९ ॥ पढमं दिट्ठीजुद्धं वायाजुद्धं तहेव बाहाहिं । मुट्ठीहि य दंडेहि य सब्बत्थवि जिप्पए भरहो ॥ ३२ ॥ भा० सो एव जिप्पमाणो विहुरो अह नरवई विचिं-
 तेइ । किं मन्नि एस चक्की ? जह दाणिं दुब्बलो अहयं ॥ ३३ ॥ संवच्छरेण धूयं अमूढलक्खो उ पेसए अरिहा । हत्थीओ ओधरत्ति य वुत्ते चिंता पए नाणं ॥ ३४ ॥ उप्पण्णनाणरयणो
 तिण्णपइण्णो जिणस्स पामूले । गंतुं तित्थं नमिउं केवलिपरिसाइ आसीणो ॥ ३५ ॥ काऊण एगच्छत्तं भरहोऽविअ भुंजए विउलभोए । मरिईवि सामिपासे विहरइ तवसंजमसमग्गो
 ॥ ३६ ॥ सामाइअमाईअं इक्कारसमाउ जाव अंगाउ । उज्जुत्तो भत्तिगतो अहिज्जिओ सो गुरुसगासे ॥ ३७ ॥ अह अण्णया कयाई (मरीई) गिम्हे उण्हेण परिगयसरीरो । अण्हाणएण चइओ
 इमं कुलिंगं विचितेइ ॥ ३५० ॥ मेरुगिरीसमभारे न समत्थोऽहं मुहुत्तमवि वोढुं । सामण्णए गुणे गुणरहिओ संसारमणुकंखी ॥ १ ॥ एवमणुचितंतस्स तस्स निअगा मई समुप्पण्णा । लद्धो
 मए उवाओ जाया मे सासया बुद्धी ॥ २ ॥ समणा तिदंडविरया भगवंतो निहुअसंकुइअअंगा । अजिइंदियदंडस्स उ होउ तिदंडं महं चिंधं ॥ ३ ॥ लोइंदिअमुंडा संजया उ अहयं खुरेण
 ससिहो य । थूलगपाणिवहाओ वेरमणं मे सया होउ ॥ ४ ॥ निक्किंचणा य समणा अकिंचणा मज्झ किंचणं होउ । सीलसुगंधा समणा अहयं सीलेण दुग्गंधो ॥ ५ ॥ ववगयमोहा समणा
 मोहच्छण्णस्स छत्तयं होउ । अणुवाहणा य समणा मज्झं तु उवाहणा होन्तु ॥ ६ ॥ सुक्कंबरा य समणा निरंबरा मज्झ धाउरत्ताइं । हुंतु य मे वत्थाइं अरिहो मि कसायकलुसमई ॥ ७ ॥
 वज्जंतिऽवज्जभीरू बहुजीवसमाउलं जलारंभं । होउ मम परिमिएणं जलेण ण्हाणं च पियणं च ॥ ८ ॥ एवं सो रुइअमई निअगमइविगप्पियं इमं लिंगं । तद्धितहेउसुजुत्तं पारिब्रज्जं पव-
 त्तेइ ॥ ९ ॥ अह तं पागडरूवं दट्ठुं पुच्छेइ बहुजणो धम्मं । कहइ जईणं तो सो विआलणे तस्स परिकहणा ॥ ३६० ॥ धम्मकहाअक्खित्ते उवट्टिए देइ भगवओ सीसे । गामनगराइयाइं
 विहरइ सो सामिणा सद्धिं ॥ १ ॥ समुसरण भत्त उग्गह अंगुलि झय सक्क सावया अहिया । जेआ वड्ढइ कागिणि लंछण अणुसज्जणा अट्ट ॥ २ ॥ राया आइच्चजसो महाजसे अइबले य
 बलभदे । बलविरिए कत्तविरिए जलविरिए दंडविरिए य ॥ ३ ॥ एएहिं अद्धभरहं सयलं भुत्तं सिरेण धरिओ य । पवरो जिणिंदमउडो सेसेहिं न चाइओ वोढुं ॥ ४ ॥ अस्सावगपडिसेहो
 छट्टे छट्टे य मासि अणुओगो । कालेण य मिच्छत्तं जिणंतरे साहुवोच्छेओ ॥ ५ ॥ दाणं च माहणणं वेए कासी अ पुच्छ निव्वाणं । कुंडा थूम जिणहरे कविलो भरहस्स दिक्खा य ॥ ६ ॥

११८३ आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं, 107th/111

(मूलदारगाहा) पुणरवि य समोसरणे पुच्छीय जिणं तु चक्किणो भरहे। अप्पुट्टो य दसारे तित्थयरो को इहं भरहे? ॥ ७ ॥ जिणचक्किदसाराणं वण्ण पमाणाइं नामगोत्ताइं। आऊ. पुर माइपियरो परियाय गइं च साहीय ॥ ८ ॥ जारिसया लोयगुरू भरहे वासंमि केवली तुब्भे। एरिसया कइ अन्ने ताया! होहिंति तित्थयरा? ॥ ३८ ॥ भा०। अह भणइ जिणवरिंदो भरहे वासं- मि जारिसो अहयं! एरिसया तेवीसं अण्णे होहिंति तित्थयरा ॥ ९ ॥ होही अजिओ संभव अभिणंदण सुमइ सुप्पभ सुपासो। ससि पुप्फदंत सीअल सिजंसो वासुपूजो य ॥ ३७ ॥ विमलमणंतइ धम्मो संती कुंथू अरो य मल्ली य। मुणिसुव्वय नमि नेमी पासो तह वद्धमाणो य ॥ १ ॥ अह भणइ नरवरिंदो भरहे वासंमि जारिसो उअहं। तारिसया कइ अण्णे ताया! होहिंति रायाणो? ॥ २ ॥ अह भणइ जिणवरिंदो जारिसओ तं नरिंदसद्दूलो। एरिसया एकारस अण्णे होहिंति रायाणो ॥ ३ ॥ होही सगरो मघवं सणंकुमारो य रायसद्दूलो। संती कुंथू य अरो होइ सुभूभो य कोरव्वो ॥ ४ ॥ णवमो य महापउमो हरिसेणो चैव रायसद्दूलो। जयनामो य नरवई बारसमो बंभदत्तो य ॥ ५ ॥ होहिंति वासुदेवा नव अण्णे नीलपीअको- सिजा। हलमुसलचक्कजोही सतालगरुडज्झया दो दो ॥ ३९ ॥ भा०। तिविट्ठू य दिविट्ठू सयंभु पुरिसुत्तमे पुरिससीहे। तह पुरिसपुंडरीए दत्ते नारायणे कण्हे ॥ ४० ॥ अयत्ते विजए भदे. सुप्पभे य मुदंसणे। आणंदे णंदणे पउमे, रामे आवि अपच्छिमे ॥ १ ॥ आसग्गीवे तारय मेरय महुकुट्टवे निमुंभे य। बलि पहराए तह रावणे य नवमे जरासिंधू ॥ २ ॥ एए खलु पडिसत्तू किन्ती- पुरिसाण वासुदेवाणं। सव्वे य चक्कजोही सव्वे य हया सचक्केहिं ॥ ४३ ॥ भा०। पउमाभवासुपूजा रत्ता ससिपुप्फदंत ससिगोरा। सुव्वयनेमी काला पासो मल्ली पियंगाभा ॥ ६ ॥ वरकणगतविअ- गोरा सोलस तित्थंकरा मुणेयव्वा। एसो वण्णविभागो चउवीसाए जिणवराणं ॥ ७ ॥ पंचेव अद्धपंचम चत्तारइद्धुत्त तह तिगं चैव। अट्टाइज्जा दुण्णि य दिवट्टमेगं धणुसयं च ॥ ८ ॥ नउई असीइ सत्तरि सट्ठी पण्णास होइ नायव्वा। पणयाल चत्त पणतीस तीसा पणवीस वीसा य ॥ ९ ॥ पण्णरस दस धणूणि य नव पासो सत्तरयणिओ वीरो। नामा पुव्वत्ता खलु तित्थ- यराणं मुणेयव्वा ॥ ३८० ॥ मुणिसुव्वओ य अरिहा अरिट्ठनेमी य गोअमसगुत्ता। सेसा तित्थयरा खलु कासवगुत्ता मुणेयव्वा ॥ १ ॥ इक्खागभूमि उज्झा सावत्थी विणिअ कोसलपुरं च। कोसंबी वाणारसि चंदाणण तहय काकं(इं)दी ॥ २ ॥ भदिलपुर सीहपुरं चंपा कंपिल्ल उज्झ रयणपुरं। तिण्णेव गयपुरंमी मिहिल्ला तह चैव रायगिहं ॥ ३ ॥ मिहिल्ला सोरिअनयरं वाणा- रसि तह य होइ कुंडपुरं। उसभाईण जिणाणं जम्मणभूमी जहासंखं ॥ ४ ॥ मरुदेवि विजय सेणा सिद्धत्था मंगला मुसीमा य। पुहवी लक्खण सामा नंदा विण्हू जया रामा ॥ ५ ॥ सुजसा सुव्वय अइरा, सिरी देवी पभावई। पउमावई य वप्पा य, सिव वम्मा तिसला इअ ॥ ६ ॥ नाभी जिअसत्तू या. जियारी संवरे इअ। मेहे धरे पइट्टे य, महसेणे य खत्तिए ॥ ७ ॥ सुग्गीवे दढरहे विण्हू, वसुपूजे य खत्तिए। कयवम्मा सीहसेणे य, भाणू विससेणे इअ ॥ ८ ॥ सूरु सुदंसणे कुंभे सुमित्त विजए समुद्विजए य। राया य अस्ससेणे सिद्धत्थेऽविय ख- त्तिए ॥ ९ ॥ सव्वेऽवि गया मुक्खं जाइजरामरणबंधणविमुक्का। तित्थयरा भगवंतो सासयसुक्खं निराबाहं ॥ ३९० ॥ सव्वेऽवि एगवण्णा निम्मलकणगप्पभा मुणेयव्वा। लक्खंडभरहसामी तेसि पमाणं अओ वुच्छं ॥ १ ॥ पंचसय अद्धपंचम बायालीसा य अद्धधणुअं च। इगयाल धणुस्सद्धं च चउत्थे पंचमे चत्ता ॥ २ ॥ पणतीसा तीसा पुण अट्टावीसा य वीसइ धणूणि। पण्णरस बारसेव य अपच्छिमो सत्त य धणूणि ॥ ३ ॥ कासवगुत्ता सव्वे चउदसरयणाहिवा समक्खाया। देविंदवंदिएहिं जिणेहिं जिअरागदोसेहिं ॥ ४ ॥ चउरासीई बावत्तरी अ पुव्वान सयसहस्साइं। पंच य तिण्णि अ एगं च सयसहस्सा उ वासाणं ॥ ५ ॥ पंचाणउइ सहस्सा चउरासीई अ अद्धतेसट्ठी। तीसा य दस य तिण्णि अ अपच्छिमो सत्त वाससया ॥ ६ ॥ जम्मण विणीअ उज्झा सावत्थी पंच हत्थिणपुरंमि। वाणारसि कंपिल्ले रायगिहे चैव कंपिल्ले ॥ ७ ॥ सुमंगला जसवई भदा सहदेवि अइर सिरि देवी। तारा जाला मेरा य वप्पगा तह य चुलणी अ ॥ ८ ॥ उसभे सुमित्तविजए समुद्विजए अ अस्ससेणे अ। तह वीससेणे सूरु सुदंसणे कत्तविरिए अ ॥ ९ ॥ पउमुत्तरे महाहरि विजए राया तहेव बंभे य। ओसप्पिणी इमीसे पिय- नामा चक्कवट्ठीणं ॥ ४०० ॥ अट्टेव गया मोक्खं सुभूमो बंभो य सत्तमिं पुढविं। मघवं सणंकुमारो सणंकुमारं गया कप्पं ॥ १ ॥ वण्णेण वासुदेवा सव्वे नीला बला य मुक्किलया। एएसिं देहमाणं वुच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥ २ ॥ पढमो धणूणऽसीई सत्तरि सट्ठी अ पण्ण पणयाला। अउणत्तीसं च धणू लव्वीसा सोलस दसेव ॥ ३ ॥ बलदेववासुदेवा अट्टेव हवंति गोयमसगुत्ता। नारायणपउमा पुण कासवगुत्ता मुणेयव्वा ॥ ४ ॥ चउरासीइ विसत्तरि सट्ठी तीसा य दस य लक्खाइं। पण्णट्टि सहस्साइं लप्पण्णा बारसेगं च ॥ ५ ॥ पंचासीई पण्णत्तरी य पण्णट्टि पंच- वण्णा य। सत्तरस सयसहस्सा पंचमए आउयं होइ ॥ ६ ॥ पंचासीइ सहस्सा पण्णट्ठी तह य चैव पण्णरस। बारस सयाइं आउं बलदेवाणं जहासंखं ॥ ७ ॥ पोयण बारवइत्तिग अस्सपुरं तह य होइ चक्कपुरं। वाणारसि रायगिहं अपच्छिमो जाउ महुराए ॥ ८ ॥ मिगावई उमा चैव, पुहवी सीआ य अम्मया। लच्छीवई सेसमई, केगई देवई इय ॥ ९ ॥ भद सुभदा सुप्पभ सुदंसणा विजय वेजयंती य। तह य जयंती अपराजिया य तह रोहिणी चैव ॥ ४१० ॥ हवइ पयावइ बंभो रुदो सोमो सियो महसियो य। अग्गिसिहे य दसरहे नवमे भणिए य वमुदेवे ॥ १ ॥ परियाओ पव्वजाऽभावाओ नत्थि वासुदेवाणं। होइ बलाणं सो पुण पढमऽणुओगाउ णायव्वो ॥ २ ॥ एगो य सत्तमीए पंच य लट्ठीए पंचमी एगो। एगो य चउत्थीए (२९६) ११८४ आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं, तिथुपिरा

कण्हो पुण तवपुढवीए ॥ ३ ॥ अट्टंगगडा रामा एगो पुण बंभलोगकप्पंमि । उववण्णु तओ चइउं सिज्जिस्सइ भारहे वासे ॥ ४ ॥ अणिआणकडा रामा सव्वेऽविय केसवा निआणकडा ।
 उट्टंगामी रामा केसव सव्वे अहोगामी ॥ ५ ॥ उसभो वरवसभगई ततिअसमापच्छिमंमि कालंमि । उप्पण्णो पढमजिणो भरहपिया भारहे वासे ॥ ६ ॥ पण्णासालक्खेहिं कोडीणं साग-
 राण उसमाओ । उप्पण्णो अजिअजिणो ततिओ तीसाएँ लक्खेहिं ॥ ७ ॥ जिणवसहसंभवाओ दसहि उ लक्खेहिं अयरकोडीणं । अभिनंदणो उ भगवं एवइकालेण उप्पण्णो ॥ ८ ॥ अ-
 भिनंदणाउ सुमती नवहिं उ लक्खेहिं अयरकोडीणं । उप्पण्णो सुहपण्णो सुप्पभनामस्स वोच्छामि ॥ ९ ॥ णउईय सहस्सेहिं कोडीणं सागराण पुण्णाणं । सुमइजिणाओ पउमो एवति-
 कालेण उप्पण्णो ॥ १० ॥ पउमप्पहनामाओ नवहिं सहस्सेहिं अयरकोडीणं । कालेणेवइएणं सुपासनामो समुप्पण्णो ॥ ११ ॥ कोडीसएहिं नवहिं उ सुपासनामा जिणो समुप्पण्णो । चं-
 दप्पमो पमाए पमासयंतो उ तेलोळं ॥ १२ ॥ णउईए कोडीहिं ससीउ सुविही जिणो समुप्पण्णो । सुविहिजिणाओ नवहि उ कोडीहिं सीयलो जाओ ॥ १३ ॥ सीयलजिणाउ भगवं !
 सिजंसो सागराण कोडीए । सागरसयऊणाए वरिसेहिं तहा इमेहिं च ॥ १४ ॥ छवीसाएँ सहस्सेहिं चेव छासट्टीसयसहस्सेहिं । एतेहिं ऊणिया खलु कोडी मग्गिह्दिआ होइ ॥ १५ ॥ चउ-
 पण्णा अयराणं सिजंसो जिणो उवासुपूजो । वासुपूजाओ विमलो तीसहिं अयरेहिं उप्पण्णो ॥ १६ ॥ विमलजिणा उप्पण्णो नवहिं उ अयरेहिं णंतइजिणोऽवि । चउसागरनामे(माणे)हिं
 अणंतइतो जिणो धम्मो ॥ १७ ॥ धम्मजिणाओ संती तीहि उ तिचउभागपलियऊणेहिं । अयरेहिं समुप्पण्णो पलियद्धेणं तु कुंथुजिणो ॥ १८ ॥ पलियचउब्भाएणं कोडिसहस्सूणएण
 वासाणं । कुंथूओ अरणामो कोडिसहस्सेण मल्लिजिणो ॥ १९ ॥ मल्लिजिणाओ मुणिसुव्वओ य चउपण्णवासलक्खेहिं । सुव्वयनामाउ नमी लक्खेहिं छहिं उ उप्पण्णो ॥ २० ॥ पंचहिं
 लक्खेहिं तओ अरिट्टनेमी जिणो समुप्पणो । तेसीइसहस्सेहिं सएहिं अद्धट्टमेहिं च ॥ २१ ॥ नेमीओ पासजिणो पासजिणाओ य होइ वीरजिणो । अट्टाइज्जसएहिं गएहिं चरमो समुप्पणो
 ॥ २२ ॥ उसभे भरहो अजिए सगरो मघवं सणंकुमारो य । धम्मस्स य संतिस्स य जिणंतरे चक्कवट्टिदुगं ॥ २३ ॥ संती कुंथू अ अरो अरहंता चेव चक्कवट्टी य । अरमट्टीअंतरे ऊ हवइ
 सुभूमो य कोरव्वो ॥ २४ ॥ मुणिसुव्वए नमिमि अ हुंति दुवे पउमनाभहरिसेणा । नमिनेमिसु जयनामो अरिट्टपासंतरे बंभो ॥ २५ ॥ पंचऽरहंते वंदंति केसवा पंच आणुपुव्वीए । सिजंस
 तिविट्टाईधम्मपुरिससीहंपेरंता ॥ २६ ॥ अरमट्टिअंतरे दुण्णि केसवा पुरिसपुंडरिअदत्ता । मुणिसुव्वयनमिअंतरि नारायण कण्हु नेमिमि ॥ २७ ॥ चक्किदुगं हरिपणगं पणगं चक्कीण केसवो
 चक्की । केसव चक्की केसव दुचक्कि केसी अ चक्की अ ॥ २८ ॥ अह भणइ नरवरिंदो ताय ! इमीसित्तिआइ परिसाए । अण्णोऽवि कोऽवि होही भरहे वासंमि तित्थयरो ? ॥ २९ ॥ मू० । तत्थ मरी-
 ईनामा आइपरिव्वायगो उसभनत्ता । सज्झायझाणजुत्तो एगंते झायइ महप्पा ॥ ३० ॥ तं दाएइ जिणिंदो एव नरिंदेण पुच्छिओ संतो । धम्मवरचक्कवट्टी अपच्छिमो वीरनामुत्ति ॥ ३१ ॥
 आइगरु दसाराणं तिविट्टु नामेण पोअणाहिवई । पिअमित्तचक्कवट्टी मूआइ विदेहवासंमि ॥ ३२ ॥ तं वयणं सोऊणं राया अंचियतणूरुहसरीरो । अभिवांदिऊण पिअरं मरीइमभिवंदओ
 जाइ ॥ ३३ ॥ सो विणएण उवगओ काऊण पयाहिणं च तिक्खुत्तो । वंदइ अभित्थुणंतो इमाहिं महुराहिं वग्गूहिं ॥ ३४ ॥ लाहा हु ते सुलद्धा जं सि तुमं धम्मचक्कवट्टीणं । होहिसि दसच-
 उदसमो अपच्छिमो वीरनामुत्ति ॥ ३५ ॥ णवि ते पारिव्वज्जं वंदामि अहं इमं व ते जम्मं । जं होहिसि तित्थयरो अपच्छिमो तेण वंदामि ॥ ३६ ॥ एवण्हं थोऊणं काऊण पयाहिणं च तिक्खुत्तो ।
 आपुच्छिऊण पिअरं विणीअणगरिं अह पविट्टो ॥ ३७ ॥ तव्वयणं सोऊणं तिवइं अप्फोडिऊण तिक्खुत्तो । अब्भहिअजायहरिसो तत्थ मरीई इमं भणइ ॥ ३८ ॥ जइ वासुदेव पढमो मूआइ
 विदेहि चक्कवट्टित्तं (ट्टी य) । चरमो तित्थयराणं होउ अलं इत्तिअं मज्झ ॥ ३९ ॥ अहयं च दसाराणं पिआ य मे चक्कवट्टिवंसस्स । अज्जो तित्थयराणं अहो कुलं उत्तमं मज्झ ॥ ४० ॥ अह
 भगवं भवमहणो पुव्वानमणूणगं सयसहस्सं । अणुपुव्वि विहरिऊणं पत्तो अट्टावयं सेलं ॥ ४१ ॥ अट्टावयंमि सेले चउदसभत्तेण सो महरिसीणं । दसहिं सहस्सेहिं समं निव्वानमणुत्तरं पत्तो
 ॥ ४२ ॥ निव्वानं चिइगागिई जिणस्स इक्खाग सेसयाणं च । सकहा थूभ जिणहरे जायग तेणाऽऽहिअग्गित्ति ॥ ४३ ॥ थूभसय भाउगाणं चउवीसं चेव जिणहरे कासी । सब्बजिणाणं पडिमा
 वण्णपमाणेहिं निअएहिं ॥ ४४ ॥ भा० । आयंसघरपवेसो भरहे पडणं च अंगुलीयस्स । सेसाणं उम्मुअणं संवेगो नाण दिक्खा य ॥ ४५ ॥ पुच्छंताण कहेइ उवट्टिए देइ साहुणो सीसे । गेल-
 म्मि अपडिअरणं कविला ! इत्थंपि इहयंपि ॥ ४६ ॥ दुब्भासिएण इक्केण मरीई दुक्खसायरं पत्तो । भमिओ कोडाकोडिं सागरसरिनामधेज्जाणं ॥ ४७ ॥ तम्मूलं संसारो नीआगोत्तं च कासि
 तिवइंमि । अपडिअरं बंभे कविलो अंतदिओ कहए ॥ ४८ ॥ इक्खागेसु मरीई चउरासीई य बंभलोगंमि । कोसिउ कुल्लागंमी असीइमाउं च संसारो ॥ ४९ ॥ थूणाइ पूसमित्तो आउं
 बावत्तरिं च सोहम्मो । चेइय अग्गिज्जोओ चोवट्टीसाणकप्पंमि ॥ ५० ॥ मंदरे(दिए) अग्गिभूई छप्पणा उ सणंकुमारंमि । सेयवि भारद्वाओ चोयालीसं च माहिंदे ॥ ५१ ॥ संसरिय थावरो
 रायगिहे चउतीस बंभलोगंमि । छस्सुवि पारिबज्जं भमिओ तत्तो य संसारे ॥ ५२ ॥ रायगिहि विस्सनंदी विसाहभूई य तस्स जुवराया । जुवरणो विस्सभूई विसाहनंदी य इयरस्स ॥ ५३ ॥

रायगिह विस्सभूई विसाहभूइसुअ खत्तिए कोडी । वाससहस्सं दिक्खा संभूयजइस्स पासंमि ॥ ५ ॥ गोत्तासिउ महुराए सनिआणो मासिएण भत्तेण । महसुक्के उववण्णो तओ चुओ पोयणपुरंमि ॥ ६ ॥ पुत्तो पयावइस्सा मिआवईदेविकुच्छिसंभूओ । नामेण तिविट्ठुत्ती आई आसी दसाराणं ॥ ७ ॥ चुलसीइमप्पइट्ठे सीहो नरएसु तिरियमणुएसु । पियमित्त चक्कवट्ठी मूयाइ विदेहि चुलसीई ॥ ८ ॥ पुत्तो धंणंजयस्सा पुट्टिल परियाउ कोडि सब्बट्ठे । णंदण छत्तग्गाए पणवीसाउं सयसहस्सा ॥ ९ ॥ पव्वज्ज पुट्टिले सयसहस्स सब्बत्थ मासभत्तेण । पुप्फुत्तरि उववण्णो तओ चुओ माहणकुलंमि ॥ ४५० ॥ अरिहंतसिद्धपवयण० ॥ १ ॥ दंसण० ॥ २ ॥ अप्पुव्व० ॥ ३ ॥ पुरिमेण० ॥ ४ ॥ तं च कहं० ॥ ५ ॥ नियमा० ॥ ६ ॥ माहण-कुंडग्गामे कोडालसगुत्तमाहणो अत्थि । तस्स घरे उववण्णो देवाणंदाइ कुच्छिंसि ॥ ७ ॥ सुमिणमवहारऽभिग्गह जम्मणमभिसेय वुट्ठि सरणं च । भेसण विवाहऽवच्चे दाणं संबोह निक्खमणे ॥ ४५८ ॥ गय वसह सीह अभिसेय दाम ससि दिणयरं झयं कुम्भं । पउमसर सागर विमाणभवण रयणुच्चय सिहिं च ॥ ४६ ॥ एए चउदस सुमिणे पासइ सा माहणी सुहपसुत्ता । जं रयणिं उववण्णो कुच्छिंसि महायसो वीरो ॥ ७ ॥ अह दिवसे बासीई वसइ तहिं माहणीइ कुच्छिंसि । चिंतइ सोहम्मवई साहरिउं जे जिणं कालो ॥ ८ ॥ अरहंत चक्कवट्ठी बलदेवा चेव वासुदेवा य । एए उत्तमपुरिसा न हु तुच्छकुलेसु जायंति ॥ ९ ॥ उग्गकुलभोगखत्तिअकुलेसु इक्खागनायकोरव्वे । हरिवसे य विसाले आयंति तहिं पुरि-ससीहा ॥ ६० ॥ अह भणइ णेगमेसिं देविंदो एस इत्थ तित्थयरो । लोगुत्तमो महप्पा उववण्णो माहणकुलंमि ॥ १ ॥ खत्तिअकुंडग्गामे सिद्धत्थो नाम खत्तिओ अत्थि । सिद्धत्थभा-रिआए साहर तिसलाइ कुच्छिंसि ॥ २ ॥ बाढंति भाणिऊणं वासारत्तस्स पंचमे पक्खे । साहरइ पुव्वरत्ते हत्थुत्तर तेरसीदिवसे ॥ ३ ॥ गयगाहा० ॥ ४ ॥ एए चोदस सुमिणे पासइ सा माहणी पडिनिअत्ते । जं रयणीं अवहरिओ कुच्छीअ महायसो वीरो ॥ ५ ॥ गय० ॥ ६ ॥ एए चोदस सुमिणे पासइ सा तिसलया सुहपसुत्ता । जं रयणिं साहरिओ कुच्छिंसि महायसो वीरो ॥ ७ ॥ तिहिं नाणेहिं समग्गो देवीतिसलाइ सो य कुच्छिंसि । अह वसइ सण्णिगब्भो छम्मासे अद्धमासं च ॥ ८ ॥ अह सत्तमंमि मासे गब्भत्थो चेवऽभिग्गहं गिण्हे । नाहं समणो होहं अम्मापिअरंमि जीवंते ॥ ९ ॥ दोण्हं वरमहिलाणं गब्भे वसिऊण गब्भसुकुमालो । नवमासे पडिपुण्णे सत्त य दिवसे समइरेगे ॥ ६० ॥ अह चित्तसुद्धपक्खस्स तेरसीपुव्वर-त्तकालंमि । हत्थुत्तराहिं जाओ कुण्डग्गामे महावीरो ॥ १ ॥ आभरणरयणवासं वुट्ठं तित्थंकरंमि जायंमि । सक्को अ देवराया उवागओ आगया निहओ ॥ २ ॥ तुट्ठाओ देवीओ देवा आणंदिआ सपरिसागा । भयवंमि वद्धमाणे तेलुक्कसुहावहे जाए ॥ ३ ॥ भवणवइवाणमंतरजोइसवासी विमाणवासी अ । सच्चिइटीए सपरिसा चउच्चिहा आगया देवा ॥ ४ ॥ देवेहिं संपरिवुडो देविंदो गिण्हिऊण तित्थयरं । नेऊण मंदरगिरिं अभिसेअं तत्थ कासीअ ॥ ५ ॥ काऊण य अभिसेअं देविंदो देवदाणवेहिं समं । जणणीइ समप्पित्ता जम्मणमहिमं च कासीअ ॥ ६ ॥ खोमं कुंडलजुअलं सिरिदामं चेव देइ सक्को से । मणिकणगरयणवासं उवच्छुभे जंभगा देवा ॥ ७ ॥ वेसमणवयणसंचोइआ उ ते तिरिअजंभगा देवा । कोडिग्गसो हिरण्णं रयणाणि अ तत्थ उवणित्ति ॥ ८ ॥ अह वड्ढइ सो भयवं दिअलोअचुओ अणोवमसिरीओ । दासीदासपरिवुडो परिकिण्णो पीढमदेहिं ॥ ९ ॥ असिअसिरओ सुनयणो० ॥ ७० ॥ जाईसरो य भ-यवं० ॥ १ ॥ अह ऊणअट्ठवासस्स भगवओ सुरवराण मज्झंमि । संतगुणुक्कित्तणयं करेइ सक्को सुहम्माए ॥ २ ॥ बालो अबालभावो अबालपरक्कमो महावीरो । न हु सक्कइ भेसेउं अम-रेहिं सइंदएहिंपि ॥ ३ ॥ तं वयणं सोऊणं अह एगु सुरो असइहंतो उ । एइ जिणसण्णिगासं तुरियं सो भेसणट्ठाए ॥ ४ ॥ सप्पं च तरुवरंमी काउं तिंदूसएण डिंभं च । पिट्ठी मुट्ठीइ हओ वंदिय वीरं पडिनियत्तो ॥ ५ ॥ अह तं अम्मापियरो जाणित्ता अहियअट्ठवासं तु । कयकोउअलंकारं लेहायरियस्स उवणित्ति ॥ ६ ॥ सक्को य तस्समक्खं भगवंतं आसणे निवेसित्ता । सइस्स लक्खणं पुच्छ वागरणं अवयवा इंदं ॥ ७ ॥ उम्मुक्कबालभावो कमेण अह जोव्वणं अणुप्पत्तो । भोगसमत्थं णाउं अम्मापियरो उ वीरस्स ॥ ८ ॥ तिहिरिक्खंमि पसत्थे महन्तसामन्त-कुलपसूयाए । कारंति पाणिगहणं जसोअवररायकण्णाए ॥ ९ ॥ पंचविहे माणुस्से भोगे भुंजित्तु सह जसोआए । तेयसिरिवं सुरूवं जणेइ पिअदंसणं धूयं ॥ ८० ॥ भा० । हत्थुत्तरजोएणं कुंडग्गामंमि खत्तिओ जच्चो । वज्जरिसहसंघयणो भविअजणविबोहओ वीरो ॥ ९ ॥ सो देवपरिग्गहिओ तीसं वासाइ वसइ गिहवासे । अम्मापिईहिं भयवं देवत्तगएहिं पव्वइओ ॥ ४६० ॥ संवच्छरेण० ॥ ८१ ॥ भा० । एगा हिरण्ण० ॥ २ ॥ सिंघाडय० ॥ ३ ॥ वरवरिआ० ॥ ४ ॥ तिण्णेव य० ॥ ५ ॥ सारस्सयमाइच्चा० ॥ ६ ॥ एए देवनिकाया० ॥ ७ ॥ एवं अभिथुव्वंतो बुद्धो बुद्धारविंदसरिसमुहो । लोगंतिगदेवेहिं कुंडग्गामे महावीरो ॥ ८ ॥ मणपरिणामो य कओ अभिनिक्खमणंमि जिणवरिंदेण । देवेहि य देवीहि य समंतओ उच्छयं गयणं ॥ ९ ॥ भवणवइवाणमंतरजोइसवासी विमाणवासी य । धरणियले गयणयले विज्जुज्जोओ कओ खिप्पं ॥ ९० ॥ जाव य कुंडग्गामो जाव य देवाण भवणआवासा । देवेहिं देवीहि य अविरहियं संचरंतेहिं ॥ १ ॥ चन्दपभा य सीया उवणीया जम्ममरणमुक्कस्स । आसत्तमल्लुदामा जलयथलयदिब्वकुसुमेहिं ॥ २ ॥ पंचासइ आयामा धणूणि विच्छिण्ण पण्णवीसं तु । छत्तीसइमु-

११८६ आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं ; १०१५/१५५

द्विदा सीया चंदप्पभा भणिया ॥ ३ ॥ सीयाइ मज्झयारे दिवं मणिकणगरयणचिचइयं । सीहासणं महरिहं सपायवीढं जिणवरस्स ॥ ४ ॥ आलइयमालमउडो भासुरबोदी पलंबवण-
 मालो । सेययवत्थनियत्थो जस्स य मोहं सयसहस्सं ॥ ५ ॥ छट्टेणं भत्तेणं अज्झवसाणेण सोहणेण जिणो । लेसाहिं विसुज्झंतो आरुहई उत्तमं सीयं ॥ ६ ॥ सीहासणे निसण्णो सक्की-
 साणा य दोहि पासेहिं । वीयंति चामरेहिं मणिकणग(रयण) विचित्तदंडेहिं ॥ ७ ॥ पुंविं उक्खित्ता माणुसेहिं साहट्टरोमकूवेहिं । पच्छा वहंति सीअं असुरिंदसुरिंदनागिंदा ॥ ८ ॥ चल-
 चवलभूसणधरा सच्छंदविउव्विआभरणधारी । देविंददाणविंदा वहंति सीअं जिणिंदस्स ॥ ९ ॥ कुसुमाणि पंचवण्णाणि मुञ्चंता दुंदुही य ताडंता । देवगणा य पहट्टा समंतओ उच्छयं
 गयणं ॥ १०० ॥ वणसंडोव्व कुसुमिओ पउमसरोवा जहा सरयकाले । सोहइ कुसुमभरेणं इय गगणयलं सुरगणेहिं ॥ १ ॥ सिद्धत्थवणं व जहा असणवणं सणवणं असोगवणं । चूअवणं व
 कुसुमियं इय गयणयलं सुरगणेहिं ॥ २ ॥ अयसिवणं व कुसुमियं कणिआरवणं व चंपयवणं वा । तिलयवणं व कुसुमियं इय गयणतलं सुरगणेहिं ॥ ३ ॥ वरपडहभेरिइल्लरिंदुंदुहिसंख-
 सहिएहिं तूरेहिं । धरणियले गयणयले तूरनिनाओ परमरम्मो ॥ ४ ॥ एवं सदेवमणुआसुराएँ परिसाएँ परिवुडो भयवं । अभिथुवंतो गिराहिं संपत्तो नायसंडवणं ॥ ५ ॥ उज्जाणं संपत्तो
 ओरुभई उत्तमाउ सीयाओ । सयमेव कुणइ लोयं सक्को सि पडिच्छए केसे ॥ ६ ॥ जिणवरमणुणवित्ता अंजणघणरुयगविमलसंकासा । केसा खणेण नीआ खीरसरिसनामय उदहिं
 ॥ ७ ॥ दिव्वो य मणुसघोसो तूरनिनाओ य सक्कवयणेणं । खिप्पामेव निलुक्को जाहे पडिवज्जइ चरित्तं ॥ ८ ॥ काऊण नमोक्कारं सिद्धाणमभिग्गहं तु सो गिण्हे । सब्बं मेऽकरणिज्जं पावंति
 चरित्तमारूढो ॥ ९ ॥ तिहिं नाणेहिं समग्गा तित्थयरा जाव हुंति गिहवासे । पडिवण्णंमि चरित्ते चउनाणी जाव छउमत्था ॥ ११० ॥ बहिआ य णायसंडे आपुच्छित्ताण नायए सव्वे ।
 दिवसे मुहुत्तसेसे कुमा(कम्मा०)रगामं समणुपत्तो ॥ १११ ॥ भाष्यं । गोवनिमित्तं सक्कस्स आगमो वागरेइ देविंदो । कोल्ला(ल्लग)बहुले छट्टस्स पारणे पयस वसुहारा ॥ ४६१ ॥ बीया वरवरिया ॥
 दूइज्जंतग पिउणो वयंस तिवा अभिग्गहा पंच । अचियत्तुग्गहि न वसण णिच्चं वोसट्ट मोणेणं ॥ २ ॥ पाणीपत्तं गिहिंवदणं च तओ वद्धमाण वेगवई । धणदेव सूलपाणिंदसम्म वासऽट्टिअग्गामे
 ॥ ३ ॥ रोहा य सत्त वेयण थुइ दस सुमिणुप्पलऽद्धमासे य । मोराएँ सक्कारं सक्को अच्छंदए कुविओ ॥ ४ ॥ भीमऽट्टहास हत्थी पिसाय नागे य वेदणा सत्त । सिरकण्णनासदन्ते नहऽ-
 च्छि पिट्ठी य सत्तमिआ ॥ ११२ ॥ भाष्यं । तालपिसायं दो कोइला य दामदुग्मेव गोवग्गं । सरसागर सूरंते मन्दर सुविणुप्पले चव ॥ ११३ ॥ मोहे य ज्ञाण पवयण धम्मं संघे य देवलोए
 य । संसारं णाण जसे धम्मं परिसाएँ मज्झंमि ॥ ११४ ॥ मोरागसणिवेसे बाहिं सिद्धत्थ तीतमाईणि । साहइ जणस्स अच्छंदपओसो छेअणे सक्को ॥ प्र० १९ ॥ तण्णयंगुलि कम्मर
 वीरघोसे महिसिंदु दसपलिअं । बिइइंदसम्म ऊरण बयरीएँ दाहिणुकुरुडे ॥ ४६५ ॥ तइअमवच्चं भज्जा कहिही नाहं तओ पिउवयंसो । दाहिणवायालसुवण्णवालुगा कंटए वत्थं ॥ ६ ॥ उत्तर-
 वाचालंतरवणसंडे चंडकोसिओ सप्पो । न डहे चिंता सरणं जोइस कोवा उ जाओऽहं ॥ ७ ॥ उत्तरवायाला नागसेण खीरेण भोयणं दिव्वा । सेयवियाय पएसी पंचरहे निज्ज(यय)रायाणो
 ॥ ८ ॥ सुरहिपुर सिद्धजत्तो गंगा कोसिअ विऊ य खेमिलओ । नाग सुदाढे सीहे कंबलसंबला य जिणमहिमा ॥ ९ ॥ महुराएँ जिणदासो आहीर विवाह गोण उववासो । भंडीर मित्त अवच्चे
 भत्ते णागोहि आगमणं ॥ ४७० ॥ वीरवरस्स भगवओ नावारूढस्स कासि उवसग्गं । मिच्छादिट्टिपरद्धं कंबलसंबला समुत्तारे ॥ १ ॥ थूणाइ बहिं पूसो लक्खणंमभंतरं च देविंदो । राय-
 गिहि तंतुसाला मासक्खमणं च गोसालो ॥ २ ॥ मंखलि मंख सुभदा सरवण गोबहुलमेव गोसालो । विजयाणंदसुणंदे भोअण खज्जे य कामगुणे ॥ ३ ॥ कुल्लाग बहुल पायस दिव्वा
 गोसाल दट्टु पव्वज्जा । बाहिं सुवण्णखलएँ पायसथाली नियइगहणं ॥ ४ ॥ बंभणगामे नंदोवनंद उवणंद तेय पच्चद्वे । चंपा दुमासखमणे वासावासं मुणी खमइ ॥ ५ ॥ कालाएँ सुण्ण-
 गारे सीहो विज्जुमइ गोट्टिदासी य । खंदो दन्तिलियाएँ पत्तालग सुण्णगारंमि ॥ ६ ॥ मुणिचंद कुमाराएँ कूवणय चंपरमणिज्जउज्जाणे । चोराय चारि अगडे सोमजयंती उवसमेन्ति
 ॥ ७ ॥ पिट्ठीचंपा वासं तत्थ चउम्मासिएण खमणेणं । कयंगल देउलवरिसे दरिदथेरा य गोसालो ॥ ८ ॥ सावत्थी सिरिभदा निंदू पिउदत्त पयस सिवदत्ते । दारऽगणी नखवाला हलिइ
 पडिमाऽगणीपहिया ॥ ९ ॥ तत्तो य णंगलाएँ डिंभ मुणी अच्छिक्कड्ढणं चव । आवत्ते मुहतासे मुणिओत्ति अ बाहि बलदेवो ॥ ४८० ॥ चोरा मंडव भोज्जं गोसालो वहण तेय झाम-
 णया । मेहो य कालहत्थी कलंबुयाएँ उ उवसग्गा ॥ १ ॥ लाढेसु य उवसग्गा घोरा पुण्णकल्ला य दो तेणा । वज्जहया सक्केणं भदिय वासासु चउमासं ॥ २ ॥ कयलिसमागम भोयण
 मंखलि दहिकूर भगवओ पडिमा । जंबूसंडे गोट्टीय भोयणं भगवओ पडिमा ॥ ३ ॥ तंबाएँ नंदिसेणा पडिमा आरक्खि वहण भय डहणं । कूविय चारिय मोक्खे विजय पगब्भा य
 पत्तेयं ॥ ४ ॥ तेणेहिं पहे गहिओ गोसालो माउलोत्ति वाहणया । भगवं वेसालीएँ कम्मर घणेण देविंदो ॥ ५ ॥ गामाग बिहेलगजक्ख तावसी उवसमावसाण थुई । छट्टेण सालिसीसे
 विसुज्झमाणस्स लोगोही ॥ ६ ॥ पुणरवि भदिअनगरे तवं विचित्तं च छट्टवासंमि । मगहाएँ निरुवसग्गं मुणि उउबद्धंमि विहरित्था ॥ ७ ॥ आलभिआएँ वासं कुडगे तह देउले पराहु-
 ११८७ आवश्यकं सनियु- सूक्तिकं मूलसूत्रं, *विद्युक्ति*

सो । महण देउल सारिय मुहमूले दोसुवि मुणित्ति ॥ ८ ॥ बहुसालगसालवणे कडपूअण पडिम विग्घणोवसमे । लोहगलंभि चारिय जिअसत्तु उप्पले मोक्खो ॥ ९ ॥ तत्तो य पुरिम-
 ताले वग्गुर ईसाण अणए पडिमा । मल्लीजिणायण पडिमा उण्णाए वंसि बहुगोटी ॥ ४९० ॥ गोभूमि वज्जलाटे गोवक्कोवे य वंसि जिणुवसमे । रायगिहऽट्टमवासा (स तु) वज्जभूमी बहु-
 वसग्गा ॥ १ ॥ अनिअयवासं सिद्धत्थपुरं तिलथंब पुच्छ निष्फत्ती । उप्पाडेइ अणजो गोसालो वास बहुलाए ॥ २ ॥ मगहा गोब्बरगामो गोसंखी वेसियाण पाणामा । कुम्मग्गामाया-
 वण गोसाले गोवण पउट्टे ॥ ३ ॥ वेसालीए पडिमं डिंभमुणित्ति तत्थ गणराया । पूएइ संखनामो (संखो गणराय पिउवर्यंसो उ । गंडइया तरपण्णं) चित्तो नावाएँ भगिणिसुओ
 ॥ ४ ॥ वाणियगामायावण आनंदो ओहि परीसहसहित्ति । सावत्थीए वासं चित्ततवो साणुलट्टि बहिं ॥ ५ ॥ पडिमा भइ महामह सव्वओभइ पढमिआ चउरो । अट्ट य वीसाऽऽणंदे
 बहुलिय तह उज्झिणए दिवा ॥ ६ ॥ दढभूमीए बहिआ पेढालं नाम होइ उजाणं (दढभूमी बहुमेच्छा पेढालग्गाममागओ भगवं चू०) । पोलासचेइयम्मी ठिएगराई महा-
 पडिमं ॥ ७ ॥ सक्को य देवराया सभागओ भणइ हरिसिओ वयणं । तिण्णिवि लोग समत्था जिणवीरमणं न चालेउं ॥ ८ ॥ सोहम्मकप्पवासी देवो सक्कस्स सो अमरिसेणं ।
 सामाणिअ संगमओ बेइ सुरिंदं पडिनिविट्टो ॥ ९ ॥ तेह्लोक्कं असमत्थंति पेह एतस्स चालणं काउं । अजेव पासह इमं मम वसगं भट्टजोगतवं ॥ ५०० ॥ अह आगओ तुरंतो
 देवो सक्कस्स सो अमरिसेणं । कासी य हउवसग्गं मिच्छदिट्ठी पडिनिविट्टो ॥ १ ॥ धूली पिवीलिआओ उइसा चेव तह य उण्होला । विच्छुय नउला सप्पा य मूसगा चेव अट्टमगा
 ॥ २ ॥ हत्थी हत्थिणिआओ पिसायए घोररूव वग्घो य । थेरो थेरीइ सुओ आगच्छइ पक्कणो य तहा ॥ ३ ॥ खरवाय कलंकलिया, कालचक्कं तहेव य । पाभाइय उवसग्गे, वीसइमो होइ
 अणुलोमो ॥ ४ ॥ सामाणियदेविडिं देवो दावेइ सो विमाणगओ । भणइ य वरेह महरिसि ! निष्फत्ती सग्गमोक्खाणं ॥ ५ ॥ उवहयमइविण्णाणो ताहे वीरं बहुं पसाहेउं । ओहीए नि-
 ज्जाइ झायइ छजीवहियमेव ॥ ६ ॥ वालुयपंथे तेणा माउलपारणग तत्थ काणच्छी । तत्तो सुभोम अंजलि सुच्छित्ताए य विडरूवं ॥ ७ ॥ मलए पिसायरूवं सिवरूवं हत्थिसीसए चेव ।
 ओहसणं पडिमाए मसाण सक्को जवणपुच्छा ॥ ८ ॥ तोसलि कुसीसरूवं संधिच्छेओ इमोत्ति वज्झो य । मोएइ इंदजालिउ तत्थ महाभूइलो नामं ॥ ९ ॥ मोसलि संधि सुमागह मोएई
 रट्टिओ पिउवर्यंसो । तोसलि य सत्तरजूवावत्ती तोसली मोक्खो ॥ ५१० ॥ सिद्धत्थपुरे तेणेत्ति कोसिओ आसवाणिओ मोक्खो । वयगाम हिंडऽणेसण बिइयदिणे बेइ उवसंतो ॥ १ ॥
 वच्चह हिंडह न करेमि किंचि इच्छा न किंचि वत्तवो । तत्थेव वच्छवाली थेरी परमन्न वसुहारा ॥ २ ॥ छम्मासे अणुबद्धं देवो कासीय सो उ उवसग्गं । दट्टूण वयग्गामे वंदिय वीरं
 पडिनियत्तो ॥ ३ ॥ देवो ठिओ महिइढी वरमंदरचूलियाइ सिहरंमि । परिवारिउ सुरवहूहिं आउंमी सागरे सेसे ॥ ४ ॥ आलभियाएँ हरि विज्जु जिणस्स भत्तीइ वंदओ एइ । भगवं
 पियपुच्छा जियउवसग्गिति थेवमवसेसं ॥ ५ ॥ हरिसह सेयवियाए सावत्थी खंदपडिम सक्को य । ओयरिउं पडिमाए लोगो आउट्टिओ वंदे ॥ ६ ॥ कोसंबी चंदसूरोयरणं वाणारसीय सक्को
 उ । रायगिहे ईसाणो महिला जणओ य धरणो य ॥ ७ ॥ वेसालि भूयणंदो चमरुप्पाओ य सुंसुमारपुरे । भोगपुरि सिंदकंदग माहिंदो खत्तिओ कुणति ॥ ८ ॥ वारण सणंकुमारे नंदीगामे
 पिउसहा वंदे । मंढियगामे गोवो वित्तासणयं च देविंदो ॥ ९ ॥ कोसंबीएँ सयाणिअ अभिग्गहो पोसबहुलपाडिवई । चाउम्मास मिगावइ विजयसुगुत्तो य नंदा य ॥ ५२० ॥ तच्चावाई
 चंपा दहिवाहण वसुमई विजयनामा । धणवह मूला लोयण संपुल दाणे य पव्वज्जा ॥ १ ॥ तत्तो सुमंगलाए सणंकुमार सुछेत्त एइ माहिंदो । पालग वाइलवणिए अमंगलं अप्पणो अ-
 सिणा ॥ २ ॥ चंपा वासावासं जक्खिंदे साइदत्तपुच्छा य । वागरण दुहपएसण पच्चक्खाणे य दुविहे उ ॥ ३ ॥ जंभियगामे नाणस्स उप्पया वागरेइ देविंदो । मिंढियगामे चमरो वंदण
 पियपुच्छणं कुणइ ॥ ४ ॥ छम्माणि गोव कडसलपवेसणं मज्झिमाएँ पावाए । खरओ विज्जो सिद्धत्थ वाणियओ नीहरावेइ ॥ ५ ॥ जंभिय बहि उजुवालिय तीर वियावत्त सामसाल-
 अहे । छट्टेणुक्कुडुयस्स उ उप्पणं केवलं नाणं ॥ ६ ॥ उवसग्गा समत्ता । जो य तवो अणुचिण्णो वीरवरेणं महाणुभावेणं । छउमत्थकालियाए अहक्कमं कित्तइस्सामि ॥ ७ ॥ नव किर
 चाउम्मासे छक्किर दोमासिया उवासीय । बारस य मासियाइं बावत्तरि अद्धमासाइं ॥ ८ ॥ एगं किर छम्मासं दो किर तेमासिए उवासीय । अड्ढाइज्जाइ दुवे दो चेव दिवइढमासाइं
 ॥ ९ ॥ भइं च महाभइं पडिमं तत्तो य सव्वओभइं । दो चत्तारि दसेव य दिवसे ठासीय अणुबद्धं ॥ ५३० ॥ गोयरमभिग्गहजुयं खमणं छम्मासियं च कासीय । पंचदिवसेहि ऊणं अद्व-
 हिओ वच्छनयरीए ॥ १ ॥ दस दो य किर महप्पा ठाइ मुणी एगराइए पडिमे । अट्टमभत्तेण जई एक्केक्कं चरमराइयं ॥ २ ॥ दो चेव य छट्टसए अउणातीसे उवासिया भगवं । न कयाइ
 निच्चभत्तं चउत्थभत्तं च से आसि ॥ ३ ॥ बारस वासे अहिए छट्टं भत्तं जहण्णयं आसि । सव्वं च तवोकम्मं अपाणयं आसि वीरस्स ॥ ४ ॥ तिण्णि सए दिवसाणं अउणावण्णं तु पारणा-
 कालो । उक्कडुयनिसेजाणं ठियपडिमाणं सए बहुए ॥ ५ ॥ पव्वज्जाए पढमं दिवसं एत्थं तु पक्खिवित्ताणं । संकलियंमि उ संते जं लद्धं तं निसामेह ॥ ६ ॥ बारस चेव य वासा मासा
 छच्चेव अद्धमासो य । वीरवरस्स भगवओ एसो छउमत्थपरियाओ ॥ ७ ॥ एवं तवोगुणरओ अणुपुव्वेणं मुणी विहरमाणो । घोरं परीसहचमुं अहियासित्ता महावीरो ॥ ८ ॥ (२९७)
 ११८८ आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं, निर्युक्ति

उप्पण्णंमि अणंते नट्टंमि य छाउमत्थिए नाणे । राईए संपत्तो महसेणवणंमि उज्जाणे ॥ ९ ॥ अमरनररायमहिओ पत्तो धम्मवरचक्कवट्ठित्तं । बीयंपि समोसरणं पावाए मज्झिमाए उ
 ॥ ५४० ॥ तत्थ किल सोमिलज्जत्ति माहणो तस्स दिक्खकालंमि । पउरा जणजाणवया समागया जन्नवाडंमि ॥ १ ॥ एगंते य विवित्ते उत्तरपासंमि जन्नवाडस्स । तो देवदाणविंदा करंति
 महिमं जिणिदस्स ॥ २ ॥ भवणवइवाणमंतर जोइसवासी विमाणवासी य । सच्चिइदीए सपरिसा कासी नाणुप्पयामहिमं ॥ १ १५ ॥ भा० । समुसरणे केवइय रूव पुच्छ वागरण सोयपरिणामे ।
 दाणं च देवमल्ले मल्लाणयणे उवरि तित्थं ॥ ३ ॥ जत्थ अपुबोसरणं जत्थ व देवो महिडिडओ एइ । वाउदयपुप्फवइलपागारतियं च अभिओगो ॥ ४ ॥ मणिकणगरयणचित्तं भूमीभागं
 समंतओ सुरभिं । आजोअणंतरेणं करंति देवा विचित्तं तु ॥ ५ ॥ वेंट्टाईं सुरभिं जलथलयं दिव्वकुसुमणीहारिं । पइरंति समंतेणं दसद्ववणं कुसुमवासं ॥ ६ ॥ मणिकणगरयणचित्ते चउ-
 दिसिं तोरणे विउव्वंति । सच्छत्तसालभंजियमयरद्वयच्चिधसंठाणे ॥ ७ ॥ तिन्नि य पागारवरे रयणविचित्ते तहिं सुरगणिंदा । मणिकंचणकविसीसगविभूसिए ते विउव्वंति ॥ ८ ॥ अब्भंतर
 मज्झ बहिं विमाणजोइसभवणाहिवकया उ । पागारा तिण्णि भवे रयणे कणगे य रयए य । ९ ॥ मणिरयणहेमयाविय कविसीसा सव्वरयणिया दारा । सव्वरयणामयच्चिय पडागधयतो-
 रणविचित्ता ॥ ५५० ॥ तत्तो य समंतेणं कालागरुकुंदुरुक्कमीसेणं । गंधेण मणहरेणं धूवघडीओ विउव्वंति ॥ १ ॥ उक्कुट्टिसीहणायं कलयलसहेण सव्वओ सव्वे । तित्थगरपायमूले करंति देवा
 णिवयमाणा ॥ २ ॥ चेइदुम पेढ छंदय आसण छत्तं च चामराओ य । जं चऽण्णं करणिजं करंति तं वाणमंतरिया ॥ ३ ॥ साहारणओसरणे एवं जत्थिडिडमं तु ओसरइ । एक्कु चिय तं सव्वं
 करेइ भयणा उ इयरेसिं ॥ ४ ॥ सूरुदय पच्छिमाए ओगाहन्तीए पुब्वओ एई । दोहिं पउमेहिं पाया मग्गेण य होन्ति सत्तऽजे ॥ ५ ॥ आयाहिण पुब्वमुहो तिदिसिं पडिरूवगा उ देवकया ।
 जेट्टगणी अण्णो वा दाहिणपुब्वे अदूरंमि ॥ ६ ॥ जे ते देवेहिं कया तिदिसिं पडिरूवगा जिणवरस्स । तेसिंपि तप्पभावा तयाणुरूवं हवइ रूवं ॥ ७ ॥ तित्थाइसेससंजय देवी वेमाणियाण
 समणीओ । भवणवइवाणमंतरजोइसियाणं च देवीओ ॥ ८ ॥ केवलिणो तिउण जिणं तित्थपणामं च मग्गओ तस्स । मणमादीवि णमंता वयंति सट्टाणसट्टाणं ॥ ९ ॥ भवणवई जोइ-
 सिया बोद्धवा वाणमंतरसुरा य । वेमाणिया य मणुया पयाहिणं जं च निस्साए ॥ ५६० ॥ संजयवेमाणित्थी संजइ पुब्वेण पविसिउं वीरं । काउं पयाहिणं पुब्वदक्खिणे ठंति दिसिभागे
 ॥ १ १६ ॥ भा० । जोइसियभवणवंतरदेवीओ दक्खिणेण पविसंति । चिट्ठंति दक्खिणावरदिसिंमि तिगुणं जिणं काउं ॥ ७ ॥ अवरेण भवणवासीवंतरजोइससुरा य अइगंतुं । अवरुत्तरदिसिभागे
 ठंति जिणं तो नमंसित्ता ॥ ८ ॥ समहिंदा कप्पसुरा राया णरणारिओ उदीणेणं । पविसित्ता पुव्वुत्तरदिसीए चिट्ठंति पंजलिआ ॥ १ १९ ॥ भा० । एक्केकीय दिसाए तिगं तिगं होइ सभिविट्ठं तु ।
 आदिचरिमे विमिरसा थीपुरिसा सेस पत्तेयं ॥ १ ॥ एतं महिडिडयं पणिवयंति ठियमवि वयंति पणमंता । णवि जंतणा ण विकहा ण परोप्पर मच्छरो ण भयं ॥ २ ॥ बिइयंमि होंति तिरिया
 तइए पागारमन्तरे जाणा । पागारजढे तिरियाऽवि होंति पत्तेय मिस्सा वा ॥ ३ ॥ सव्वं च देसविरतिं सम्मं घेच्छति व होंति कहणाउ । इहरा अमूढलक्खो न कहेइ भविस्सइ ण तं च ॥ ४ ॥
 मणुए चउण्हऽण्णयरं तिरिए तिण्णि व दुवे व पडिवजे । जइ नत्थि नियमसोच्चिय सुरेसु सम्मत्तपडिवत्ती ॥ ५ ॥ तित्थपणामं काउं कहेइ साहारणेण सहेणं । सव्वेसिं सण्णीणं जोयणणी-
 हारिणा भगवं ॥ ६ ॥ तप्पुब्विया अरहया पूइयपूता य विणयकम्मं च । कयकिच्चोऽवि जह कंहं कहए णमए तहा तित्थं ॥ ७ ॥ जत्थ अपुबोसरणं न दिट्ठपुब्वं व जेण समणेणं । बारसहिं
 जोयणेहिं सो एइ अणागमे लहुया ॥ ८ ॥ सव्वसुरा जइ रूवं अंगुट्टपमाणयं विउव्वेजा । जिणपायंगुट्टं पइ ण सोहए तं जहिंगालो ॥ ९ ॥ गणहर आहार अणुत्तरा य जाव वण चक्कि
 वासु बला । मण्डलिया ता हीणा छट्टाणगया भवे सेसा ॥ ५७० ॥ संघयणरूवसंठाणवण्णगइसत्तसारउस्सासा । एमाइऽणुत्तराईं हवंति नामोदया तस्स ॥ १ ॥ पगडीणं अण्णासिवि पस-
 त्थउदया अणुत्तरा होंति । खयउवसमेऽविय तहा खयम्मि अविगप्पमाहंसु ॥ २ ॥ अस्सायमाइयाओ जाविय असुहा हवंति पगडीओ । णिंवरसलवोव्व पए ण होंति ता असुहया तस्स
 ॥ ३ ॥ धम्मोदएण रूवं करंति रूवस्सिणोऽवि जइ धम्मं । गिज्झवओ य सुरूवो पसंसिमो तेण रूवं तु ॥ ४ ॥ कालेण असंखेणवि संखातीताण संसईणं तु । मा संसयवोच्छित्ती न होज्ज
 कमवागरणदोसा ॥ ५ ॥ सव्वत्थ अविमत्तं रिद्धिविसेसो अकालहरणं च । सव्वण्णुपच्चओऽविय अचित्तगुणभूतिओ जुगवं ॥ ६ ॥ वासोदयस्स व जहा वण्णादी होंति भायणविसेसा ।
 सव्वेसिंपि सभासा जिणभासा परिणमे एवं ॥ ७ ॥ साहारणासवत्ते तदुवओगो उ गाहगगिराए । न य निव्विज्जइ सोया किट्ठिवाणियदासिआहरणा ॥ ८ ॥ सव्वाउयंपि सोया खवेज
 जइ हु सययं जिणो कहए । सीउण्हसुप्पिवासापरिस्समभए अविगणंतो ॥ ९ ॥ वित्ती उ सुवण्णस्सा बारस अद्वं च सयसहस्साइं । तावइयं चिय कोडी पीतीदाणं तु चक्कीणं ॥ ५८० ॥
 एयं चेव पमाणं णवरं रययं तु केसवा दिति । मंडलियाण सहस्सा पीईदाणं सयसहस्सा ॥ १ ॥ भत्तिविहवाणुरूवं अण्णेऽविय देंति इब्भमाईया । सोऊण जिणागमणं निउत्तमणिओइएसुं
 चा ॥ २ ॥ देवाणुयत्ति भत्ती पूया थिरकरण सत्तअणुकंपा । साओदय दाणगुणा पभावणा चेव तित्थस्स ॥ ३ ॥ राया व रायऽमच्चो तस्सऽसई देइ पुरजणो वाऽवि । दुब्बलिसंढियबलिच्छ-
 ११८९ आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं, सनिर्यु-

डियतंदुलाणाढगं कलमा ॥ ४ ॥ भाइयपुणाणियाणं अखंडफुडियाण फलगसरियाणं । कीरइ बली सुराविय तत्थेव छुहंति गंधाई ॥ ५ ॥ बलिपविसणसमकालं पुब्वदारेण ठाति परिकह-
 णा । तिगुणं पुरओ पाडण तस्सऽद्धं अवडियं देवा ॥ ६ ॥ अद्धऽद्धं अहिवइणो अवसेसं हवइ पागयजणस्स । सव्वामयप्पसमणी कुप्पइ णऽण्णो य छम्मासे ॥ ७ ॥ खेयविणोओ सीसगुण-
 दीवणा पच्चओ उभयओऽवि । सीसायरियकमोऽविय गणहरकहणे गुणा होंति ॥ ८ ॥ राओवणीयसीहासणे निविट्ठो व पायवीढंमि । जिट्ठो अन्नयरो वा गणहारी कहइ बीआए ॥ ९ ॥
 संखाईएऽवि भवे साहइ जं वा परो उ पुच्छिज्जा । ण य णं अणाइसेसी वियाणई एस छउमत्थो ॥ ५, ९० ॥ तं दिव्व देवघोसं सोऊणं माणुसा तहिं तुट्ठा । अहो जण्णिण एण जट्टं देवा किर
 आगया इहइं ॥ १ ॥ एक्कारसवि गणहरा सब्बे उण्णयविसालकुलवंसा । पावाएँ मांज्झमाएँ समोसढा जन्नवाडम्मि ॥ २ ॥ पढमित्थ इंदभूई बिइओ उण होइ अग्गिभूइत्ति । तइए य वाउ-
 भूई तओ वियत्ते सुहम्मे य ॥ ३ ॥ मंडियमोरियपुत्ते अकंपिए चेव अयलभाया य । मेयज्जे य पभासे गणहरा होंति वीरस्स ॥ ४ ॥ जंकारण णिक्खमणं वोच्छं एएसिं आणुपुब्वीए ।
 तित्थं च सुहम्माओ णिरवच्चा गणहरा सेसा ॥ ५ ॥ जीवे कम्मे तज्जीव भूय तारिसय बंधमोक्खे य । देवा णेरइए या पुण्णे परलोय णेव्वाणे ॥ ६ ॥ पंचण्हं पंच सया अद्धुट्ठ सया य होंति
 दुण्ह गणा । दोण्हं तु जुयलयाणं तिसओ तिसओ भवे गच्छो ॥ ७ ॥ सोऊण कीरमार्णी महिमं देवेहिं जिणवरिंदस्स । अह एइ अहम्माणी अमरिसिओ इंदभूइत्ति ॥ ८ ॥ आभट्ठो य
 जिणेणं जाइजरामरणविप्पमुक्केणं । णामेण य गोत्तेण य सब्बणूसव्वदरिसीणं ॥ ९ ॥ किं मन्नि अत्थि जीवो उआहु नत्थित्ति संसओ तुज्झं । वेयपयाण य अत्थं न याणसी तेसिमो अत्थो
 ॥ ६०० ॥ छिण्णंमि संसयंमी जिणेण जरमरणविप्पमुक्केणं । सो समणो पब्वइओ पंचहिं सह खंडियसएहिं ॥ १ ॥ तं पव्वइयं सोउं बितिओ आगच्छई अमरिसेणं । वच्चामि णमाणेमी
 पराजिणित्ताण तं समणं ॥ २ ॥ आभट्ठो ० ॥ ३ ॥ किं मण्णि अत्थि कम्मं उदाहु णत्थित्ति संसओ तुज्झं । वेयपयाण य अत्थं ण जाणसी तेसिमो अत्थो ॥ ४ ॥ छिण्णंमि ० ॥ ५ ॥ ते
 पब्वइए सोउं तइओ आगच्छई जिणसगासं । वच्चामि ण वंदामी वंदित्ता पज्जुवासामि ॥ ६ ॥ आभट्ठो ० ॥ ७ ॥ तज्जीवतस्सरीरंति संसओ णवि य पुच्छसे किंचि । वेयपयाण य अत्थं
 ण जाणसी तेसिमो अत्थो ॥ ८ ॥ छिण्णंमि ० ॥ ९ ॥ ते पब्वइए सोउं वियत्तो आगच्छई जिणसगासं । वच्चामि ण वंदामी वंदित्ता पज्जुवासामि ॥ ६१० ॥ आभट्ठो ० ॥ १ ॥ किं मण्णि
 पंच भूया अत्थि नत्थित्ति संसओ तुज्झं । वेयपयाण य अत्थं ण जाणसी तेसिमो अत्थो ॥ २ ॥ छिण्णंमि ० ॥ ३ ॥ ते पब्वइए सोउं सुहमो ० ॥ ४ ॥ आभट्ठो ० ॥ ५ ॥ किं मण्णि
 इह भवंमि सो तारिसो परभवेऽवि ? । वेयपयाण य अत्थं ण जाणसी तेसिमो अत्थो ॥ ६ ॥ छिण्णंमि ० ॥ ७ ॥ ते पब्वइए सोउं मंडिओ ० ॥ ८ ॥ आभट्ठो ० ॥ ९ ॥ किं मन्नि बंधमोक्खा
 अत्थि ण अत्थित्ति संसओ तुज्झं । वेयपयाण य अत्थं ण याणसी तेसिमो अत्थो ॥ ६२० ॥ छिण्णंमी ० ॥ १ ॥ ते पव्वइए सोउं मोरिओ ० ॥ २ ॥ आभट्ठो ० ॥ ३ ॥ किं मन्नि संति देवा
 उयाहु नत्थित्ति संसओ तुज्झं । वेयपयाण य अत्थं न याणसी तेसिमो अत्थो ॥ ४ ॥ छिण्णंमि ० अद्धुट्ठहिं सह खंडियसएहिं ॥ ५ ॥ ते पव्वइए सोउं अकंपिओ ० ॥ ६ ॥ आभट्ठो ० ॥ ७ ॥ किं
 मन्ने नेरइया ० ॥ ८ ॥ छिण्णंमि ० तीहि उ सह खंडियसएहिं ॥ ९ ॥ ते पव्वइए सोउं अयलभाया ० ॥ ६३० ॥ आभट्ठो ० ॥ १ ॥ किं मन्नि पुण्णपावं ० ॥ २ ॥ छिण्णंमि ० तीहि उ सह
 खंडियसएहिं ॥ ३ ॥ ते पव्वइए सोउं मेयज्जो ० ॥ ४ ॥ आभट्ठो ० ॥ ५ ॥ किं मण्णे परलोगो ० ॥ ६ ॥ छिण्णंमि ० तीहि उ सह खंडियसएहिं ॥ ७ ॥ ते पव्वइए सोउं पभासो आगच्छई
 जिणसगासं । वच्चामि ण वंदामी वंदित्ता पज्जुवासामि ॥ ८ ॥ आभट्ठो य जिणेणं जाइजरामरणविप्पमुक्केणं । नामेण य गोत्तेण य सब्बणूसव्वदरिसीणं ॥ ९ ॥ किं मण्णे निव्वाणं ०
 ॥ ६४० ॥ छिण्णंमि संसयंमी जिणेण जरमरणविप्पमुक्केणं । सो समणो पब्वइओ तीहि उ सह खंडियसएहिं ॥ १ ॥ समोसरणं समत्तं ॥ खेत्ते काले जम्मे गोत्तमगारछउमत्थपरियाए ।
 केवलिय आउ आगम परिणेव्वाणे तवे चेव ॥ २ ॥ मगहा गोब्बरगामे जाया तिण्णेव गोयमसगोत्ता । कोह्लागसन्निवेसे जाओ विअत्तो सुहम्मो य ॥ ३ ॥ मोरीयसन्निवेसे दो भायर मं-
 डिमोरिया जाया । अयलो य कोसलाएँ मिहिलाएँ अकंपिओ जाओ ॥ ४ ॥ तुंगीयसन्निवेसे मेयज्जो वच्छभूमिए जाओ । भगवंपिय प्पभासो रायगिहे गणहरो जाओ ॥ ५ ॥ जेट्ठा क-
 त्तिय साई सवणो हत्थुत्तरा महाओ य । रोहिणि उत्तरसाढा मिगसिर तह अस्सिणी पूसो ॥ ६ ॥ वसुभूई धणमित्ते धम्मिल धणदेव मोरिए चेव । देवे वसू य दत्ते बले य पियरो गणहराणं
 ॥ ७ ॥ पुहवि य वारुणि भदिल, विजयदेवा तहा जयंती य । णंदा य वरुणदेवा, अइभदा य मायरो ॥ ८ ॥ तिण्णिण य गोयमगोत्ता भारद्वाअग्गिवेसवासिट्ठा । कासवगोयमहारिय
 कोडिण्णदुगं च गोत्ताइं ॥ ९ ॥ पण्णा छायालीसा बायाला होइ पण्ण पण्णा अ । तेवण्ण पंचसट्ठी अडयालीसा य छायाला ॥ ६५० ॥ छत्तीसा सोलसगं अगारवासो भवे गणहराणं ।
 छउमत्थपरियागं अहक्कमं कित्तइस्सामि ॥ १ ॥ तीसा बारस दसगं बारस बायाल चउदस दुगं च । नवगं बारस दस अट्ठगं च छउमत्थपरियाओ ॥ २ ॥ छउमत्थपरियागं अगारवासं
 च वोगसित्ताणं । सव्वाउयस्स सेसं जिणपरियागं वियाणाहि ॥ ३ ॥ बारस सोलस अट्ठारसेव २ अट्ठेव । सोलस सोले तह एकवीस चोदस य सोल सोले य ॥ ४ ॥ बाणउई चउहत्तरि सत्तरि
 ११९० आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं, सनिर्युत्तरि

ततो भवे असीई य। एगं च सयं ततो तेसीई पंचणउई य ॥५॥ अट्टत्तरिं च वासा ततो बावत्तरिं च वासाई। बावट्टी चत्ता खलु सव्वगणहराउयं एयं ॥६॥ सव्वे य माहणा जच्चा, सव्वे अज्जावया विऊ। सव्वे दुवालसंगी य, सव्वे चोदसपुट्टिणो ॥७॥ परिणिव्वया गणहरा जीवन्ते णायए णव जणा उ। इंदभूई सुहम्मो य रायगिहे निव्वुए वीरे ॥८॥ मासं पाओवगया स-
 व्वेऽविय सव्वलद्विसंपण्णा। वज्जरिसहसंधयणा समचउरंसा य संठाणा ॥९॥ दव्वे अद्व अहाउय उवक्कमे देस कालकाले य। तह य पमाणे वण्णे भावे पगयं तु भावेणं ॥६६०॥ चेयणम-
 चेयणस्स व दव्वस्स ठिई उ जा चउवियप्पा। सा होइ दव्वकालो अहवा दवियं तु तं चेव ॥१॥ गइ सिद्धा भवियाया अभविय पोग्गल अणागयद्धा य। तीयद्ध तिभि काया जीवाजीव-
 ट्टिई चउहा ॥२॥ समयाऽऽवलिय मुहुत्ता दिवसमहोरत्त पक्ख मासा य। संवच्छर युग पलिया सागर ओसप्पि परियट्टा ॥३॥ नेरइयतिरियमणुयादेवाण अहाउयं तु जं जेण। निव्व-
 त्तियमण्णभवे पालेंति अहाउकालो सो ॥४॥ दुविहोवक्कमकालो सामायारी अहाउयं चेव। सामायारी तिविहा ओहे दसहा पयविभागे ॥५॥ ओहनिज्जुत्ती एत्थ पएसे भाणियच्चा।
 इच्छा मिच्छा तहाकारो, आवसिया य निसीहिया। आपुच्छणा य पडिपुच्छा, छंदणा य निमंतणा ॥६॥ उवसंपया य काले सामायारी भवे दसविहा उ। एएसिं तु पयाणं पत्तेय
 परूवणं वोच्छं ॥७॥ जइ अब्भत्थेज्ज परं कारणजाए करेज्ज से कोई। तत्थवि इच्छाकारो न कप्पइ बलाभिओगो उ ॥८॥ अब्भत्थिज्जइ (अब्भुवगयंमि) नज्जइ अब्भत्थेउं ण वट्टइ परो
 उ। अणिगूहियबलविरिएण साहुणा तौव होयव्वं ॥९॥ जइ हुज्ज तस्स अणलो कज्जस्स वियाणती ण वा वाणं। गिलाणा(गेलन्ना)इहि व हुज्जा वियावडो कारणेहिं सो ॥६७०॥ राइणियं वजेत्ता
 इच्छाकारं करेइ सेसाणं। एयं मज्झं कज्जं तुब्भे उ करेइ इच्छाए ॥१॥ अहवाऽवि विणासेतं अब्भत्थंतं च अण्ण दट्टूणं। अण्णो कोई भणेज्जा तं साहुं णिज्जरट्टीओ ॥२॥ अहयं तुब्भं
 एयं करेमि कज्जं तु इच्छकारेणं। तत्थऽवि सो इच्छं से करेइ मज्जायमूलियं ॥३॥ अहवा सयं करेन्तं किंची अण्णस्स वावि दट्टूणं। तस्सवि करेज्ज इच्छं मज्झंपि इमं करेहिति ॥४॥
 तत्थवि सो इच्छं से करेइ दीवेइ कारणं वाऽवि। इहरा अणुगहत्थं कायव्वं साहुणो किच्चं ॥५॥ अहवा णाणाईणं अट्टाए जइ करेज्ज किच्चाणं। वेयावच्चं किंची तत्थवि तेसिं भवे इच्छा
 ॥६॥ आणाबलाभिओगो णिग्गंथाणं ण कप्पइ काउं। इच्छा पउंजियच्चा सेहे राईणिए (य) तहा ॥७॥ जह जच्चबाहलाणं आसाणं जणवएसु जायाणं। सयमेव खल्लिणगहणं अह-
 वावि बलाभिओगेणं ॥८॥ पुरिसज्जाएऽवि तहा विणीयविणयंमि नत्थि अभिओगो। सेसंमि उ अभिओगो जणवयजाए जहा आसे ॥९॥ अब्भत्थणाए मरुओ वानरओ चेव होइ
 दिट्ठंतो। गुरुकरणे सयमेव उ वाणियगा दुण्णि दिट्ठंता ॥६८०॥ संजमजोए अब्भुट्टियस्स सद्धाए काउकामस्स। लाभो चेव तवस्सिस्स होइ अदीणमणसस्स ॥१॥ संजमजोए अब्भु-
 ट्टियस्स जंकिंचि वितहमायरियं। मिच्छा एतंति वियाणिऊण मिच्छत्ति कायव्वं ॥२॥ जइ य पडिक्कमियव्वं अवस्स काऊण पावयं कम्मं। तं चेव न कायव्वं तो होइ पए पडिक्कंतो
 ॥३॥ जं दुक्कडंति मिच्छा तं भुज्जो कारणं अपुरंतो। तिविहेण पडिक्कंतो तस्स खलु दुक्कडं मिच्छा ॥४॥ जं दुक्कडंति मिच्छा तं चेव निसेवए पुणो पावं। पच्चक्खमुसावाई माया-
 नियडीपसंगो य ॥५॥ मित्ति मिउमहवत्ते छत्ति य दोसाण छायणे होइ। मित्ति य मेराएँ ठिओ दुत्ति दुगुंछामि अप्पाणं ॥६॥ कत्ति कडं मे पावं डत्ति य डेवेमि तं उवसमेणं। एसो
 मिच्छादुक्कडपयक्खरत्थो समासेणं ॥७॥ कप्पाकप्पे परिणिट्टियस्स ठाणेसु पंचसु ठियस्स। संजमतवड्ढगस्स उ अविकप्पेणं तहाकारो ॥८॥ वायणपडिसुणणाए उवएसे सुत्तअत्थ-
 कहणाए। अवितहमेयंति तहा पडिसुणणाए तहक्कारो ॥९॥ जस्स य इच्छाकारो मिच्छाकारो य परिचिया दोऽवि। तइओ य तहक्कारो न दुल्लभा सोग्गई तस्स ॥६९०॥ आव-
 स्सियं च णितो जं च अइंतो निसीहियं कुणइ। एयं इच्छं नाउं गणिवर! तुब्भंतिए णिउणं ॥१॥ आवस्सियं च णितो जं च अइंतो णिसीहियं कुणइ। वंजणमेयं तु दुहा अत्थो पुण
 होइ सो चेव ॥२॥ एगग्गस्स पसंतस्स न होंति इरियाइया गुणा होंति। गंतव्वमवस्सं कारणंमि आवस्सिया होइ ॥३॥ आवस्सिया उ आवस्सएहिं सव्वेहिं जुत्तजोगिस्स। मणवय-
 णकायगुत्तिदियस्स आवस्सिया होइ ॥४॥ सेज्जं ठाणं च जहिं चेएइ तहिं निसीहिया होइ। जम्हा तत्थ निसिद्धो तेणं तु निसीहिया होइ ॥५॥ सेज्जं ठाणं च जदा चेतति तया निसी-
 हिया होइ। जम्हा तदा निसेहो निसेहमइया य सा जेणं ॥६॥ आवस्सियं च णितो जं च अइंतो निसीहियं कुणइ। सेज्जाणिसीहियाए णिसीहियाअभिमुहो होइ ॥१२०॥ भाव्यं। जो
 होइ निसिद्धप्पा निसीहिया तस्स भावओ होइ। अणिसिद्धस्स निसीहिय केवलमेत्तं हवइ सद्दो ॥१॥ आवस्सियंमि जुत्तो नियमणिसिद्धोत्ति होइ नायव्वो। अहवाऽवि णिसिद्धप्पा
 णियमा आवस्सए जुत्तो ॥१२२॥ भाव्यं। आपुच्छणा उ कज्जे पुव्वनिसिद्धेण होइ पडिपुच्छा। पुव्वगहिएण छंदण णिमंतणा होयऽगहिएणं ॥७॥ उवसंपया य तिविहा णाणे तह दंसणे चरित्ते
 य। दंसणणाणे तिविहा दुविहा य चरित्तअट्टाए ॥८॥ वत्तणा संधणा चेव, गहणे सुत्तत्थतदुभए। वेयावच्चे य खमणे, काले आवकहाइ य ॥९॥ संदिट्टो संदिट्टस्स चेव संपज्जई उ
 एमाई। चउभंगो एत्थं पुण पढमो भंगो हवइ सुद्धो ॥७००॥ अथिरस्स पुव्वगहियस्स वत्तणा जं इहं थिरीकरणं। तस्सेव पएसंतरणट्टस्सऽणुसंधणा घडणा ॥१॥ गहणं तप्पढमतया
 ११९१ आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं, विर्युक्ति

सुप्ते अत्ये तदुमए चैव । अत्यग्गहणंमि पायं एस विही होइ णायव्वो ॥ २ ॥ मज्जण णिसेज्ज अक्खा कितिकम्मुस्सग्ग वंदणं जेट्ठे । भासंतो होइ जेट्ठो नो परियाएण तो वंदे ॥ ३ ॥
ठायं (णं) पमज्जिऊणं दोण्णि निसिजाउ होंति कायव्वा । एगा गुरुणो भणिया वितिया पुण होति अक्खाणं ॥ ४ ॥ दो चैव मत्तगाइं खेले तह काइयाएँ बीयं तु । जावइया य सुणेंती
सव्वेऽपि य ते तु वंदंति ॥ ५ ॥ सव्वे काउस्सग्गं करंति सव्वे पुणोऽपि वंदंति । णासण्णे णाइदूरे गुरुवयणपडिच्छगा होंति ॥ ६ ॥ णिदाविगहापरिवज्जिएहिं गुत्तेहिं पंजलिउडेहिं । भत्तिबहु-
माणपुब्वं उवउत्तेहिं सुणेयव्वं ॥ ७ ॥ अभिकंखंतैहिं सुहासियाइं वयणाइं अत्थसाराइं । विम्हियमुहेहिं हरिसागएहिं हरिसं जणंतैहिं ॥ ८ ॥ गुरुपरिओसगएणं गुरुभत्तीए तहेव विणएणं ।
इच्छियसुत्तथाणं खिप्पं पारं समुवयंति ॥ ९ ॥ वक्खाणसमत्तीए जोगं काऊण काइयाइंणं । वंदंति तओ जेट्ठं अण्णे पुब्वं चिय भणंति ॥ १० ॥ चोएति जइ हु जिट्ठो कहिंचि सुत्त-
त्थधारणाविगलो । वक्खाणलद्धिहीणो निरत्थयं वंदणं तंमि ॥ ११ ॥ अह वयपरिआएहिं लहुगोऽपि हु भासओ इहं जेट्ठो । रायणियवंदणे पुण तस्सवि आसायणा भंते ! ॥ १२ ॥ जइवि वय-
माइएहिं लहुओ सुत्तत्थधारणापडुओ । वक्खाणलद्धिमंतो (जो) सो चिय इह घेप्पई जेट्ठो ॥ ३ ॥ आसायणावि णेवं पडुच्च जिणवयणभासयं (णं) जम्हा । वंदणयं राइणिए तेण गुणे-
णपि सो चैव ॥ ४ ॥ न वओ एत्थ पमाणं न य परियाओऽपि णिच्छयमएणं । ववहारओ उ जु (नि) जइ उभयनयमयं पुण पमाणं ॥ ५ ॥ निच्छयओ दुन्नेयं को भावे कम्मि वट्ठई
समणो ? । ववहारओ उ कीरइ जो पुब्वठिओ चरित्तंमि ॥ ६ ॥ ववहारोऽपि हु बलवं जं छउमत्थंपि वंदई अरहा । जा होइ अणाभिण्णो जाणंतो धम्मयं एयं ॥ १२३ ॥ एत्थ उ जिणवय-
णाओ सुत्तासायणबहुत्तदोसाओ । भासंतजेट्ठगस्स उ कायव्वं होइ किइकम्मं ॥ ७ ॥ दुविहा य चरित्तंमी वेयावच्चे तहेव खमणे य । णियगच्छा अण्णंमि य सीयणदोसाइणा होति
॥ ८ ॥ इत्तरियाइविभासा वेयावच्चे तहेव खमणे य । अविगिट्ठ विगिट्ठंमि अ गणिणो गच्छस्स पुच्छाए ॥ ९ ॥ उवसंपन्नो जं कारणं तु तं कारणं अपूरंतो । अहवा समाणियम्मी सारणया
वा विसग्गो वा ॥ १० ॥ इत्तरियंपि न कप्पइ अविदिभं खलु परोग्गहाइंसुं । चिट्ठित्तु निसीइत्तु व तइयव्वयरक्खणट्टाए ॥ १ ॥ एवं सामायारी कहिया दसहा समासओ एसा । संजम-
तवड्ढयाणं निग्गंथाणं महरिसीणं ॥ २ ॥ एयं सामायारिं जुंजंता चरणकरणमाउत्ता । साहु खवंति कम्मं अणेगभवसंचियमणंतं ॥ ३ ॥ अज्झवसाण निमित्ते आहारे वेयणा पराघाए ।
फासे आणापाणू सत्तविहं झिज्जए आउं ॥ ४ ॥ दंडकससत्थरज्जू अग्गी उदगपडणं विसं वाला । सीउण्हं अरइ भयं खुहा पिवासा य वाही य ॥ ५ ॥ मुत्तपुरीसनिरोहे जिण्णाजिण्णे य
भोयणे बहुसो । घंसणघोलणपीलण आउस्स उवक्कमा एए ॥ ६ ॥ निद्धूमगं च गामं महिलाथूभं च सुण्णयं दट्ठुं । णीयं च कागा ओलेन्ति जाया भिक्खुस्स हरहरा ॥ ७ ॥ निम्म-
च्छियं महं पायडो खज्जगावणो सुण्णो । जायंगणे पसुत्ता पउत्थवइया य मत्ता य ॥ ८ ॥ कालेण कओ कालो अम्हं सज्झायदेसकालंमि । तो तेण हओ कालो अकालि कालं करंतेणं
॥ ९ ॥ दुविहो पमाणकालो दिवसपमाणं च होइ राई अ । चउपोरिसिओ दिवसो राती चउपोरिसी चैव ॥ १० ॥ पंचण्हं वण्णाणं जो खलु वण्णेण कालओ वण्णो । सो होइ वण्णकालो
वण्णिज्जइ जो व जं कालं ॥ १ ॥ सादीसपज्जवसिओ चउभंगविभागभावणा एत्थं । ओदइयादीयाणं तं जाणसु भावकालं तु ॥ २ ॥ एत्थं पुण अहिगारो पमाणकालेण होइ नायव्वो ।
खेत्तंमि कंमि काले विभासियं जिणवरिंदेणं ? ॥ ३ ॥ वइसाहसुद्धएक्कारसीएँ पुब्वण्हदेसकालंमि । महसेणवणुज्जाणे अणंतर परंपरं सेसं ॥ ४ ॥ खइयंमि वट्ठमाणस्स निग्गयं भयवओ
जिणिंदस्स । भावे खओवसमियंमि वट्ठमाणेहिं तं गहियं ॥ ५ ॥ दब्बाभिलावचिंधे वेए धम्मत्थभोगभावे य । भावपुरिसो उ जीवो भावे पगयं तु भावेणं ॥ ६ ॥ णिक्खेवो कारणंमी चउ-
व्विहो दुविहु होइ दब्बंमि । तहव्वमण्णदव्वे अहवावि णिमित्तनेमित्ती ॥ ७ ॥ समवाइअसमवाई छव्विह कत्ता य कम्म करणं च । तत्तो य संपयाणापयाण तह संनिहाणे य ॥ ८ ॥ दुविहं
च होइ भावे अपसत्थ पसत्थगं च अपसत्थं । संसारस्सेगविहं दुविहं तिविहं च नायव्वं ॥ ९ ॥ अस्संजमो य एक्को अण्णाणं अविरई य दुविहं तु । अण्णाणं मिच्छत्तं च अविरती चैव
तिविहं तु ॥ १० ॥ होइ पसत्थं मोक्खस्स कारणं एगदुविहतिविहं वा । तं चैव य विवरीयं अहिगार पसत्थएणेत्यं ॥ १ ॥ तित्थयरो किं कारण भासइ सामाइयं तु अज्झयणं ? ।
तित्थयरणामगोत्तं कम्मं मे (से) वेइयव्वंति ॥ २ ॥ तं च कंहं वेइज्जइ ? अगिलाए धम्मदेसणाईहिं । बज्जइ तं तु भगवओ तइयभवोसक्कइत्ताणं ॥ ३ ॥ णियमा मणुयगतीए इत्थी पुरि-
सेयरोव्व सुहलेसो । आसेवियबहुलेहिं वीसाए अण्णयरएहिं ॥ ४ ॥ गोयममाई सामाइयं तु किं कारणं निसामिन्ति ? । णाणस्स तं तु सुंदरमंगुलभावाण उवलद्धी ॥ ५ ॥ होइ पवित्ति-
निवित्ती संजमतव पावकम्मअग्गहणं । कम्मविवेगो य तहा कारणमसरीरया चैव ॥ ६ ॥ कम्मविवेगा असरीरया य असरीरया अणाबाहा । होअणबाहनिमित्तं अवेयणमणाउलो निर(रु)ओ
॥ ७ ॥ निरुयत्ताए अयलो अयलत्ताए य सासओ होइ । सासयभावमुवगओ अद्वाबाहं सुहं लहइ ॥ ८ ॥ पच्चयणिक्खेवो खलु दब्बंमी तत्तमासगाईओ । भावंमि ओहिमाई तिविहो
पगयं तु भावेणं ॥ ९ ॥ केवलणाणित्ति अहं अरहा सामाइयं परिकहेइ । तेसिंपि पच्चओ खलु सव्वण्णू तो निसामिन्ति ॥ १० ॥ नामं ठवणा दविए सरिसे सामण्णलक्खणाऽऽगारे । गइरागइ
णाणत्ती निमित्त उप्पाय विगमे य ॥ १ ॥ वीरिय भावे य तहा लक्खणमेयं समासओ भणियं । अहवावि भावलक्खण चउव्विहं सहहणमाई ॥ २ ॥ सहहण जाणणा खलु विरती (२९८)
११९२ आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं, सनिर्यु-

मीसा य लक्खणं कहए। तेऽवि णिसामिंति तहा चउलक्खणसंजुयं चेव ॥ ३ ॥ नेगमसंगहववहारुज्जुसुए चेव होइ बोद्धवे। सहे य समभिरूढे एवंभूए य मूलणया ॥ ४ ॥ नेगेहिं
 माणेहिं मिणइत्ती नेगमस्स नेरुत्ती। सेसाणंपि णयाणं लक्खणमिणमो सुणह वोच्छं ॥ ५ ॥ संगहियपिंडियत्थं संगहवयणं समासओ बेति। वच्चइ विणिच्छियत्थं ववहारो सव्वदवेसुं
 ॥ ६ ॥ पच्चुप्पणगाही उज्जुसुओ नयविही मुणेयव्वो। इच्छइ विसेसियतरं पच्चुप्पणं णओ सद्दो ॥ ७ ॥ वत्थूओ संकमणं होइ अवत्थू णए समभिरूढे। वंजणमत्थतदुभयं एवंभूओ
 विसेसेइ ॥ ८ ॥ एकेको य सयविहो सत्त णयसया हवंति एमेव। अण्णोऽवि य आएसो पंचेव सया नयाणं तु ॥ ९ ॥ एएहिं दिट्ठिवाए परूवणा सुत्तअत्थकहणा य। इह पुण अणब्भु-
 वगमो अहिगारो तिहि उ ओसन्नं ॥ ७६० ॥ णत्थि णएहिं विहूणं सुत्तं अत्थो व जिणमए किंचि। आसज उ सोयारं णए णयावेसारओ बूया ॥ १ ॥ मूढनइयं सुयं कालियं तु ण णया
 समोयरंति इहं। अपुहुत्ते समोयारो नत्थि पुहुत्ते समोयारो ॥ २ ॥ जावंति अजवइरा अपुहुत्तं कालियाणुओगस्स। तेणारेण पुहुत्तं कालियसुअ दिट्ठिवाए य ॥ ३ ॥ तुंबवणसंनिवेसाउ
 निग्गयं पिउसगासमल्लीणं। छम्मासियं छसु जयं माऊय समन्नियं वंदे ॥ ४ ॥ जो गुज्जाएहिं बालो णिमंतिओ भोयणेण वासंते। नेच्छइ विणीयविणओ तं वइररिसिं णमंसामि ॥ ५ ॥
 उज्जेणीए जो जंभगेहि आणक्खिउण थुयमहिओ। अक्खीणमहाणसियं सीहगिरिपसंसियं वंदे ॥ ६ ॥ जस्स अणुन्नाए वायगत्तणे दसपुरंमि नयरंमि। देवेहिं कया महिमा पयाणुसारिं
 नमंसामि ॥ ७ ॥ जो कन्नाइ धणेण य निमंतिओ जुव्वणंमि गिहवइणा। नयरम्मि कुसुमनामे तं वइररिसिं नमंसामि ॥ ८ ॥ जेणुद्धरिया विजा आगासगमा महापरिन्नाओ। वंदाभि
 अजवइरं अपच्छिमो जो सुअहराणं ॥ ९ ॥ भणइ अ आहिंडिजा जंबुहीवं इमाइ विजाए। गंतुं च माणुसनगं विजाए एस मे विसओ ॥ ७७० ॥ भणइ अ धारेयवा नहु दायवा इमा
 मए विजा। अप्पिडिडया उ मणुआ होहिंति अओ परं अन्ने ॥ १ ॥ माहेसरीउ सेसा पुरिअं नीआ हुआसणगिहाओ। गयणयलमइवइत्ता वइरेण महाणुभागेण ॥ २ ॥ अपुहुत्ते अणुओगो
 चत्तारि दुवार भासई एगो। पुहयाणुओगकरणे ते अत्थ तओ उ वुच्छिन्ना ॥ ३ ॥ देविदवंदिएहिं महाणुभागेहिं रक्खिअज्जेहिं। जुगमासज विभत्तो अणुओगो तो कओ चउहा ॥ ४ ॥
 माया य रुदसोमा पिआ य नामेण सोमदेवुत्ति। भाया य फग्गुरक्खिय तोसलिपुत्ता य आयरिया ॥ ५ ॥ निज्जवण भइगुत्ते वीसुं पढणं च तस्स पुव्वगयं। पव्वाविओ य भाया रक्खि-
 अखवणेहिं जणओ य ॥ ६ ॥ कालियसुयं च इसिभासियाइं तइओ य सूरपण्णत्ती। सव्वो य दिट्ठिवाओ चउत्थओ होइ अणुओगो ॥ १२४ ॥ भा०। जं च महाकप्पसुयं जाणि य सेसाणि
 छेयसुत्ताणि। चरणकरणाणुओगोत्ति कालियत्थे उवगयाइं ॥ ७ ॥ बहुरय पएस अव्वत्त समुच्छ दुग तिग अब्बिदिया चेव। सत्तेए णिण्हगा खलु तित्थंमि उ वद्धमाणस्स ॥ ८ ॥ बहुरय
 जमालिपभवा जीवपएसा य तीसगुत्ताओ। अव्वत्ताऽऽसाढाओ सामुच्छेयाऽऽसमित्ताओ ॥ ९ ॥ गंगाओ दोकिरिया छलुगा तेरासियाण उप्पत्ती। थेरा य गोट्टमाहिल पुट्टमबद्धं परू-
 विति ॥ ७८० ॥ सावत्थी उसभपुरं सेयविया मिहिल उल्लुगातीरं। पुरिमंतरंजि दसपुर रहवीरपुरं च नगराइं ॥ १ ॥ चोइस सोलस वासा चोइस वीसुत्तरा य दोण्णि सया। अट्टावीसा य
 दुवे पंचेव सया उ चोयाला ॥ २ ॥ पंचसया चुलसीया छच्चेव सया णवोत्तरा होंति। णाणुप्पत्तीय दुवे उप्पण्णा णिबुए सेसा ॥ ३ ॥ चोइस वासाणि तया जिणेण उप्पाडियस्स णाणस्स।
 तो बहुरयाण दिट्ठी सावत्थीए समुप्पण्णा ॥ १२५ ॥ भाष्यं। जेट्टा सुदंसण जमालिऽणोज्ज सावत्थि तेंदुगुजाणे। पंचसया य सहस्सं ढंकेण जमालि मोत्तूणं ॥ ६ ॥ सोलस वासाणि तया जिणेण
 उप्पाडियस्स णाणस्स। जीवपएसियदिट्ठी उसभपुरंमी समुप्पण्णा ॥ ७ ॥ रायगिहे गुणसिलए वसु चोइसपुव्वितीसगुत्ताओ। आमलकप्पा णयरी मित्तिसिरी कूरपिउडाइ ॥ ८ ॥ चोइ
 दोवाससया तइया सिद्धिं गयस्स वीरस्स। अब्बत्तयाण दिट्ठी सेयवियाए समुप्पन्ना ॥ ९ ॥ सेयवि पौलासाढे जोगे तद्विवसहिययसूले य। सोहंमि णलिणगुम्मे रायगिहे मुरियबलभइ
 ॥ १३० ॥ वीसा दोवाससया तइया सिद्धिं गयस्स वीरस्स। सामुच्छेइयदिट्ठी मिहिलपुरीए समुप्पण्णा ॥ १ ॥ मिहिलाए लच्छिधरे महगिरि कोडिण्ण आसमित्ते य। नेउणियाणुप्पवाए
 रायगिहे खंडरक्खा य ॥ २ ॥ अट्टावीसा दो वाससया तइया सिद्धिं गयस्स वीरस्स। दोकिरियाणं दिट्ठी उल्लुगतीरे समुप्पण्णा ॥ ३ ॥ णइखेडजणवउल्लुग महगिरि धणगुत्त अज्जगंगे
 य। किरिया दो रायगिहे महातवोतीर मणिणाओ ॥ ४ ॥ पंचसया चोयाला तइया सिद्धिं गयस्स वीरस्स। पुरिमंतरंजियाए तेरासियदिट्ठी उववण्णा ॥ ५ ॥ पुरिमंतरंजि भूयगुह बल-
 सिरि सिरिगुत्त रोहगुत्ते य। परिवाय पोट्टसाले घोसण पडिसेहणा वाए ॥ ६ ॥ विच्छुय सप्पे मूसग मिई वराही य कागि पोआई। एयाहिं विजाहिं सो उ परिव्वायओ कुसलो ॥ ७ ॥
 मोरी नउलि बिराली सीही वग्घी य उलुगि ओवाई। एयाओ विजाओ गेण्ह परिव्वायमहणीओ ॥ ८ ॥ सिरिगुत्तेणऽवि छलुगो छम्मास विकडिडऊण वायजिओ। आहरण कुत्तियावण
 चोयालसएण पुच्छाणं ॥ ९ ॥ वाए पराजिओ सो निव्विसओ कारिओ नरिंदेणं। घोसावियं च णगरे जयइ जिणो वद्धमाणोत्ति ॥ १४० ॥ पंचसया चुलसीया तइया सिद्धिं गयस्स वीरस्स।
 अब्बद्वियाण दिट्ठी दसपुरनयरे समुप्पण्णा ॥ १ ॥ दसपुरनगरुच्छुधरे अज्जरक्खिय पूसमित्तियगं च। गोट्टामाहिल नवमट्टमेसु पुच्छा य विंझस्स ॥ २ ॥ पुट्टो जहा अबद्धो कंचुइणं
 ११९३ आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं, निर्युक्ति

कंचुओ समन्नेइ । एवं पुट्टमबद्धं जीवं कम्मं समन्नेइ ॥ ३ ॥ पच्चक्खाणं सेयं अपरिमाणेण होइ कायबं । जेसिं तु परीमाणं तं दुट्ठं आससा होइ ॥ ४ ॥ छ्वाससयाइं नवुत्तराइं तइया सिद्धिं
 गयस्स वीरस्स । तो बोडियाण दिट्ठी रहवीरपुरे समुप्पणा ॥ ५ ॥ रहवीरपुरं नयरं दीवगमुज्जाणमज्जकण्हे य । सिवभूइस्सुवहिम्मि य पुच्छा थेराण कहणा य ॥ ६ ॥ ऊहाए पणत्तं
 बोडियसिवभूइउत्तराहिं इमं । मिच्छादंसणमिणमो रहवीरपुरे समुप्पणं ॥ ७ ॥ बोडियसिवभूइओ बोडियलिं गस्स होइ उप्पत्ती । कोडिण्णकोट्टवीरा परंपराफासमुप्पणा ॥ १४८ ॥ भाष्यं । एवं
 एए कहिया ओसप्पिणीए उ निण्हया सत्त । वीरवरस्स पवयणे सेसाणं पवयणे णत्थि ॥ ७८४ ॥ मोत्तूणमेसिमिकं सेसाणं जावजीविया दिट्ठी । एक्केक्कस्स य एत्तो दो दो दोसा मुणेयवा ॥ ५ ॥
 सत्तेया दिट्ठीओ जाइजरामरणगब्भवसहीणं । मूलं संसारस्स उ भवंति निग्गंथरूवेणं ॥ ६ ॥ पवयणनीहूयाणं जं तेसिं कारियं जहिं जत्थ । भज्जं परिहरणाए मूले तह उत्तरगुणे य ॥ ७ ॥
 मिच्छादिट्ठीआणं जं तेसिं कारियं जहिं जत्थ । सबंपि तयं सुद्धं मूले तह उत्तरगुणे य ॥ ८ ॥ तवसंजमो अणुमओ निग्गंथं पवयणं च ववहारो । सद्दुज्जुसुयाणं पुण निव्वाणं संजमो
 चव ॥ ९ ॥ आया खलु सामइयं पच्चक्खायंतओ हवइ आया । तं खलु पच्चक्खाणं आवाए सब्बदवाणं ॥ ७९० ॥ सावज्जजोगविरओ, तिगुत्तो छसु संजओ । उवउत्तो जयमाणो, आया
 सामाइयं होइ ॥ १४९ ॥ भाष्यं । पढम्मि सब्बजीवा विइए चरिमे य सब्बदवाइं । सेसा महव्वया खलु तदेक्कदेसेण दव्वाणं ॥ १ ॥ जीवो गुणपडिवन्नो णयस्स दव्वट्टियस्स सामइयं । सो चव पज्ज-
 वणयट्टियस्स जीवस्स एस गुणो ॥ २ ॥ उप्पज्जंति वयंति अ परिणम्मंति अ गुणा ण दवाइं । दव्वप्पभवा य गुणा ण गुणप्पभवाइं दवाइं ॥ ३ ॥ जं जं जे जे भावे परिणमइ पओगवी-
 ससा दव्वं । तं तह जाणेइ जिणो अपज्जवे जाणणा णत्थि ॥ ४-५ ॥ सामाइयं च तिविहं सम्मत्त सुयं तहा चरित्तं च । दुविहं चव चरित्तं अगारमणगारियं चव ॥ ६ ॥ अज्झयणंपि य
 तिविहं सुत्ते अत्थे य तदुभए चव । सेसेसुवि अज्झयणेषु होइ एसेव निज्जुत्ती ॥ १५० ॥ भाष्यं । जस्स सामाणिओ अप्पा, संजमे नियमे तवे । तस्स सामाइयं होइ, इइ केवलिभासियं ॥ ७ ॥
 जो समो सब्बभूएसु, तसेसुं थावरेसु अ । तस्स सामाइयं होइ, इइ केवलिभासियं ॥ ८ ॥ सावज्जजोगपरिवज्जणट्टा, सामाइयं केवलियं पसत्थं । गिहत्थधम्मा परमंति णच्चा, कुज्जा बुहो
 आयहियं परत्थं ॥ ९ ॥ सबंपि भाणिऊणं विरई खलु जस्स सब्बिया णत्थि । सो सब्बविरइवाइं चुक्कइ देसं च सब्बं च ॥ ८०० ॥ सामाइयंमि उ कए समणो इव सावओ हवइ जम्हा ।
 एएण कारणेणं बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥ १ ॥ जीवो पमायबहुलो बहुसोवि अ बहुविहेसु अत्थेसुं । एएण कारणेणं बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥ २ ॥ जो णवि वट्टइ रागे णवि दोसे दोण्ह
 मज्झयारंमि । सो होइ उ मज्झत्थो सेसा सब्बे अमज्झत्था ॥ ३ ॥ खित्तदिसाकालगइभवियसण्णिसासदिट्ठिमाहारे । पज्जत्तसुत्तजम्मठितिवेयसण्णाकसायाऊ ॥ ४ ॥ णाणे जोगुवओगे
 सरीरसंठाणसंघयणमाणे । लेसा परिणामे वेयणा समुग्घायकम्मे अ ॥ ५ ॥ णिब्विट्ठणमुब्वट्टे आसवकरणे तहा अलंकारे । सयणासणठाणत्थे चंक्कमंते अ किं कहियं ? ॥ ६ ॥ सम्मसुआणं
 लंभो उट्ठं च अहे अ तिरिअलोए अ । विरई मणुस्सलोए विरयाविरई अ तिरिएसुं ॥ ७ ॥ पुव्वपडिवन्नगा पुण तीसुवि लोएसु निअमओ तिण्हं । चरणस्स दोसु निअमा भयणिज्जा
 उट्ठलोगंमि ॥ ८ ॥ नामं ठवणा दविए खेत्त दिसा तावखेत्त पन्नवए । सत्तमिया भावदिसा परूवणा तस्स कायव्वा (सा होयट्टारसविहा उ) ॥ ९ ॥ पुव्वाइंआसु महादिसासु पडि-
 वज्जमाणओ होइ । पुव्वपडिवन्नओ पुण अन्नयरीए दिसाए उ ॥ ८१० ॥ सम्मत्तस्स सुयस्स य पडिवत्ती छव्विहंमि कालंमि । विरइं विरयाविरइं पडिवज्जइ दोसु तिसु वावि ॥ १ ॥
 चउसुवि गतीसु णियमा सम्मत्तसुयस्स होइ पडिवत्ती । मणुएसु होइ विरती विरयाविरई य तिरिएसुं ॥ २ ॥ भवसिद्धिओ उ जीवो पडिवज्जइ सो चउण्हमण्णयरं । पडिसेहो पुण अस्स-
 णि मीसए सण्णि पडिवज्जे ॥ ३ ॥ ऊसासगणीसासगमीसग पडिसेह दुविह पडिवण्णो । दिट्ठीइ दो णया खलु ववहारो निच्छओ चव ॥ ४ ॥ आहारओ उ जीवो पडिवज्जइ सो चउण्हम-
 ण्णयरं । एमेव य पज्जत्तो सम्मत्तसुए सिया इयरो ॥ ५ ॥ णिदाए भावओऽवि य जागरमाणो चउण्हमण्णयरं । अंडयपोयजराउय तिग तिग चउरो भवे कमसो ॥ ६ ॥ उक्कोसयट्टितीए
 पडिवज्जंते य णत्थि पडिवण्णो । अजहण्णमणुक्कोसे पडिवज्जंते य पडिवण्णे ॥ ७ ॥ चउरोऽवि तिविहवेदे चउसुवि सण्णासु होइ पडिवत्ती । हेट्टा जहा कसाएसु वण्णियं तह य इहयंपि
 ॥ ८ ॥ संखिज्जाऊ चउरो भयणा सम्मसुयऽसंखवासाणं । ओहेण विभागेण य नाणी पडिवज्जइ चउरो ॥ ९ ॥ चउरोऽवि तिविहजोगे उवओगदुगंमि चउर पडिवज्जे । ओरालिए चउक्कं
 सम्मसुय विउव्विए भयणा ॥ ८२० ॥ सब्बेसुवि संठाणेषु लहइ एमेव सब्बसंघयणे । उक्कोसजहण्णं वज्जिऊण माणं लहे मणुओ ॥ १ ॥ सम्मत्तसुयं सब्बासु लहइ सुद्धासु तिसु य चारित्तं ।
 पुव्वपडिवण्णगो पुण अण्णयरीए उ लेसाए ॥ २ ॥ बड्ढंते परिणामे पडिवज्जइ सो चउण्हमण्णयरं । एमेवऽवट्टियंमिवि हायंति न किंचि पडिवज्जे ॥ ३ ॥ दुविहाए वेयणाए पडिवज्जइ
 सो चउण्हमण्णयरं । असमोहओऽवि एमेव पुव्वपडिवण्णए भयणा ॥ ४ ॥ दव्वेण य भावेण य निब्विड्ढंतो चउण्हमण्णयरं । नरएसु अणुब्वट्टे दुगं चउक्कं सिया उ उब्वट्टे ॥ ५ ॥ तिरिएसु
 अणुब्वट्टे तिगं चउक्कं सिया उ उब्वट्टे । मणुएसु अणुब्वट्टे चउरो ति दुगं तु उब्वट्टे ॥ ६ ॥ देवेषु अणुब्वट्टे दुगं चउक्कं सिया उ उब्वट्टे । उब्वट्टमाणओ पुण सब्बोऽवि न किंचि पडिवज्जे ॥ ७ ॥

११९४ आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं, निर्युक्ति

णीसवमाणो जीवो पडिवज्जइ सो चउण्हमण्णयरं । पुव्वपडिवण्णओ पुण सिय आसवओ व णीसवओ ॥ ८ ॥ उम्मुक्कमणुम्मुक्के उम्मुंचंते य केसऽलंकारे । पडिवज्जेजऽन्नयरं सयणाईसुं पि
 एमेव ॥ ९ ॥ सव्वगयं सम्मत्तं सुए चरित्ते ण पज्जवा सब्बे । देसविरइं पडुच्चा दोण्हवि पडिसेहणं कुज्जा ॥ ८३० ॥ माणुस्स खेत्त जाई कुल रूवारोग्गमाउयं बुद्धी । सवणोग्गह सद्धा संजमो
 य लोगंमि दुलहाइं ॥ १ ॥ चोह्दग पासग धण्णे जूए रयणे य सुमिण चक्के य । चम्म जुगे परमाणू दस दिट्ठन्ता मणुयलंभे ॥ २ ॥ पुव्वंते होज्ज जुगं अवरंते तस्स होज्ज समिला उ । जुग
 छिड्डंमि पवेसो इय संसइओ मणुयलंभो ॥ ३ ॥ जह समिला पब्भट्ठा सागरसलिले अणोरपारंमि । पविसेज्ज जुग्गच्छिड्डं कहवि भमंती भमंतंमि ॥ ४ ॥ सा चंडवायवीचीपणुहिया अवि
 लभेज्ज युगच्छिड्डं । ण य माणुसाउ भट्ठो जीवो पडिमाणुसं लहइ ॥ ५ ॥ इय दुल्लहलंभं माणुसत्तणं पाविऊण जो जीवो । ण कुणइ पारत्तहियं सो सोयइ संकमणकाले ॥ ६ ॥ जह
 वारिमज्झलूढो गयवरो मच्छउव्व गलगहिओ । वग्गुरपडिउव्व मओ संवट्ठइओ जह व पक्खी ॥ ७ ॥ सो सोयइ मच्चुजरासमोच्छुओ तुरियणिहपक्खित्तो । तायारमविंदंतो कम्मभरपणो
 ह्तिओ जीवो ॥ ८ ॥ काऊणमणेगाइं जम्ममरणपरियट्ठणसयाइं । दुक्खेण माणुसत्तं जइ लहइ जहिच्छियं जीवो ॥ ९ ॥ तं तह दुल्लहलंभं विज्जुलयाचंचलं च माणुसत्तं । लद्धूण जो
 पमायइ सो कापुरिसो न सप्पुरिसो ॥ ८४० ॥ आलस्स मोहऽवण्णा थंभा कोहा पमाय किवणत्ता । भय सोगा अण्णाणा वक्खेव कुतूहला रमणा ॥ १ ॥ एतेहिं कारणेहिं लद्धूण सुदुल्लहं पि
 माणुस्सं । ण लहइ सुइं हियकरिं संसारुत्तारणिं जीवो ॥ २ ॥ जाणाऽऽवरणपहरणे जुद्धे कुसलत्तणं च णीती य । दक्खत्तं ववसाओ सरीरमारोग्गया चेव ॥ ३ ॥ दिट्ठे सुएऽणुभूए कम्माण
 खए कए उवसमे य । मणवयणकायजोगे य पसत्थे लब्भए बोही ॥ ४ ॥ अणुकंपऽकामणिज्जरबालतवे दाणविणयविब्भंगे । संयोगविप्पओगे वसणूसवइडिडसक्कारे ॥ ५ ॥ वेजे मेंठे तह
 इंदणाग कयउण्ण पुप्फसालसुए । सिव दुमहुरवणिभाउयआहीरदसण्णिनापुत्ते ॥ ६ ॥ सो वाणरजूहवती कंतारे सुविहियाणुकंपाए । भासुरवरबोदिधरो देवो वेमाणो जाओ ॥ ७ ॥
 अब्भुट्ठाणे विणए परक्कमे साहुसेवणाए य । सम्मदंसणलंभो विरयाविरईइ विरईए ॥ ८ ॥ सम्मत्तस्स सुयस्स य छावट्ठी सागरोवमाइं ठिई । सेसाण पुव्वकोडी देसूणा होइ उक्कोसा ॥ ९ ॥
 सम्मत्तदेसविरया पलियस्स असंखभागमेत्ता उ । सेढीअसंखभागो सुए सहस्सग्गसो विरई ॥ ८५० ॥ सम्मत्तदेसविरया पडिवन्ना संपई असंखेज्जा । संखेज्जा य चरित्ते तीसुवि पडिया
 अणंतगुणा ॥ १ ॥ सुयपडिवण्णा संपइ पयरस्स असंखभागमेत्ता उ । सेसा संसारत्था सुयपरिवडिया हु ते सब्बे ॥ २ ॥ कालमणंतं च सुए अद्धापरियट्ठओ उ देसूणो । आसायणबहुलाणं
 उक्कोसं अंतरं होइ ॥ ३ ॥ सम्मसुयअगारीणं आवलियअसंखभागमेत्ता उ । अट्ठ समया चरित्ते सव्वेसु जहन्न दो समया ॥ ४ ॥ सुयसम्म सत्तयं खलु विरयाविरईय होइ बारसगं । विर-
 ईए पन्नरसगं विरहियकालो अहोरत्ता ॥ ५ ॥ सम्मत्तदेसविरया पलियस्स असंखभागमेत्ताओ । अट्ठ भवा उ चरित्ते अणंतकालं च सुयसमए ॥ ६ ॥ तिण्ह सहस्सपुहुत्तं सयपुहुत्तं च
 होइ विरईए । एगभवे आगरिसा एवतिया होंति नायव्वा ॥ ७ ॥ तिण्ह सहस्समसंखा सहसपुहुत्तं च होइ विरईए । णाणभवे आगरिसा एवइया होंति णायव्वा ॥ ८ ॥ सम्मत्तचरणस-
 हिया सव्वं लोगं फुसे णिरवसेसं । सत्त य चोइसभागे पंच य सुयदेसविरईए ॥ ९ ॥ सव्वजीवेहिं सुयं सम्मचरित्ताइं सव्वसिद्धेहिं । भागेहिं असंखेजेहिं फासिया देसविरईओ ॥ ८६० ॥
 सम्मदिट्ठि अमोहो सोही सव्भाव दंसणं बोही । अविवज्जओ सुदिट्ठित्ति एवमाई निरुत्ताइं ॥ १ ॥ अक्खर सन्नी संमं सादीयं खलु सपज्जवसियं च । गमियं अंगपविट्ठं सत्तवि एए सप-
 डिवक्खा ॥ २ ॥ विरयाविरई संवुडमसंवुडे बालपंडिए चेव । देसेक्कदेसविरई अणुधम्मोऽगारधम्मो य ॥ ३ ॥ सामाइयं समइयं सम्मावाओ समास संखेवो । अणवज्जं च परिण्णा पच्च-
 क्खाणे य ते अट्ठ ॥ ४ ॥ दमदंते मेयजे कालयपुच्छा चिलाय अत्तेय । धम्मरूइ इला तेयलि सामइए अट्ठुदाहरणा ॥ ५ ॥ निक्खंतो हत्थिसीसा दमदंतो कामभोगमवहाय । णवि रज्जइ
 रत्तेसुं दुट्ठेसु ण दोसमावजे ॥ १५१ ॥ भा० । वंदिज्जमाणा न समुक्कसंति, हीलिज्जमाणा न समुज्जलंति । दंतेण चित्तेण चरंति धीरा, मुणी समुग्घाइयरागदोसा ॥ ६ ॥ तो समणो जइ सुमणो
 भावेण य जइ ण होइ पावमणो । सयणे य जणे य समो समो य माणावमाणेसुं ॥ ७ ॥ णत्थि य सि कोइ वेसो पिओ व सब्बेसु चेव जीवेसु । एएण होइ समणो एसो अण्णोवि पज्जाओ
 ॥ ८ ॥ जो कोंचगावराहे पाणिदया कोंचगं तु णाइक्खे । जीवियमणपेहंतं मेयजरिसिं णमंसामि ॥ ९ ॥ णिप्फेडियाणि दोण्णिवि सीसावेढेण जस्स अच्छीणि । ण य संजमाउ चलिओ
 मेयज्जो मंदरगिरिब ॥ ८७० ॥ दत्तेण पुच्छिओ जो जण्णफलं कालओ तुरुमिणीए । समयाए आहिएणं संमं बुइयं भदंतेण ॥ १ ॥ जो तिहि पएहि सम्मं समभिगओ संजमं समारूढो ।
 उवसमविवेयसंवर चिलायपुत्तं णमंसामि ॥ २ ॥ अहिसरिया पाएहिं सोणियगंधेण जस्स कीडीओ । खायंति उत्तमंगं तं दुक्करकारयं वंदे ॥ ३ ॥ धीरो चिलायपुत्तो मूयइंगलियाहिं चा-
 लिणिब्व कओ । सो तहवि खज्जमाणो पडिवण्णो उत्तमं अट्ठं ॥ ४ ॥ अड्ढाइजेहिं राइंदिएहिं पत्तं चिलाइपुत्तेणं । देविंदामरभवणं अच्छरगणसंकुलं रम्मं ॥ ५ ॥ सयसाहस्सा गंथा सहस्स
 पंच य दिवड्ढमेगं च । ठविया एगसिलोए संखेवो एस णायवो ॥ ६ ॥ सोऊण अणाउट्ठिं अणभीओ वज्जिऊण अणगं तु । अणवज्जयं उवगओ धम्मरूइ णाम अणगारो ॥ ७ ॥ परिजा-
 ११९५ आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं, निर्युक्ति

णिकुण जीवे अजीवे जाणणापरिणाए। सावज्जजोगकरणं परिजाणइ सो इलापुत्तो ॥ ८ ॥ पच्चक्खे इव दट्ठूण जीवाजीवे य पुण्णपावं च। पच्चक्खाया जोगा सावजा तेतलिसुएणं
 ॥ ९ ॥ उपोद्घातनिर्युक्तिः। अप्पग्गंथमहत्थं वत्तीसादोसविरहियं जं च। लक्खणजुत्तं सुत्तं अट्ठहि य गुणेहि उववेयं ॥ ८८० ॥ अलियमुवघायजणयं निरत्थयमवत्थयं छलं दुहिलं।
 निस्सारमधियमूणं पुणरुत्तं वाहयमजुत्तं ॥ १ ॥ कमभिण्णवयणभिण्णं विभत्तिभिन्नं च लिंगभिन्नं च। अणभिहियमपयमेव य सभावहीणं ववहियं च ॥ २ ॥ कालजतिच्छवि-
 दोसा समयविरुद्धं च वयणमित्तं च। अत्थावत्तीदोसो य होइ असमासदोसो य ॥ ३ ॥ उवमारूवगदोसोऽनिद्देसऽपदत्थऽसंधिदोसो य। एए उ सुत्तदोसा वत्तीसं होंति णायद्वा ॥ ४ ॥
 निद्दोसं सारवन्तं च, हेउजुत्तमलंकिर्यं। उवणीयं सोवयारं च, मियं महुरमेव य ॥ ५ ॥ अप्पक्खरमसंदिद्धं, सारवं विस्सओमुहं। अत्थोभमणवज्जं च, मुत्तं सब्बणुभासियं ॥ ६ ॥
 उप्पत्ती निक्खेवो पयं पयत्थो परूवणा वत्थुं। अक्खेव पसिद्धि कमो पओयण फलं नमोक्कारो ॥ ७ ॥ उप्पन्नाऽणुप्पन्नो इत्थ नयाऽऽइनि(या ने)गमस्सऽणुप्पन्नो। सेसाणं
 उप्पन्नो जइ कत्तो? तिविहसामित्ता ॥ ८ ॥ सामुट्ठाणा वायण लद्धिओ पढमे नयत्तिए तिविहं। उज्जुसुय पढमवज्जं सेसनया लद्धिमिच्छन्ति ॥ ९ ॥ निहनाइ दब्ब भावोवउत्त
 जं कुज्ज सम्मदिट्ठी उ। नेवाइयं पयं दब्बभावसंकोअण पयत्थो ॥ ८९० ॥ दुविहा परूवणा छप्पया अ नवहा अ छप्पया इणमो। किं कस्स केण व कहिं कियच्चिरं कइविहो व भवे
 ॥ १ ॥ किं? जीवो तप्परिणओ पुब्बपडिवन्नओ उ जीवाणं। जीवस्स व जीवाण व पडुच्च पडिवज्जमाणं तु ॥ २ ॥ नाणावरणिज्जस्स य दंसणमोहस्स तह खओवसमे। जीवमजीवे
 अट्ठसु भंगेसु अ होइ सब्बत्थ ॥ ३ ॥ उवओग पडुच्चंतोमुहुत्त लद्धीइ होइ उ जहन्नो। उक्कोसट्ठिइ छावट्ठि सागर अरिहाइ पंचविहो ॥ ४ ॥ संतपयपरूवणया दब्बपमाणं च खित्त फुसणा
 य। कालो य अंतरं भाग भाव अप्पाबहुं चेव ॥ ५ ॥ संतपयं पडिवन्ने पडिवज्जंते य मग्गणं गइसु। इंदिअ काए वेए जोए य कसाय लेसासु ॥ ६ ॥ सम्मत्त नाण दंसण संजय उवओ-
 गओ अ आहारे। भासग परित्त पज्जत्त सुहुमे सन्नी अ भव चरमे ॥ ७ ॥ पलिआसंखिज्जइमे पडिवन्नो हुज्ज खित्तलोगस्स। सत्तसु चउदसभागेसु हुज्ज फुसणावि एमेव ॥ ८ ॥ एगं पडुच्च
 हिट्ठा तहेव नाणाजिआण सब्बद्दा। अंतर पडुच्च एगं जहन्नमंतोमुहुत्तं तु ॥ ९ ॥ उक्कोसेणं चेयं अद्दापरियट्ठओ उ देसूणो। णाणाजीवे णत्थि उ भवे य भावे खओवसमे ॥ ९०० ॥ जी-
 वाणऽणंतभागो पडिवण्णो सेसगा अणंतगुणा। वत्थुं तऽरिहंताइ पच्च भवे तेसिमो हेऊ ॥ १ ॥ आरोवणा अ भयणा पुच्छा तह दायणा अ निज्जवणा। नमुकारऽनमुक्कारे नोआइजुए व
 नवहा वा ॥ २ ॥ मग्गे अविप्पणासो आयारे विणयया सहायत्तं। पंचविहनमुक्कारं करेमि एएहिं हेऊहिं ॥ ३ ॥ अडवीइ देसिअत्तं तहेव निज्जामया समुहम्मि। छक्कायरक्खणट्ठा महगो
 वा तेण वुच्चंति ॥ ४ ॥ अडविं सपच्चवायं वोलित्ता देसिओवएसेणं। पावंति जहिट्ठपुरं भवाडविपी तहा जीवा ॥ ५ ॥ पावंति निबुइपुरं जिणोवइट्ठेण चेव मग्गेणं। अडवीइ देसिअत्तं एवं
 नेअं जिणिदाणं ॥ ६ ॥ जह तमिह सत्थवाहं नमइ जणो तं पुरं तु गंतुमणो। परमुवगारित्तणओ निव्विग्घत्थं च भत्तीए ॥ ७ ॥ अरिहो उ नमुक्कारस्स भावओ खीणरागमयमोहो।
 मुक्खत्थीणंपि जिणो तहेव जम्हा अओ अरिहा ॥ ८ ॥ संसाराअडवीए मिच्छत्तऽन्नाणमोहिअपहाए। जेहिं कय देसिअत्तं ते अरिहंते पणिवयामि ॥ ९ ॥ सम्मदंसणदिट्ठो नाणेण य
 सुट्ठु तेहिं उवलद्धो। चरणकरणेण(हिं) पहओ निव्वानपहो जिणिदेहिं ॥ ९१० ॥ सिद्धिं वसहिमुवगया निव्वानसुहं च ते अणुप्पत्ता। सासमद्वाबाहं पत्ता अयरामरं ठाणं ॥ १ ॥ पावंति
 जहा पारं सम्मं निज्जामया समुहस्स। भवजलहिस्स जिणिदा तहेव जम्हा अओ अरिहा ॥ २ ॥ मिच्छत्तकालियावायविरहिए सम्मत्तगज्जभपवाए। एगसमएण पत्ता सिद्धिवसहि-
 पट्ठणं पोया ॥ ३ ॥ निज्जामगरयणाणं अमूढनाणमइकण्णधारणं। वंदामि विणयपणओ तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ ४ ॥ पालंति जहा गावो गोवा अहिसावयाइडुग्गेहिं। पउरतणपा-
 णिआणि अ वणाणि पावंति तह चेव ॥ ५ ॥ जीविकाया गावो जं ते पालंति ते महागोवा। मरणाइभयाउ(हि) जिणा निव्वानवणं च पावंति ॥ ६ ॥ तो उवगारित्तणओ नमोऽरिहा
 भविअजीवलोगस्स। सब्बस्सेह जिणिदा लोगुत्तमभावओ तह य ॥ ७ ॥ रागदोसकसाए, इंदिआणि अ पंचवि। परीसहे उवसग्गे, नामयंता नमोऽरिहा ॥ ८ ॥ इंदियविसयकसाए परी-
 सहे वेयणा उवस्सग्गे। एए अरिणो हंता अरिहंता तेण वुच्चंति ॥ ९ ॥ अट्ठविहंपिय कम्मं अरिभूअं होइ सब्बजीवाणं। तं कम्ममरिं हंता अरिहंता तेण वुच्चन्ति ॥ ९२० ॥ अरिहंति वंद-
 णनमंसणाइं अरिहंति पूअसक्कारं। सिद्धिगमणं च अरिहा अरहंता तेण वुच्चन्ति ॥ १ ॥ देवासुरमणुएसुं अरिहा पूआ सुरुत्तमा जम्हा। अरिणो हंता रयं हंता अरिहंता तेण वुच्चन्ति ॥ २ ॥
 अरहंतनमुक्कारो जीवं मोएइ भवसहस्साओ। भावेण कीरमाणो होइ पुणो बोहिलाभाए ॥ ३ ॥ अरिहंतनमुक्कारो धन्नाण भवक्खयं कुणंताणं। हिअयं अणुम्मुअंतो विसुत्तियावारओ
 होइ ॥ ४ ॥ अरहंतनमुक्कारो एवं खलु वण्णिओ महत्थुत्ति। जो मरणम्मि उवग्गे अभिक्खणं कीरए बहुसो ॥ ५ ॥ अरिहंतनमुक्कारो, सब्बपावप्पणासणो। मंगलाणं च सब्बेसिं, पढमं हव-
 (वह)इ मंगलं ॥ ६ ॥ कम्मे सिप्पे अ विज्जाय, मंते जोगे अ आगमे। अत्थ जत्ता अभिप्पाए, तवे कम्मक्खए इय ॥ ७ ॥ कम्मं जमणायरिओवएसयं सिप्पमन्नहाऽभिहिअं। किसि-
 वाणिज्जाइयं घडलोहाराइभेअं च ॥ ८ ॥ जो सब्बकम्मकुसलो जो वा जत्थ सुपरिनिट्ठिओ होइ। सज्झगिरिसिद्धओविव कम्मसिद्धत्ति विन्नेओ ॥ ९ ॥ जो सब्बसिप्पकुसलो जो वा जत्थ (२९९)

सुपरिनिट्टिओ होइ । कोकासवड्ढईविव साइसओ सिप्पसिद्धो सो ॥ ९३० ॥ इत्थी विजाऽभिहिया पुरिसो मंतुत्ति तव्विसेसोऽयं । विजा ससाहणा वा साहणरहिओ अ मंतुत्ति ॥ १ ॥
 विजाण चक्कवट्ठी विजासिद्धो स जस्स वेगावि । सिज्झज्ज महाविजा विजासिद्धऽज्जखउडुव्व ॥ २ ॥ साहीणसव्वमंतो बहुमंतो वा पहाणमंतो वा । नेओ स मंतसिद्धो थंभागरिसुव्व
 साइसओ ॥ ३ ॥ सव्वेवि दव्वजोगा परमच्छेयरफलाऽहवेगोऽवि । जस्सेह हुज्ज सिद्धो स जोगसिद्धो जहा समिओ ॥ ४ ॥ आगमसिद्धो सव्वंगपारओ गोअमुव्व गुणरासी । पउरत्थो अत्थ-
 परो व मम्मणो अत्थसिद्धत्ति ॥ ५ ॥ जो निच्चसिद्धजत्तो लद्धवरो जो व तुंडियाइव्व । सो किर जत्तासिद्धोऽभिप्पाओ बुद्धिपजाओ ॥ ६ ॥ विउला विमला सुहुमा जस्स मई जो
 चउव्विहाए वा । बुद्धीए संपन्नो स बुद्धिसिद्धो इमा सा य ॥ ७ ॥ उत्पत्तिआ वेणइआ, कम्मिया पारिणामिआ । बुद्धी चउव्विहा वुत्ता, पंचमा नोवलब्भए ॥ ८ ॥ पुव्वमदिट्ठं अस्सुअमवे-
 इअ तक्खणविसुद्धगहिअत्था । अवाहयफलजोगिणि (गा) बुद्धी उत्पत्तिआ नाम ॥ ९ ॥ भरहसिल पणिअ रुक्खे खुड्डुग पड सरड काग उच्चारे । गय घयण गोळ खंभे खुड्डुग मग्गि-
 त्थि पइ पुत्ते ॥ ९४० ॥ भरहसिल मिंढ कुक्कुड तिल वालुअ हत्थि अगड वणसंडे । पायस अइआ पत्ते खाडहिला पंच पिअरो अ ॥ १ ॥ महुसित्थ मुदि अंके अ नाणए भिक्खु चेडग
 निहाणे । सिक्खा य अत्थसत्थे इच्छा य महं सयसहस्से ॥ २ ॥ भरनित्थरणसमत्था सिवग्गसुत्तत्थगहिअपेआला । उभओलोगफलवई विणयसमुत्था हवइ बुद्धी ॥ ३ ॥ निमित्ते अत्थ-
 सत्थे अ लेहे गणिए अ कूव अस्से अ । गदह लक्खण गंठी अगए गणिआ य रहिओ अ ॥ ४ ॥ सीआ साडी दीहं च तणं अवसव्वयं च कुंचस्स । निव्वोदए अ गोणे घोडग पडणं च
 रुक्खाओ ॥ ५ ॥ उवओगदिट्ठसारा कम्मपसंगपरिघोलणविसाला । साहुक्कारफलवई कम्मसमुत्था हवइ बुद्धी ॥ ६ ॥ हेरन्निए करिसए कोलिअ डोवे य मुत्ति घय पवए । तुन्नाग वड्ढइ
 पूइए अ घड चित्तकारे अ ॥ ७ ॥ अणुमाणहेउदिट्ठंतसाहिया वयविवागपरिणामा । हिअनिस्सेअसफलवई बुद्धी परिणामिआ नाम ॥ ८ ॥ अभए सिट्ठि कुमारे देवी उदिओदए हवइ
 राया । साहू अ नंदिसेणे धणदत्ते सावग अमच्चे ॥ ९ ॥ खवगे अमच्चपुत्ते चाणक्के चेव थूलभदे अ । नासिकसुंदरि नंदे वड्ढरे परिणामिआ बुद्धी ॥ ९५० ॥ चलणाहय आमंडे मणी अ सप्पे
 अ खग्गि थूभिंदे । परिणामिअबुद्धीए एवमाई उदाहरणा ॥ १ ॥ न किलम्मइ जो तवसा सो तवसिद्धो दढप्पहारिब्व । सो कम्मक्खयसिद्धो जो सव्वक्खीणकम्मंसो ॥ २ ॥ दीहकालरयं
 जंतुकम्मं से सिअमट्ठहा । सिअं धंतंति सिद्धस्स, सिद्धत्तमुवजायइ ॥ ३ ॥ नाऊण वेअणिज्जं अइबहुअं आउयं च थोवागं । गंतूण समुग्घायं खवंति कम्मं निरवसेसं ॥ ४ ॥ दंड कवाडे
 मंथंतरे अ साहरणया सरीरत्थे । भासाजोगनिरोहे सेलेसी सिज्झणा चेव ॥ ५ ॥ जह उल्ला साडीया आसुं सुक्कइ विरल्लिया संती । तह कम्मलहुअसमए वच्चंति जिणा समुग्घायं ॥ ६ ॥
 लाउय एरंडफले अग्गी धूमे उसू धणुविमुक्के । गइपुव्वपओगेणं एवं सिद्धाणवि गईओ ॥ ७ ॥ कहिं पडिहया सिद्धा, कहिं सिद्धा पइट्टिया । कहिं बोदि चइत्ताणं, कत्थ गंतूण सिज्झई ?
 ॥ ८ ॥ अलोए पडिहया सिद्धा, लोग्गे य पइट्टिया । इहं बोदिं चइत्ताणं, तत्थ गंतूण सिज्झई ॥ ९ ॥ ईसीपभाराए सीयाए जोयणंमि लोगतो । बारसहिं जोयणेहिं सिद्धी सव्वट्ठसि-
 द्धाओ ॥ ९६० ॥ निम्मलदगरयवण्णा तुसारगोखीरहारसरिवन्ना । उत्ताणयच्छत्तयसंठिया य भणिया जिणवरेहिं ॥ १ ॥ एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं । तीसं चेव सहस्सा
 दो चेव सया अउणवन्ना ॥ २ ॥ बहुमज्झदेसभागे अट्टेव य जोअणाणि बाहल्लं । चरमंतसु अ तणुई अंगुलऽसंखिज्जईभागं ॥ ३ ॥ गंतूण जोअणं जोयणं तु परिहाइ अंगुलपुहुत्तं । तीसे-
 ऽविअ पेरंता मच्छिअपत्ताउ तणुयअरा ॥ ४ ॥ ईसीपभाराए उवरिं खलु जोअणंमि जो कोसो । कोसस्स य छब्भाए सिद्धाणोगाहणा भणिआ ॥ ५ ॥ तिन्नि सया तिच्चीसा धणुत्ति-
 भागो अ कोसछब्भाओ । जं परमोगाहोऽयं तो ते कोसस्स छब्भाए ॥ ६ ॥ उत्ताणउव्व पासिल्लउव्व अहवा निसन्नओ चेव । जो जह करेइ कालं सो तह उववज्जए सिद्धो ॥ ७ ॥
 इहभवभिन्नागारो कम्मवसाओ भवंतरे होइ । न य तं सिद्धस्स जओ तम्मि वि तो सो तयागारो ॥ ८ ॥ जं संठाणं तु इहं भवं चयंतस्स चरमसमयंमि । आसीय पएसघणं तं संठाणं तहिं
 तस्स ॥ ९ ॥ दीहं वा हस्सं वा जं चरमभवे हविज्ज संठाणं । तत्तो तिभागहीणा सिद्धाणोगाहणा भणिया ॥ ९७० ॥ तिन्नि सया तिच्चीसा धणुत्तिभागो य होइ बोद्धवो । एसा खलु सिद्धाणं
 उक्कोसोगाहणा भणिया ॥ १ ॥ चत्तारि य रयणीओ रयणितिभागूणिया य बोद्धवो । एसा खलु सिद्धाणं मज्झिमओगाहणा भणिया ॥ २ ॥ एगा य होइ रयणी अट्टेव य अंगुलाइं सा-
 हीआ । एसा खलु सिद्धाणं जहन्नओगाहणा भणिया ॥ ३ ॥ ओगाहणाइ सिद्धा भवत्तिभागेण हुंति परिहीणा । संठाणमणित्थंत्थं जरामरणविप्पमुक्काणं ॥ ४ ॥ जत्थ य एगो सिद्धो तत्थ
 अणंता भवक्खयविमुक्का । अन्नुन्नसमोगाढा पुट्टा सव्वे य लोगतं ॥ ५ ॥ फुसइ अणंते सिद्धे सव्वपएसेहिं नियमसो सिद्धो । तेऽवि असंखिज्जगुणा देसपएसेहिं जे पुट्टा ॥ ६ ॥ असरीरा जी-
 वघणा उवउत्ता दंसणे अ नाणे य । सागारमणागारं लक्खणमेयं तु सिद्धाणं ॥ ७ ॥ केवलनाणुवउत्ता जाणंती सव्वभावगुणभावे । पासंति सव्वओ खलु केवलदिट्ठीहिऽणंताहिं ॥ ८ ॥
 नाणंमि दंसणंमि य इत्तो एगयरयंमि उवउत्ता । सव्वस्स केवलिस्सा जुगवं दो नत्थि उवओगा ॥ ९ ॥ नवि अत्थि माणुसाणं तं सुक्खं नेव (नविय) सव्वदेवाणं । जं सिद्धाणं सुक्खं

अव्वाबाहं उवगयाणं ॥ ९८० ॥ सुरगणसुहं समत्तं सव्वद्धापिंडियं अणंतगुणं । न य पावइ मुत्तिमुहं णंताहिवि वग्गवग्गूहिं ॥ १ ॥ सिद्धस्स सुहो रासी सव्वद्धापिंडिओ जइ हविज्जा । सो णंतवग्गभइओ सव्वागासे न माइज्जा ॥ २ ॥ जह नाम कोइ मिच्छो नगरगुणे बहुविहे विआणंतो । न चएइ परिकहेउं उवमाइ तहि असंतीए ॥ ३ ॥ इअ सिद्धाणं मुक्खं अणोवमं नत्थि तस्स ओवम्मं । किंचि विसेसेणित्तो सारिक्खमिणं सुणह वुच्छं ॥ ४ ॥ जह सव्वकामगुणिअं पुरिसो भोत्तूण भोअणं कोई । तण्हाल्लुहाविमुक्को अच्चिज्ज जहा अमिअतत्तो ॥ ५ ॥ इअ सव्वकालत्तिता अउलं निव्वाणमुवगया सिद्धा । सासयमव्वाबाहं चिद्धंति सुही सुहं पत्ता ॥ ६ ॥ सिद्धत्ति अ बुद्धत्ति अ पारगयत्ति य परंपरगयत्ति । उम्मुक्कम्मकवया अजरा अमरा असंगा य ॥ ७ ॥ निच्छिन्नसव्वदुक्खा जाइजरामरणबंधणविमुक्का । अव्वाबाहं सुक्खं अणुहुंती सासयं सिद्धा ॥ ८ ॥ सिद्धाण नमुक्कारो जीवं मोएइ भवसहस्साओ । भावेण कीरमाणो होई पुण बोहिलाभाए ॥ ९ ॥ सिद्धाण नमुक्कारो धन्नाण भवक्खयं कुणंताणं । हिअयं अणुम्मुअंतो विसुत्तिआवारओ होइ ॥ ९९० ॥ सिद्धाण नमुक्कारो एवं खलु वणिणओ महत्थुत्ति । जो मरणंमि उवग्गे अभिक्खणं कीरए बहुसो ॥ १ ॥ सिद्धाण नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं, बिइअं हवइ मंगलं ॥ २ ॥ नामं ठवणा दविए भावंमि चउव्विहो उ आयरिओ । दव्वंमि एगभविआइ लोइए सिप्पसत्थाई ॥ ३ ॥ पंचविहं आयारं आयरमाणा तहा पभासंता । आयारं दंसंता आयरिया तेण वुच्चंति ॥ ४ ॥ आयारो नाणाई तम्सायरणा पभासणाओ वा । जे ते भावायरिया भावायारोवउत्ता य ॥ ५ ॥ आयरियनमोक्कारो जीवं मोएइ भवसहस्साओ । भावेण कीरमाणो होई पुण बोहिलाभाए ॥ ६ ॥ आयरियनमोक्कारो धन्नाण भवक्खयं कुणंताणं । हिअयं अणुम्मुअंतो विसुत्तिआवारओ होइ ॥ ७ ॥ आयरियनमोक्कारो एवं खलु वन्निओ महत्थोत्ति । जो मरणंमि उवग्गे अभिक्खणं कीरई बहुसो ॥ ८ ॥ आयरिनमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं, तइयं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥ नामं ठवणा दविए भावंमि चउव्विहो उवज्झाओ । दव्वे लोइअ सिप्पाइ निण्हगा वा इमे भावे ॥ १००० ॥ बारसंगो जिणक्खाओ सज्झाओ देसि (कहि)ओ बुहेहिं । तं उवइसंति जम्हा उज्झाया तेण वुच्चंति ॥ १ ॥ उत्ति उवओगकरणे ज्झत्ति अ ज्ञाणस्स होइ निहेसे । एएण हुंति उज्झा एसो अत्तोवि पज्जाओ ॥ २ ॥ उत्ति उवओगकरणे वत्ति अ पावपरिवज्जणे होइ । ज्झत्ति अ ज्ञाणस्स कए उत्ति अ ओसक्कणा कम्मे ॥ ३ ॥ उ(व)ज्झायनमोक्कारो जीवं मोएइ भवसहस्साओ । भावेण कीरमाणो होई पुण बोहिलाभाए ॥ ४ ॥ उ(व)ज्झायनमोक्कारो धण्णाण भवक्खयं कुणं(करं)ताणं । हिअयं अणुम्मुअंतो विसुत्तिआवारओ होइ ॥ ५ ॥ उवज्झायनमोक्कारो एवं खलु वन्निओ महत्थोत्ति । जो मरणंमि उवग्गे अभिक्खणं कीरई बहुसो ॥ ६ ॥ उवज्झायनमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं, चउत्थं हवइ मंगलं ॥ ७ ॥ नामं ठवणासाहू दव्वसाहू य भावसाहू य । दव्वंमि लोइआई भावंमि य संजओ साहू ॥ ८ ॥ घटपटरहमाइणि उ साहंता हुंति दव्वसाहुत्ति । अहवावि दव्वभूआ ते हुंती (नायव्वा) दव्वसाहुत्ति ॥ ९ ॥ निव्वाणसाहए जोए, जम्हा साहंति साहुणो । समा य सव्वभूएसुं, तम्हा ते भावसाहुणो ॥ १०१० ॥ किं पिच्छसि साहूणं तवं व नियमं व संजमगुणं वा । तो वंदसि साहूणं ? एयं मे पुच्छिओ साह ॥ १ ॥ विसयसुहनिअत्ताणं विसुद्धचारित्तनिअमजुत्ताणं । तच्चगुणसाहयाणं सदायक्किच्चुज्जयाण नमो ॥ २ ॥ असहाइ सहायत्तं करंति मे संजमं करंतिस्स । एएण कारणेणं नमामिऽहं सव्वसाहूणं ॥ ३ ॥ साहूण नमोक्कारो जीवं मोएइ भवसहस्साओ । भावेण कीरमाणो होई पुण बोहिलाभाए ॥ ४ ॥ साहूण नमोक्कारो धन्नाण भवक्खयं कुणंताणं । हिययं अणुम्मुअंतो विसुत्तिआवारओ होइ ॥ ५ ॥ साहूण नमोक्कारो एवं खलु वन्निओ महत्थोत्ति । जो मरणंमि उवग्गे अभिक्खणं कीरई बहुसो ॥ ६ ॥ साहूण नमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं, पंचमं हवइ मंगलं ॥ ७ ॥ नवि संखेवो न वित्थरो संखेवो दुविहु सिद्धसाहूणं । वित्थारओऽण्णेगविहो पंचविहो न जुज्जई तम्हा ॥ ८ ॥ अरहंताई नियमा साहू साहू य तेसु भइयव्वा । तम्हा पंचविहो खलु हेउनिमित्तं हवइ सिद्धो ॥ ९ ॥ पुव्वाणुपुव्वि न कमो नेव य पच्छाणुपुव्वि एस भवे । सिद्धाईओ पढमो बीआए साहुणो आई ॥ १०२० ॥ अरहंतुवएसेणं सिद्धा नज्जंति तेण अरिहाई । न य कोइवि परिसाए पणमित्ता पणमई रण्णो ॥ १ ॥ इत्थ य पओअणमिणं कम्मखओ मंगलागमो चव । इहलोअपारलोइअ दुविह फलं तत्थ दिद्धंता ॥ २ ॥ इहलोइ अत्थकामा आरुग्गं अभिरई य निप्फत्ती । सिद्धी य सग्गसुकुलपच्चायाई य परलोए ॥ ३ ॥ इहलोगंमि तिदंडी सादिव्वं माउलिंगवणमेव । परलोग चंडपिंगल हुंदिअजक्खो य दिद्धंता ॥ ४ ॥ नमुक्कारनिज्जुत्ती समत्ता । नंदिअणुओगदारं विहिवदुवग्घाइयं च नाऊणं । काऊण पंचमंगल आरंभो होइ सुत्तस्स ॥ ५ ॥ कयपंचनमुक्कारो करेइ सामाइयंति सोऽभिहिओ । सामाइअंगमेव य जं सो सेसं तओ वुच्छं ॥ ६ ॥ सुत्तं करेमिं भंते ! सामाइयं, सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जावजीवाए तिविहंतिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंमि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । सू० १ । 'अक्खलिअसंहिआई वक्खाणचउक्कए दरिसिअंमि । सुत्तप्फासिअनिज्जुत्तिवित्थरत्थो इमो होइ ॥ ७ ॥ करणे भए य अंते सामाइय सव्वए अवजे य । जोगे पच्चक्खाणे जावजीवाइ तिविहेणं

११९८ आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं, निर्युपरि + अस्सयुपि-१

मुनि दीपरत्तसागर

॥८॥ नामं ठवणा दविए खित्ते काले तहेव भावे य । एसो खलु करणस्स उ निक्खेवो छबिहो होइ ॥१५२॥ भाप्यं । जाणगभविअइरित्तं सन्नानोसन्नओ भवे करणं । सन्ना कडकरणाई नोसन्ना वीससपओगे ॥ ३ ॥ वीससकरणमणाई धम्मार्इण परपच्चया जोगा । साई चक्खुप्फासिअमब्भाइमचक्खुमणुमाई ॥ ४ ॥ संघायभेअतदुभयकरणं इंदाउहाइ पच्चक्खं । दुअअणुमाईणं पुण छउमत्थाईणपच्चक्खं ॥ ५ ॥ जीवमजीवे पाओगिअं च चरमं कुसुंभरागाई । जीवप्पओगकरणं मूले तह उत्तरगुणे य ॥ ६ ॥ जं जं निज्जीवाणं कीरइ जीवप्पओगओ तं तं । वन्नाइ-रूवकम्माइ वावि अजीवकरणं तु ॥ ७ ॥ जीवप्पओगकरणं दुविहं मूलप्पओगकरणं च । उत्तरपओगकरणं पंच सरीराइ पढमंसि ॥ ८ ॥ ओरालियाइआइं ओहेणिअरं पओगओ जमिहं । निप्फण्णा निप्फज्जइ आइइटाणं च तं तिण्हं ॥ ९ ॥ सीसमुरोअरपिट्ठी दो बाहू ऊरुआ य अट्टंगा । अंगुलिमाइ उवंगा अंगोवंगाणि सेसाणि ॥ १६० ॥ केसाईउवरयणं ओरालविउच्चि उत्तरं करणं । ओरालिए विसेसो कच्चाइविणट्टसंठवणं ॥ १ ॥ आइइटाणं तिण्हं संघाओ साडणं तदुभयं च । नेआकम्मे संघायसाडणं साडणं वावि ॥ २ ॥ संघायमेगसमयं तहेव परिसाडणं उरालंमि । संघायणपरिसाडणं खुइडागभवं तिसमऊणं ॥ ३ ॥ एयं जहन्नमुक्कोसयं तु पलिअत्तिअं तु (ति) समऊणं । विरहो अंतरकालो ओराले तस्सिमो होइ ॥ ४ ॥ तिसमयहीणं खुइडं होइ भवं सव्वबंधसाडाणं । उक्कोस पुत्रकोडी समओ उअही य तिन्तीसं ॥ ५ ॥ अंतरमेगं समयं जहन्नमोरालगहणसाडस्स । सतिसमया उक्कोसं तिन्तीसं सागरा हुंति ॥ ६ ॥ वेउच्चिअसं-घाओ जहन्नु समओ उ दुसमउक्कोसो । साडो पुण समयं चिअ विउच्चणाए विणिदिट्ठो ॥ ७ ॥ संघायणपरिसाडो जहन्नओ एगसमइओ होइ । उक्कोसं तिन्तीसं सायरणामाईं समऊणा ॥ ८ ॥ सव्वग्गहोभयाणं साडस्स य अंतरं विउच्चिस्स । समओ अंतमुहुत्तं उक्कोसं रुक्खकालीअं ॥ ९ ॥ आहारे संघाओ परिसाडो य समयं समं होइ । उभयं जहन्नमुक्कोसयं च अंतो-मुहुत्तं तु ॥ १७० ॥ बंधणसाडुभयाणं जहन्नमंतोमुहुत्तमंतरणं । उक्कोसेण अवट्ठं पुग्गलपरिअट्ठेदूमूणं ॥ १ ॥ नेआकम्माणं पुण संताणाऽणाडओ न संघाओ । भव्वाण हुज्ज साडो सेले-सीचरमसमयंमि ॥ २ ॥ उभयं अणाइनिहणं संतं भव्वाण हुज्ज केसिंचि । अंतरमणाइभावा अच्चंतऽविओगओ नेसिं ॥ ३ ॥ अहवा संघाओ साडणं च उभयं तहोभयनिसेहो । पडसंख-सगडथूणा जीवपओगे जहासंखं ॥ १७४ ॥ भा० । खित्तस्स नत्थि करणं आगासं जं अकित्तिमो भावो । वंजणपरिआवन्नं तहावि पुण उच्चुकरणाई ॥ ९ ॥ कालेवि नत्थि करणं तहावि पुण वंजणप्पमाणेणं । बवबालवाइकरणेहिं णेगहा होइ ववहारो ॥ १०३० ॥ जीवमजीवे भावे अजीवकरणं तु तत्थ वन्नाइं । जीवकरणं तु दुविहं सुअकरणं नो य मुअकरणं ॥ १ ॥ बद्धमबद्धं तु सुअं बद्धं तु दुवालसंगं निदिट्ठं । तच्चिवरीअमबद्धं निसीहमनिसीह बद्धं तु ॥ २ ॥ भूए परिणयविगए सदकरणं तहेव ननिसीहं । पच्छन्नं तु निसीहं निसीहनामं जहऽज्जयणं ॥ ३ ॥ अग्गेणीअंमि जहा दीवायणु जत्थ एग तत्थ सयं । जत्थ सयं तत्थेगो हम्मइ वा भुंजए वावि ॥ ४ ॥ एवं बद्धमबद्धं आएसणं हवंति पंच सया । जह एगा मरुंदेवी अच्चंतं थावरा सिद्धा ॥ ५ ॥ नोमुअकरणं दुविहं गुणकरणं तह य जुंजणाकरणं । गुणकरणं पुण दुविहं तवकरणे संजमे य तहा ॥ ६ ॥ जुंजणकरणं तिविहं मण वय काए य मणासि सच्चार्इ । सट्टाणि तेसि भेओ चउ चउहा सत्तहा चेव ॥ ७ ॥ भावमुअसदकरणे अहिगारो इत्थ होइ नायवो । नोसुअकरणे गुणजुंजणे य जहसंभवं होइ ॥ ८ ॥ कयाकयं केण कयं केसु य दव्वेसु कीरइं वावि । काहे व कारओ नयओ करणं कडविहं (च) कहं ? ॥ १०३९ ॥ उप्पन्नाणुप्पन्नं कयाकयं इत्थ जह नमुक्कारे । केणति अत्थओ न जिणेहिं सुत्तं गणहरेहिं ॥ १७५ ॥ भा० । तं केसु कीरइं तत्थ नेगमो भणइ इट्ठदव्वेसुं । सेसाण सव्वदव्वेसुं पज्जवेसुं न सव्वेसुं ॥ ६ ॥ काहु? उदिट्ठे नेगम उवट्ठिए संगहो य ववहारो । उज्जुमुओ अक्कमंते सददु समत्तंमि उवउत्तो ॥ ७ ॥ आलोअणा य विणए खित्त दिसाऽभिग्गहे य काले य । रिक्ख गुणसंपयाऽविय अभिवाहारे य अट्टमए ॥ ८ ॥ पव्वजाए जुग्गं तावइ आलोअणा गिहत्थेसु । उवसंपयाइ साहुसु सुत्ते अत्थे तदुभए य ॥ ९ ॥ आलोइए विणीअस्स दिज्जए तं पसत्थखित्तंमि । अभिगिज्ज दो दिसाओ चरंतिअं वा जहाकमसो ॥ १८० ॥ पडिकुट्टदिणे वज्जिय रिक्खेसु य मिगसिराठ भणिएसुं । पियधम्मार्इ गुणसंपयासु तं होइ दायव्वं ॥ १ ॥ अभिवाहारो कालिअसुअंमि सुत्तत्थतदुभएणंति । दव्वगुणपज्जवेहि य दिट्ठीवायंमि बोद्धव्वो ॥ २ ॥ उद्वेस समुद्वेसे वायणमणु जाणणं च आयरिए । सीस-म्मि उद्विसिज्जंतमाइ एअं तु जं कडहा ॥ १८३ ॥ भा० । कह सामाइअलंभो ? तस्सव्वविघाइदेसवाघाई । देसविघाईफइडुगअणंतवुइटीविमुद्वस्स ॥ १०४० ॥ एवं ककारलंभो सेसाणवि एवमेव कमलंभो । एयं तु भावकरणं करणे य भए य जं भणियं ॥ १ ॥ होइ भयंतो भयअंतगो य रयणा भयस्स लब्भेया । सव्वंमि वच्चिएऽणुक्कमेण अंतेवि लब्भेआ ॥ १८४ ॥ भा० । एवं सव्वंमिऽवि वच्चियंमि इत्थं तु होइ अहिगारो । सत्तभयविप्पमुक्के तहा भवंते भयंते य ॥ ५ ॥ भा० । सामं समं च सम्मंऽइगमिति सामाइयस्स एगट्टा । नामं ठवणा दविए भावंमि य तस्स (तेसि) निक्खेवो ॥ २ ॥ महुरपरिणामि सामं समं तुला सम्म खीरखंडजुई । दोरे हारस्स चिईऽइगमेयाइं तु दव्वंमि ॥ ३ ॥ आयोवमाए परदुक्खवमकरणं रागदोसमज्जत्थं । नाणाइतिगं तस्साठ पोयणं भावसामाई ॥ ४ ॥ समयया सम्मत्त पसत्थ संति सिव हिय सुहं अनिदं च । अदुगुंछियमगरहियं अणवच्चमिमेऽवि एगट्टा ॥ ५ ॥ को कारओ ? करंतो किं कम्मं ? जं तु कीरइं तेण । किं

कार्यकरणाय अन्नमणन्नं च ? अक्खेवो ॥ ६ ॥ आया ह्यु कारओ मे सामाइय कम्म करणमाया य । परिणामे सह आया सामाइयमेव उ पसिद्धी ॥ ७ ॥ एगत्ते जह मुट्ठिं करेइ अत्थंतरे घडाईणि । दव्वत्थंतरभावे गुणस्स किं केण संबद्धं ? ॥ ८ ॥ नामं ठवणा दविए आएसे निरवसेसए चेव । तह सव्वधत्तसव्वं च भावसव्वं च सत्तमयं ॥ ९ ॥ दविए चउरो भंगा सव्वमसव्वे य दव्वदेसे य । आएस सव्वगामो नीसेसे सव्वगं दुविहं ॥ १८६ ॥ भा० । अणिमिसिणो सव्वसुरा सव्वापरिसेससव्वगं एअं । तदेसापरिसेसं सव्वे काला जहा असुरा ॥ ७ ॥ सा हवइ सव्वधत्ता दुपडोआरा जिआ य अजिआ य । दव्वे सव्वघडाई सव्वधत्ता पुणो कसिणं ॥ ८ ॥ भावे सब्बोदइओदयलक्खणओ जहेव तह सेसा । इत्थ उ खओवसमिए अहिगारोऽसेससव्वे य ॥ १८९ ॥ भा० । कम्ममवज्जं जं गरहिअंति कोहाइणो व चत्तारि । सह तेण जो उ जोगो पच्चक्खाणं हवइ तस्स ॥ १०५० ॥ दव्वे मणवइकाए जोगा दव्वा दुहा उ भावंमि । जोगो सम्मत्ताई पसत्थ इअरो उ विवरीओ ॥ १ ॥ दव्वंमि निण्हगाई निव्विसयाई य होइ खित्तंमि । भिक्खाईणमदाणे अइच्छ भावे पुणो दुविहं ॥ २ ॥ सुअणोसुअ सुअ दुविहं पुव्वमपुव्वं तु होइ नायव्वं । नोसुअपच्चक्खाणं मूले तह उत्तरगुणे य ॥ ३ ॥ जावदवधारणंमि जीवणमवि पाणधारणे भणियं । आ पाणधारणाओ पावनिवित्ती इहं अत्थो ॥ ४ ॥ नामं ठवणा दविए ओहे भव तब्भवे य भोगे य । संजम जस कित्तीजीवियं च तं भण्णई दसहा ॥ ५ ॥ दव्वे सच्चित्ताई आउअसहव्वया भवे ओहे । नेरइयाईण भवे तब्भव तत्थेव उप्पत्ती ॥ १९० ॥ भाष्यं । भो- गंमि चक्किमाई संजमजीयं तु संजयजणस्स । जसकित्ती य भगवओ संजमनरजीवअहिगारो ॥ १ ॥ भाष्यं । सीआलं भंगसयं तिविहं तिविहेण समिइगुत्तीहिं । सुत्तप्फासिअनिज्जुत्ति- वित्थरत्थो गओ एवं ॥ ६ ॥ सामाइअं करेमी पच्चक्खामी पडिक्कमामित्ति । पच्चुप्पन्नमणागयअईअकालाण गहणं तु ॥ ७ ॥ तिविहेणंति न जुत्तं पडिवयविहिणा समाहिअं जेण । अत्थ- विगप्पणयाए गुणभावणयत्ति को दोसो ? ॥ ८ ॥ दव्वम्मि निण्हगाई कुलालमिच्छंति तत्थुदाहरणं । भावंमि तदुवउत्तो मिआवई तत्थुदाहरणं ॥ ९ ॥ सचरित्तपच्छयावो निंदा तीए चउक्कनिकखेवो । दव्वे चित्तयरसुआ भावेसु बहू उदाहरणा ॥ १०६० ॥ गरहावि तहाजाइअमेव नवरं परप्पगासणया । दव्वंमि मरुअनायं भावेसु बहू उदाहरणा ॥ १ ॥ दव्वविउस्सग्गे खलु पसन्नचंदो भवे उदाहरणं । पडिआगयसंवेगो भावंमिवि होइ सो चेव ॥ २ ॥ सावज्जजोगविरओ तिविहंतिविहेण वोसिरिय पावं । सामाइअमाईए एसोऽणुगंमो परिसमत्तो ॥ ३ ॥ विज्जा- चरणनएसुं सेससमोआरणं तु कायव्वं । सामाइअनिज्जुत्ती सुभासिअत्था परिसमत्ता ॥ ४ ॥ नायंमि गिण्हियव्वे अगिण्हिअव्वम्मि चेव अत्थंमि । जइअव्वमेव इय जो उवएसो सो नओ नामं ॥ ५ ॥ सव्वेसिंपि नयाणं बहुविहवत्तव्वयं निसामित्ता । तं सव्वनयविसुद्धं जं चरणगुणट्ठिओ साहू ॥ ६ ॥ सामाइयनिज्जुत्ती समत्ता । चउवीसगत्थयस्स उ णिकखेवो होइ णामणिप्फ- ण्णो । चउवीसगस्स छक्को थयस्स उ चउव्विहो होइ ॥ ७ ॥ नामं ठवणा दविए खित्ते काले तहेव भावे य । चउवीसगस्स एसो निकखेवो छव्विहो होइ ॥ १९२ ॥ भाष्यं । नामं ठवणा दविए भावे य थयस्स होइ निकखेवो । दव्वथओ पुप्फाई संतगुणुक्कित्तणा भावे ॥ ३ ॥ दव्वथओ भावथओ दव्वथओ बहुगुणत्तिबुद्धि सिआ । अनिउणमइवयणमिणं छज्जीवहिअं जिणा बिंति ॥ ४ ॥ छज्जीवकायसंजमु दव्वथए सो विरुज्झई कसिणो । तो कसिणसंजमविऊ पुप्फाईअं न इच्छंति ॥ ५ ॥ अकसिणपवत्तगाणं विरयाविरयाण एस खलु जुत्तो । संसारपयणुकरणो दव्वथए कूवदिट्ठतो ॥ १९६ ॥ भाष्यं । लोगस्सुज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ सूत्रगाथा १ ॥ णामं ठवणा दविए खित्ते काले भवे य भावे य । पज्जवलोगे य तहा अट्ठविहो लोगणिकखेवो ॥ १०६८ ॥ जीवमजीवे रूवमरूवी सपएसमप्पएसे य । जाणाहि दव्वलोगं णिच्चमणिच्चं च जं दव्वं ॥ ७ ॥ भाष्यं । गइ सिद्धा भविआया अभविअ पुग्गल अणागयद्धा य । तीअद्ध तिच्चि काया जीवाजीवट्ठिई चउहा ॥ ८ ॥ आगासस्स पएसो उड्ढं च अहे य तिरियलोए य । जाणाहि खित्तलोगं अणंतजिणदेसिअं सम्मं ॥ ९ ॥ समयोऽऽवलिअमुहुत्ता दिवसमहोरत्त पक्ख मासा य । संवच्छरजुगपलिआ सागरओसप्पिपरिअट्ठा ॥ २०० ॥ णेरइअदेवमणुआ तिरिक्खजो- णीगया य जे सत्ता । तंमि भवे वट्ठंता भवलोगं तं विआणाहि ॥ १ ॥ ओदइए उवसमिए खइए य तहा खओवसमिए य । परिणामि सन्निवाए य छव्विहो भावलोगो उ ॥ २ ॥ तिच्चो रागो य दोसो य, उइन्ना जस्स जंतुणो । जाणाहि भावलोगं तं, अणंतजिणदेसियं सम्मं ॥ ३ ॥ दव्वगुणखित्तपज्जवभवाणुभावे य भावपरिणामे । जाण चउव्विहमेयं पज्जवलोगं स- मासेणं ॥ ४ ॥ वन्नरसगंधसंठाणफासठाणगइवन्नभेए य । परिणामे य बहुविहे पज्जवलोगं विआणाहि ॥ २०५ ॥ भा० । आलुक्कइ य पलुक्कइ लुक्कइ संलुक्कइ य एगट्ठा । लोगो अट्ठविहो खलु तेणेसो बुच्चई लोगो ॥ ९ ॥ दुविहो खलु उज्जोओ नायव्वो दव्वभावसंजुत्तो । अग्गी दव्वुज्जोओ चंदो सूरु मणी विज्जू ॥ १०७० ॥ नाणं भावुज्जोओ जह भणियं सब्बभावदंसीहिं । तस्स उवओ- गकरणे भावुज्जोयं वियाणाहि ॥ १ ॥ लोगस्सुज्जोयगरा दव्वुज्जोएण न हु जिणा हुंति । भावुज्जोअगरा पुण हुंति जिणवरा चउवीसं ॥ २ ॥ दव्वुज्जोउज्जोओ पगासई परिमियम्मि खित्तंमि । भावुज्जोउज्जोओ लोगालोगं पगासेइ ॥ ३ ॥ दुह दव्वभावधम्मो दव्वे दव्वस्स दव्वमेवऽहवा । तित्ताइसभावो वा गम्माइत्थी कुलिंगो वा ॥ ४ ॥ दुह होइ भावधम्मो सुय चरणे वा सुयंमि सज्झाओ । चरणंमि समणधम्मो खंतीमाई भवे दसहा ॥ ५ ॥ नामं ठवणात्तित्थं दव्वत्तित्थं च भावत्तित्थं च । एक्केक्कंपिय इत्तोऽणेगविहं होइ णायव्वं ॥ ६ ॥ दाहोवसमं तण्हा • (३००)

इलेयणं मलपवाहणं चैव । तिहिं अत्येहिं निउत्तं तम्हा तं दव्वओ तित्थं ॥ ७ ॥ कोहंमि उ निग्गहिए दाहस्सोवसमणं हवइ तित्थं । लोहंमि उ निग्गहिए तण्हावुच्छेअणं होइ ॥ ८ ॥ अट्टविहं कम्मरयं बहुएहिं भवेहिं संचिअं जम्हा । तवसंजमेण धुव्वइ तम्हा तं भावओ तित्थं ॥ ९ ॥ दंसणनाणचरित्तेसु निउत्तं जिणवरेहिं सब्बेहिं । एएण होइ तित्थं एसो अन्नोऽविपज्जाओ ॥ १०८० ॥ णामकरो ठवणकरो दव्वकरो खित्तकाल भावकरो । एसो खलु करगस्स उ णिक्खेवो छव्विहो होइ ॥ १ ॥ गोमहिसुट्टिपसूणं छगलीणंपिय करा मुणेयव्वा । तत्तो य तणपल्लाले मुसकट्टंगारपल्ले य (करमेव) ॥ २ ॥ सीउंबरजंघाए बलिवहकरे घए य चम्मे य । चुल्लगकरे य भणिए अट्टारसमा(ऽऽ)करुप्पत्ती ॥ ३ ॥ खित्तंमि जंमि खित्ते काले जो जंमि होइ कालंमि । दुविहो य होइ भावे पसत्थु तह अप्पसत्थो य ॥ ४ ॥ कलहकरो डमरकरो असमाहिकरो अनिबुइकरो य । एसो उ अप्पसत्थो एवमाई मुणेयव्वो ॥ ५ ॥ अत्थकरो य हिअकरो कित्तिकरो गुणकरो जसकरो य । अभयंकर निव्वुइकरो कुलगर तित्थंकरंऽतकरो ॥ ६ ॥ जियकोहमाणमाया जियलोहा तेण ते जिणा हुंति । अरिणो हंता रयं हंता अरिहंता तेण वुच्चंति ॥ ७ ॥ कित्तेमि कित्तणिजे सदेवमणुआसुरस्स लोगस्स । दंसणनाणचरित्ते तवविणओ दंसिओ जेहिं ॥ ८ ॥ चउवीसंति य संखा उसभाईआ उ भण्णमाणा उ । अविस्सहग्गहणा पुण एरवयमहाविदेहेसुं ॥ ९ ॥ कसिणं केवलकप्पं लोगं जाणंति तहय पासंति । केवलचरित्तनाणी तम्हा ते केवली हुंति ॥ १०९० ॥ उसभमजिअं च वंदे संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ सूत्रगाथा २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं सीअल सिज्जंस वासुपूज्जं च । विमलमणंतं च जिणं धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ सूत्रगाथा ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्टनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ सूत्रगाथा ४ ॥ उरूसु उसभलंछण उसभं सुमिणंमि तेण उसभजिणो । अक्खेसु जेण अजिआ जणणी अजिओ जिणो तम्हा ॥ १ ॥ अभिसंभूआ सासत्ति संभवो तेण वुच्चई भयवं । अभिणंदई अभिक्खं सक्को अभिणंदणो तेण ॥ २ ॥ जणणी सव्वत्थ विणिच्छएसु सुमइत्ति तेण सुमइजिणो । पउमसयणंमि जणणीइ डोहलो तेण पउमाभो ॥ ३ ॥ गब्भगए जं जणणी जाय सुपासा तओ सुपासजिणो । जणणीए चंदपियणंमि डोहलो तेण चंदाभो ॥ ४ ॥ सव्वविहीसु य कुसला गब्भगए तेण होइ सुविहिजिणो । पिउणो दाहोवसमो गब्भगए सीयलो तेणं ॥ ५ ॥ महरिहसिज्जारुहणंमि डोहलो तेण होइ सिज्जंसो । पूएइ वासवो जं अभिक्खणं तेण वासुपूज्जो ॥ ६ ॥ विमलतणुव्वुद्धि जणणी गब्भगए तेण होइ विमलजिणो । रयणविचित्तमणंतं दामं सुमिणे तओऽणंतो ॥ ७ ॥ गब्भगए जं जणणी जाय सुधम्मत्ति तेण धम्मजिणो । जाओ असिवोवसमो गब्भगए तेण संतिजिणो ॥ ८ ॥ थूहं रयणविचित्तं कुंथुं सुमिणंमि तेण कुंथुजिणो । सुमिणे अरं महरिहं पासइ जणणी अरो तम्हा ॥ ९ ॥ वरसुरहिमल्लसयणंमि डोहलो तेण होइ मल्लिजिणो । जाया जणणी जं सुव्वयत्ति मुणिसुव्वओ तम्हा ॥ ११०० ॥ पणया पच्चंतनिवा दंसियमित्ते जिणंमि तेण नमी । रिट्टरयणं च नेमिं उप्पयमाणं तओ नेमी ॥ १ ॥ सप्पं सयणे जणणी जं पासइ तमसि तेण पासजिणो । वड्ढइ नायकुलंतिय तेण जिणो वद्धमाणत्ति ॥ २ ॥ एवंमए अभिथुआ विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसंपि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ सूत्रगाथा ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिआ जेए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ सूत्रगाथा ६ ॥ थुत्तिथुणवंदणनमंसणाणि एगट्टिआणि एयाणि । कित्तण पसंसणाविय विणय पणामे य एगट्टा ॥ ३ ॥ मिच्छत्तमोहणिज्जा नाणावरणा चरित्तमोहाओ । तिविहतमा उम्मुक्का तम्हा ते उत्तमा हुंति ॥ ४ ॥ आरुग्गबोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं च मे दिंतु । किं न हु निआणमेअंति ? विभासा इत्थ कायव्वा ॥ ५ ॥ भासा असच्चमोसा नवरं भत्तीइ भासिआ एसा । न हु खीणपिज्जदोसा दिंति समाहिं च बोहिं च ॥ ६ ॥ जं तेहिं दायव्वं तं दिन्नं जिणवरेहिं सब्बेहिं । दंसणनाणचरित्तस्स एस तिविहस्स उवएसो ॥ ७ ॥ भत्तीइ जिणवराणं खिज्जंती पुव्वसंचिआ कम्मा । आयरिअनमुक्कारेण विज्जा मंता य सिज्जंति ॥ ८ ॥ भत्तीइ जिणवराणं परमाए खीणपिज्जदोसाणं । आरुग्गबोहिलाभं समाहिमरणं च पावंति ॥ ९ ॥ लद्धिअं च बोहिं अकरिंतोऽणागयं च पत्थंतो । दच्छिसि जह तं विव्वल ! इमं च अन्नं च चुक्किहिसि ॥ १११० ॥ लद्धिअं च बोहिं अकरिंतोऽणागयं च पत्थंतो । अन्नं दाइं बोहिं लब्भिसि कयरेण मुट्ठेणं ? ॥ १ ॥ चेइयकुलगणसंघे आयरिआणं च पवयण सुए य । सब्बेसुवि तेण कयं तवसंजममुज्जमंतेणं ॥ २ ॥ चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ सूत्रगाथा ७ ॥ चंदाइच्चगहाणं पहा पयासेइ परिमिअं खित्तं । केवलिअनाणलंभो लोगालोगं पगासेइ ॥ ३ ॥ चतुर्विंशत्यध्ययनं २ ॥ वंदण चिइ किइकम्मं पूयाकम्मं च विणयकम्मं च । कायव्वं कस्स व केण वावि काहे व कइखुत्तो ? ॥ ४ ॥ कइओणयं कइसिरं कइहि य आवस्सएहिं परिसुद्धं । कइदोसविप्पमुक्कं किइकम्मं कीस कीरइ वा ? ॥ ५ ॥ सीयले खुड्डए कण्हे, सेवए पालए तहा । पंचेते दिट्ठंता, किइकम्मे होंति णायव्वा ॥ ६ ॥ असंजयं न वंदिज्जा, मायरं पियरं गुरुं । सेणावइं पसत्थारं, रायाणं देवयाणि य ॥ ७ ॥ समणं वंदिज्ज मेहावीं, संजयं सुसमप्हियं । पंचसमियं तिगुत्तं, अस्संजमदुगुंछगं ॥ ८ ॥ पंचण्हं किइकम्मं मालामरुएण होइ दिट्ठंतो । वेरुलिय नाणदंसण णीयावासे य जे दोसा ॥ ९ ॥ पासत्थो ओसन्नो होइ कुसीलो तहेव संसत्तो ।

१२०१ आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं, निर्युक्ति + अज्जयणी-२

मुनि दीपरत्नसागर

अहलंदोऽविय एए अवंदणिजा जिणमयंमि ॥२०॥ पासत्थाई वंदमाणस्स नेव किच्ची न निज्जरा होइ । कायकिलेसं एमेव कुणई तह कम्मबंधं च ॥११२०॥ जे बंभचेरभट्टा पाए उइडंति बंभयारीणं । ते होंति कुं(टुं)ट्मुंटा बोही य सुदुल्लहा तेसिं ॥१॥ सुदुत्तरं नासंती अप्पाणं जे चरित्तपब्भट्टा । गुरुजण वंदाविति सुसमण जहुत्तकारिं च ॥२॥ असुइट्टाणे पडिया चंपग-माला न कीरई सीसे । पासत्थाईठाणेसु वट्टमाणा तह अपुजा ॥३॥ पक्कणकुले वसंतो सउणीपारोऽवि गरहिओ होइ । इय गरहिया सुविहिया मज्झि वसंता कुसीलाणं ॥४॥ सुचिरंपि अच्छमाणो वेरुलिओ कायमणीय उम्मीसो । नोवेइ कायभावं पाहण्णगुणेण नियएणं ॥५॥ भावुगअभावुगाणि य लोए दुविहाणि होंति दव्वाणि । वेरुलिओ तत्थ मणी अभावुगो अन्नदबेहिं ॥६॥ जीवो अणाइनिहणो तब्भावणभाविओ य संसारे । खिप्पं सो भाविज्जइ मेलणदोसाणुभावेणं ॥७॥ अंबस्स य निंबस्स य दुण्हंपि समागयाइं मूलाइं । संसग्गीइ विणट्टो अंबो निंबत्तणं पत्तो ॥८॥ सुचिरंपि अच्छमाणो नलथंभो उच्छुवाडमज्झंमि । कीस न जायइ महुरो जइ संसग्गी पमाणं ते ? ॥९॥ ऊणगसयभागेणं बिंबाइं परिणमंति तब्भावं । लवणागराइसु जहा वजेह कुसीलसंसग्गिं ॥११३०॥ जह नाम महुरसलिलं सायरसलिलं कमेण संपत्तं । पावेइ लोणभावं मेलणदोसाणुभावेणं ॥१॥ एवं खु सीलवंतो असीलवंतेहिं मीलिओ संतो । पावइ गुणपरिहाणिं मेलणदोसाणुभावेणं ॥२॥ खणमवि न खमं काउं अणाययणसेवणं सुविहियाणं । हंदि समुइमइगयं उदयं लवणत्तणमुवेइ ॥३॥ सुविहिय दु-विहियं वा नाहं जाणामि हं खु छउमत्थो । लिंगं तु पूययामी तिगरणसुद्धेण भावेणं ॥४॥ जइ ते लिंग पमाणं वंदाही निण्हवे तुमे सब्बे । एए अवंदमाणस्स लिंगमवि अप्पमाणं ते ॥५॥ जइ लिंगमप्पमाणं न नजई निच्छएण को भावो ? । दट्ठूण समणलिंगं किं कायवं तु समणेणं ? ॥६॥ अप्पुवं दट्ठूणं अब्भुट्टाणं तु होइ कायवं । साहुम्मि दिट्टपुव्वे जहारिहं जस्स जं जोग्गं ॥७॥ मुक्कधुरासंपागडसेवी चरणकरणपब्भट्टे । लिंगावसेसमित्ते जं कीरइ तं पुणो वोच्छं ॥८॥ वायाइ नमोक्कारो हत्थुस्सेहो य सीसनमणं च । संपुच्छणं लोभवंदणं वावि ॥९॥ परियाय परिस पुरिसे खित्तं कालं च आगमं नच्चा । कारणजाए जाए जहारिहं जस्स जं जुग्गं ॥११४०॥ परियाय बंभचेरं परिस विणीया सि पुरिस णच्चा वा । कुलकजा-दायत्ता आघवओ गुणागमसुयं वा ॥२०६॥ भाष्यं । एताइं अकुबंतो जहारिहं अरिहदेसिए मग्गे । न भवइ पवयणभत्ती अभत्तिमंतादओ दोसा ॥१॥ तित्थयरगुणा पडिमासु नत्थि निस्संसयं वियाणंतो । तित्थयरेत्ति नमंतो सो पावइ निज्जरं विउलं ॥२॥ लिङ्गं जिणपणत्तं एव नमंतस्स निज्जरा विउला । जइवि गुणविप्पहीणं वंदइ अज्झप्पसोहीए ॥३॥ संता तित्थयरगुणा तित्थयरे तेसिमं तु अज्झप्पं । न य सावजा किरिया इयरेसु धुवा समणुण्णा ॥४॥ जह सावजा किरिया नत्थि य पडिमासु एवमियरावि । तयभावे नत्थि फलं अह होइ अहेउगं होइ ॥५॥ कामं उभयाभावो तहवि फलं अत्थि मणविसुद्धीए । तीए पुण विसुद्धीइ कारणं होंति पडिमाउ ॥६॥ जइविय पडिमाउ जहा मुणिगुणसंकप्पकारणं लिंगं । उभयमवि अत्थि लिंगे न य पडिमासूभयं अत्थि ॥७॥ नियमा जिणेसु उ गुणा पडिमाओ दिस्स जे मणे कुणइ । अगुणे उ वियाणंतो कं नमउ मणे गुणं काउं ? ॥८॥ जह वेलंबगलिंगं जाणंतस्स नमओ हवइ दोसो । निदंघसामिय नाऊण वंदमाणे धुवो दोसो ॥९॥ रूपं टंकं विसमाहयक्खरं नविय रूवओ छेओ । दोण्हंपि समाओगे रूवो छेयत्तणमुवेइ ॥११५०॥ रूपं पत्तेयबुद्धा टंकं जे लिंगधारिणो समणा । दव्वस्स य भावस्स य छेओ समणो समाओगे ॥१॥ कामं चरणं भावो तं पुण णाणसहिओ समाणेई । न य नाणं तु न भावो तेण र णाणिं पणिवयामो ॥२॥ तम्हा ण बज्झकरणं मज्झ पमाणं न यावि चारित्तं । नाणं मज्झ पमाणं नाणे य ठिअं जओ तित्थं ॥३॥ नाऊण य सब्भावं अहिगमसंमंपि होइ जीवस्स । जाईसरणनिसग्गुग्गयावि न निरागमा दिट्ठी ॥४॥ नाणं सविसयनिययं न नाणमित्तेण कज्जनिप्फत्ती । मग्गणू दिट्ठंतो होइ सचिट्ठो अचिट्ठो य ॥५॥ आउज्जनट्टकुसलावि नट्टिया तं जणं न तोसेइ । जोगं अजुंजमाणी निदं खिसं च सा लहइ ॥६॥ इय लिंगनाणसहिओ काइयजोगं न जुंजई जो उ । न लहइ स मुक्खसुक्खं लहइ य निदं सपक्खाओ ॥७॥ जाणंतोऽविय तरिउं काइ-यजोगं न जुंजइ नईए । सो बुज्झइ सोएणं एवं नाणी चरणहीणो ॥८॥ गुणअहिए वंदणयं छउमत्थ गुणागुणे अयाणंतो । वंदिज्जा गुणहीणं गुणाहियं वावि वंदावे ॥९॥ आलएणं विहारेणं, ठाणाचंकमणेण य । सक्को सुविहिओ नाउं, भासावेणइएण य ॥११६०॥ आलएणं विहारेणं ठाणाचंकमणेण य । न सक्को सुविहिओ नाउं भासावेणइएण य ॥१॥ भरहो पस-न्नचंदो सब्भितरबाहिरं उदाहरणं । दोसुप्पत्तिगुणकरं न तेसि बज्झं भवे करणं ॥२॥ पत्तेयबुद्धकरणे चरणं नासंति जिणवरिंदाणं । आहच्चभावकहणे पंचहिं ठाणेहिं पासत्था ॥३॥ उम्मग्गदेसणाए चरणं नासंति जिणवरिंदाणं । वावण्णदंसणा खलु न हु लब्भा तारिसा दट्ठुं ॥४॥ जह णाणेणं न विणा चरणं नादंसणिस्स इय नाणं । न य दंसणं न भावो तेन र दिट्ठिं पणिवयामो ॥५॥ जुगवंपि समुप्पन्नं सम्मत्तं अहिगमं विसोहेइ । जह कयगमंजणाई जलदिट्ठीओ विसोहंति ॥६॥ जह २ सुज्झइ सलिलं तह २ रूवाइं पासई दिट्ठी । इय जह जह तत्तरुई तह तह तत्तागमो होइ ॥७॥ कारणकज्जविभागो दीवपगासाण जुगवजम्मेवि । जुगवुप्पन्नंपि तहा हेऊ नाणस्स सम्मत्तं ॥८॥ नाणस्स जइवि हेऊ सविसयनिययं तहावि

१२०२ आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं, निर्युक्ति

सम्मत्तं । तम्हा फल्लसंपत्ती न जुज्झई नाणपक्खेवि ॥ प्र० २१ ॥ जह तिक्खरुईवि नरो गंतुं देसंतरं नयविहूणो । पावेइ न तं देसं नयजुत्तो च्चव पाउणइ ॥ प्र० २२ ॥ इय नाणचरणहीणो सम्महि-
 टीवि मुखदेसं तु । पाउणइ नेय नाणाइसंजुओ च्चव पाउणइ ॥ प्र० २३ ॥ धम्मनियत्तमईया परलोगपरम्मुहा विसयगिद्धा । चरणकरणे असत्ता सेणियरायं ववइसंति ॥ ९ ॥ ण सेणियो आसि
 नया बहुस्सुओ. न यावि पन्नत्तिधरो न वायगो । सो आगमिस्साइ जिणो भविस्सई, समिक्ख पन्नाइ वरं खु दंसणं ॥ ११७० ॥ भट्टेण चरित्ताओ सुट्ठुयरं दंसणं गहेयच्चं । सिज्झंति
 चरणरहिया दंसणरहिया न सिज्झंति ॥ १ ॥ दसारसीहस्स य सेणियस्सा, पेढालपुत्तस्स य सच्चइस्स । अणुत्तरा दंसणसंपया तथा, विणा चरित्तेणऽहरं गइं गया ॥ २ ॥ सच्चाओवि गईओ
 अविरहिया नाणदंसणधरेहिं । ता मा कासि पमायं नाणेण चरित्तरहिएणं ॥ ३ ॥ सम्मत्तं अचरित्तस्स हुज्ज भयणाइ नियमसो नत्थि । जो पुण चरित्तजुत्तो तस्स उ नियमेण सम्मत्तं ॥ ४ ॥
 जिणवयणबाहिरा भावणाहिं उच्चट्टणं अयाणंता । नेरइयतिरियएगिंदिएहिं जह(नहु)सिज्झई जीवो ॥ ५ ॥ सुट्ठुवि सम्महिटी न सिज्झई चरणकरणपरिहीणो । जं च्चव सिद्धिमूलं मूढो तं च्चव
 नासेइ ॥ ६ ॥ दंसणपक्खो सावय चरित्तभट्टे य मंदधम्मे य । दंसणचरित्तपक्खो समणे परलोककंखिम्मि ॥ ७ ॥ पारंपरप्पसिद्धी दंसणनाणेहिं होइ चरणस्स । पारंपरप्पसिद्धी जह होइ
 तहऽन्नपाणाणं ॥ ८ ॥ जम्हा दंसणनाणा संपुण्णफलं न दिंति पत्तेयं । चारित्तजुया दिंति उ विसिस्सए तेण चारित्तं ॥ ९ ॥ उज्जममाणस्स गुणा जह हुंति संसत्तिओ तवसुएसुं । एमेव
 जहासत्ती संजममाणे कहां न गुणा ? ॥ ११८० ॥ अणिगूहतो विरियं न विराहेइ चरणं तवसुएसुं । जइ संजमेऽवि विरियं न निगूहिज्जा न हाविज्जा ॥ १ ॥ संजमजोएसु सया जे पुण संत-
 विरियावि सीयंति । कह ते विसुद्धचरणा बाहिरकरणात्ता हुंति ? ॥ २ ॥ आलंबणेण केणइ जे मन्ने संजमं पमायंति । न हु तं होइ पमाणं भूयत्थगवेसणं कुज्जा ॥ ३ ॥ सालंबणो पडंतो
 अप्पाणं दुग्गमेऽवि धारेइ । इय सालंबणसेवा धारेइ जइ असढभावं ॥ ४ ॥ आलंबणहीणो पुण निवट्टइ खलिओ अहे दुरुत्तारे । इय निक्कारणसेवी पडइ भवोहे अगाहंमि ॥ ५ ॥ जे
 जत्थ जया भग्गा ओगासं ते परं अविंदंता । गंतुं तत्थऽचयंता इमं पहाणंति घोसंति ॥ ६ ॥ नीयावासविहारं चेइयभत्तिं च अज्जियालाभं । विगईसु य पडिबंधं निहोसं चोइया बिति
 ॥ ७ ॥ जाहेविय परितंता गामागरनगरपट्टणमडंता । तो केइ नीयवासी संगमथेरं ववइसंति ॥ ८ ॥ संगमथेरायरिओ सुट्ठु तवस्सी तहेव गीयत्थो । पेहित्ता गुणदोसं नीयावासं पवन्नो
 उ ॥ ९ ॥ ओमे सीसपवासं अप्पडिबंधं अजंगमत्तं च । न गणंति एगखित्तं गणंति वासं निययवासी ॥ ११९० ॥ चेइयकुलगणसंघे अन्नं वा किंचि काउ निस्साणं । अहवावि अज्जवयरं
 तो सेवंती अकरणिज्जं ॥ १ ॥ चेइयपूया किं वयरसामिणा मुणियपुव्वसारेणं । न कया पुरियाइ ? तओ मुख्वंगं सावि साहूणं ॥ २ ॥ ओहावणं परेसिं सतित्थउब्भावणं च वच्छत्तं । न
 गणंति गणेमाणा पुव्वुच्चियपुप्फमहिमं च ॥ ३ ॥ अज्जियालाभे गिद्धा सएण लाभेण जे असंतुट्टा । भिक्खायरियाभग्गा अन्नियपुत्तं ववइसंति ॥ ४ ॥ अन्नियपुत्तायरिओ भत्तं पाणं च
 पुप्फचूलाए । उवणीयं भुंजंतो तेणेव भवेण अंतगडो ॥ ५ ॥ गयसीसगणं ओमे भिक्खायरियाअपच्चलं थेरं । न गणंति सहावि सढा अज्जियालाहं गवेसंता ॥ ६ ॥ भत्तं वा पाणं वा भुत्तूणं
 लावलवियमविसुद्धं । तो वज्जपडिच्छन्ना उदायणरिसिं ववइसंति ॥ ७ ॥ सीयल्लुक्खाणुचियं वएसु विगईगयेण जावितं । हट्टावि भणंति सढा किं आसि उदायणो न मुणी ? ॥ ८ ॥
 सुत्तत्थबालवुड्ढे य असहू दवाइआवईओ य । निस्साणपयं काउं संथरमाणावि सीयंति ॥ ९ ॥ आलंबणाण लोको भरिओ जीवस्स अजउकामस्स । जं जं पिच्छइ लोए तं तं आलंबणं
 कुणइ ॥ १२०० ॥ जे जत्थ जया जइया बहुस्सुया चरणकरणपन्नट्टा । जं ते समायरंती आलंबण मंदसड्डाणं ॥ १ ॥ जे जत्थ जया जइया बहुस्सुया चरणकरणसंपन्ना । जं ते समा-
 यरंती आलंबण तिव्वसड्डाणं ॥ २ ॥ दंसणनाणचरित्ते तवविणये निच्चकालपासत्था । एए अवंदणिज्जा जे जसघाई पवयणस्स ॥ ३ ॥ किइकम्मं च पसंसा सुहसीलजणम्मि कम्मबंधाय ।
 जे जे पमायठाणा ते ते उववूहिया हुंति ॥ ४ ॥ दंसणनाणचरित्ते तवविणये निच्चकालमुज्जुत्ता । एए उ वंदणिज्जा जे जसकारी पवयणस्स ॥ ५ ॥ किइकम्मं च पसंसा संविग्गजणंमि नि-
 ज्जरट्टाए । जे जे विरईठाणा ते ते उववूहिया हुंति ॥ ६ ॥ आयरिय उवज्झाए पवत्ति थेरे तहेव रायणिए । एएसिं किइकम्मं कायच्चं निज्जरट्टाए ॥ ७ ॥ मायरं पियरं वावि, जिट्टगं वावि
 भायरं । किइकम्मं न कारिज्जा, सच्चे राइणिए तहा ॥ ८ ॥ पंचमहच्चयजुत्तो अणलस माणपरिवज्जियमईओ । संविग्गनिज्जरट्टी किइकम्मकरो हवइ साहू ॥ ९ ॥ वक्खित्तपराहुत्ते य पमत्ते
 मा कयाइ वंदिज्जा । आहारं च करित्ते नीहारं वा जइ करेइ ॥ १२१० ॥ पसंते आसणत्थे य, उवसंते उवट्टिए । अणुन्नवित्तु मेहावी, किईकम्मं पउंजए ॥ १ ॥ पडिकमणे सज्झाए काउ-
 स्सग्गावराहपाहुणए । आलोयणसंवरणे उत्तमट्टे य वंदणयं ॥ २ ॥ चत्तारि पडिकमणे किइकम्मा तिन्नि हुंति सज्झाए । पुव्वण्हे अवरण्हे किइकम्मा चउदस हवंति ॥ ३ ॥ दुओणयं
 अहाजायं, किइकम्मं बारसावयं । चउस्सिरं तिगुत्तं च, दुपवेसं एगनिक्खमणं ॥ ४ ॥ अवणामा दुन्नऽहाजायं, आवत्ता बारसेव उ । सीसा चत्तारि गुत्तीओ, तिन्नि दो य पवेसणा ॥ ५ ॥
 एगनिक्खमणं च्चव, पणवीसं वियाहिया । आवस्सगेहिं परिसुद्धं, किइकम्मं जेहिं कीरई ॥ ६ ॥ किइकम्मंपि करित्तो न होइ किइकम्मनिज्जराभागी । पणवीसामन्नयरं साहू ठाणं विराहंतो
 १२०३ आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं, निर्युक्ति

॥ ७ ॥ पणवीसा परिसुद्धं किङ्कमं जो पउंजइ गुरूणं । सो पावइ निव्वाणं अचिरेण विमाणवासं वा ॥ ८ ॥ अणाढियं च थद्धं च, पविद्धं परिपिंडियं । टोलगइ अंकुसं चैव, तथा कच्छ-
भरिगियं ॥ ९ ॥ मच्छुद्धं मणसा पउट्टं तह य वेइयाबद्धं । भयसा चैव भयंतं, मित्ती गारवकारणा ॥ १२२० ॥ तेणियं पडिणियं चैव, रुद्धं तज्जियमेव य । सटं च हीलियं चैव, तथा विप-
त्तिउंचियं ॥ १ ॥ दिट्टमदिट्टं च तथा, सिंगं च करमोअणं । आलिट्टमणालिट्टं, ऊणं उत्तरचूलियं ॥ २ ॥ मूयं च ढढरं चैव, चूडलिं च अपच्छिमं । बत्तीसदोसपरिसुद्धं, किङ्कमं पउंजइ ॥ ३ ॥
कितिकम्मपि करित्तो न होइ किङ्कमनिज्जराभागी । बत्तीसामन्नयरं साहू ठाणं विराहितो ॥ ४ ॥ बत्तीसदोसपरिसुद्धं किङ्कमं जो पउंजइ गुरूणं । सो पावइ निव्वाणं अचिरेण विमाणवासं
वा ॥ ५ ॥ आवस्सएसु जह जह कुणइ पयत्तं अहीणमइरित्तं । तिविहकरणोवउत्तो तह तह से निज्जरा होइ ॥ ६ ॥ विणओवयार माणस्स भंजणा पूयणा गुरुजणस्स । तित्थयराण य
आणा सुअधम्माराहणाऽकिरिया ॥ ७ ॥ विणओ सासणे मूलं, विणीओ संजओ भवे । विणयाओ विप्पमुक्कस्स, कओ धम्मो कम्मो तवो ? ॥ ८ ॥ जम्हा विणयइ कम्मं अट्टविहं चाउ-
रंतमुक्खाए । तम्हा उ वयंति विऊ विणउत्ति विलीणसंसारा ॥ ९ ॥ इच्छामि खमासमणो ! वंदित्तं जावणिजाए निसीहियाए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अहो. कायं. काय. संफासं
खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे. ? खामेभि खमासमणो ! देवसियं वइक्कमं, आवस्सियाए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसि-
आए आसायणाए तित्तीसऽणयराए जंकिंचिमिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सब्बकालियाए सब्बमिच्छोवयाराए सब्बधम्माइक्कमणाए
आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि [सूत्रम् २] इच्छा य अणुन्नवणा अब्बाबाहं च जत्त जवणा य । अवरा-
हखामणावि य छट्ठाणा हुंति वंदणए ॥ १२३० ॥ नामं ठवणा दविए खित्ते काले तहेव भावे य । एसो खलु इच्छाए णिक्खेवो छविहो होइ ॥ १ ॥ नामं ठवणा दविए खित्ते काले तहेव
भावे य । एसो उ अणुण्णाए णिक्खेवो छविहो होइ ॥ २ ॥ नामं ठवणा दविए खित्ते काले तहेव भावे य । एसो उ उग्गहस्सा णिक्खेवो छविहो होइ ॥ ३ ॥ बाहिरखित्तंमि ठिओ अ-
णुन्नवित्ता मिउग्गहं फासे । उग्गहस्सेत्तं पविसे जाव सिरेणं फुसइ पाए ॥ ४ ॥ अब्बाबाहं दुविहं दव्वे भावे य जत्त जवणा य । अवराहखामणाविय सवित्थरत्थं विभासिज्जा ॥ ५ ॥ छंदे-
णऽणुजाणामि तहत्ति तुज्झंमि वट्टई एवं । अहमवि खामेभि तुमे वयणाइं वंदणरिहस्स ॥ ६ ॥ तेणवि पडिच्छियत्तं गारवरहिएण सुद्धहियएण । किङ्कमकारगस्सा संवेगं संजणंतेणं
॥ ७ ॥ आवत्ताइसु जुगवं इह भणिओ कायवायवावारो । दुण्हेगया व(न) किरिया जओ निसिद्धो अउ अजुत्तो ॥ ८ ॥ भिन्नविसयं निसिद्धं किरियादुग्गमेगया ण एगंमि । जोगतिगस्सवि
भंगियसुत्ते किरिया जओ भणिया ॥ ९ ॥ सीसो पढमपवेसे वंदित्तमावस्सिआए पडिकमिउं । बित्थियपवेसंमि पुणो वंदइ किं ? चालणा अहवा ॥ १२४० ॥ जह दूओ रायाणं णमिउं
कज्जं निवेइउं पच्छा । वीसज्जिओवि वंदिय गच्छइ साहूवि एमेव ॥ १ ॥ एयं किङ्कमविहिं जुंजंता चरणकरणमुव(मा)उत्ता । साहू खवंति कम्मं अणेगभवसंचियमणंतं ॥ २ ॥ वंद-
णनिज्जुत्ती । पडिकमणं पडिकमओ पडिकमियत्तं च आणुपुब्बीए । तीए पच्चुप्पन्ने अणागए चैव कालंमि ॥ ३ ॥ जीवो उ पडिक्कमओ असुहाणं पावकम्मजोगाणं । ज्ञाणपसत्था जोगा
जे ते ण पडिक्कमे साहू ॥ ४ ॥ पडिकमणं पडियरणा परिहरणा वारणा नियत्ती य । निंदा गरिहा सोही पडिकमणं अट्टहा होइ ॥ ५ ॥ नामं ठवणा दविए खित्ते काले तहेव भावे य ।
एसो पडिकमणस्सा णिक्खेवो छविहो होइ ॥ ६ ॥ नामं ठवणा दविए खित्ते काले तहेव भावे य । एसो पडियरणाए णिक्खेवो छविहो होइ ॥ ७ ॥ नामं ठवणा दविए परिरय परिहार
वज्जणाए य । अणुगह भावे य तथा अट्टविहा होइ परिहरणा ॥ ८ ॥ नामं ठवणा दविए खित्ते काले तहेव भावे य । एसो उ वारणाए णिक्खेवो छविहो होइ ॥ ९ ॥ नामं ठवणा दविए
खित्ते काले तहेव भावे य । एसो उ नियत्तीए णिक्खेवो छविहो होइ ॥ १२५० ॥ नामं ठवणा दविए खित्ते काले तहेव भावे य । एसो खलु निंदाए णिक्खेवो छविहो होइ ॥ १ ॥ नामं
ठवणा दविए खित्ते काले तहेव भावे य । एसो खलु गरिहाए णिक्खेवो छविहो होइ ॥ २ ॥ नामं ठवणा दविए खित्ते काले तहेव भावे य । एसो खलु मुद्धीए णिक्खेवो छविहो होइ
॥ ३ ॥ अद्धाणे पासाए दुद्धकाय विसभोयण तलाए । दो कन्नाओ पइमारिया य वत्थे य अगए य ॥ ४ ॥ जइ फुट्टा कणियारया चूयय ! अहिमासयंमि घुट्टंमि । तुह न स्वमं फुट्टेउं
जइ पच्चंता करिंति डमराइं ॥ ५ ॥ तरियव्वा य पइण्णा मरियत्तं वा समरि समत्थेणं । असरिसजणउल्लावा न हु सहियव्वा कुलप्पसूएणं ॥ ६ ॥ आलोवणमालुंचण वियडीकरणं च भाव-
सोही य । आलोइयंमि आराहणा अणालोइए भयणा ॥ ७ ॥ सपडिक्कमणो धम्मो पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्स । मज्झिमयाण जिणाणं कारणजाए पडिक्कमणं ॥ ८ ॥ जो जाहे
आवन्नो (जइ) साहू अन्नयरयंमि ठाणंमि । सो ताहे पडिकमई मज्झिमयाणं जिणवरणं ॥ ९ ॥ बावीसं तित्थयरा सामाइयसंजमं उवइसंति । छेउवठावणयं पुण वयन्ति उसभो य
वीरो य ॥ १२६० ॥ पडिकमणं देसिय राइयं च इत्तरियमावकहियं च । पक्खिय चाउम्मासिय संवच्छर उत्तिमट्टे य ॥ १ ॥ पंच य महव्वायइं राईल्लट्टाइं चाउजामो य । भत्तपरिण्णा य
तहा दुण्हंपिय आवकहियाइं ॥ २ ॥ उच्चारे पासवणे खेले सिंघाणए पडिक्कमणं । आभोगमणाभोगे सहसकारे पडिक्कमणं ॥ ३ ॥ मिच्छत्तपडिक्कमणं तहेव अस्संजमे य पडिक्कमणं । (३०१)

कसायाण पडिक्कमणं जोगाण य अप्पसत्थाणं ॥ ४ ॥ संसारपडिक्कमणं चउव्विहं होइ आणुपुत्रीए । भावपडिक्कमणं पुण तिविहंतिविहेण नेयव्वं ॥ ५ ॥ गन्धब्वनागदत्तो इच्छइ सप्पेहिं
 खिद्धिउं इहयं । सो जइ कहिंचि खजइ इत्थं हु दोसो न दायव्वो ॥ ६ ॥ तरुणदिवायरणयणो विज्जुलयाचंचलग्गजीहालो । घोरमहाविसदाढो उक्का इव पज्जलिय रोसो ॥ ७ ॥ डक्को
 जेण मणूसो कयमकयं न याणइ सुबहुयंपि । अदिस्समाणमच्चुं कह धिच्छसि तं महानागं ? ॥ ८ ॥ मेरुगिरितुंगसरिसो अट्टफणो जमलजुगलजीहालो । दाहिणपासंमि ठिओ माणेण
 विवट्टई नागो ॥ ९ ॥ डक्को जेण मणूसो थदो न गणेइ देवरायमवि । तं मेरुपव्वयनिभं कह धिच्छसि तं महानागं ? ॥ १२७० ॥ सललियविह्लहलगई सत्थिअलंलणफणंकिअपडागा ।
 मायामइआ नागी नियडिकवडवंचणाकुसला ॥ १ ॥ तं च सि वालग्गाही अणोसहिबलो य अपरिहत्थो य । सा य चिरसंचियविसा गहणंमि वणे वसइ नागी ॥ २ ॥ होही ते विणिवाओ
 तीसे दाढंतरं उवगयस्स । अप्पोसहिमंतबलो न हु अप्पाणं चिगिच्छिहिसि ॥ ३ ॥ उत्थरमाणो सव्वं महालयो पुन्नमेहनिग्घोसो । उत्तरपासंमि ठिओ लोहेण विवट्टई नागो ॥ ४ ॥ डक्को
 जेण मणूसो होइ महासागरुव्व दुप्पूरो । तं सबविससमुदयं कह धिच्छसि तं महानागं ? ॥ ५ ॥ एए ते पावाही चत्तारिवि कोहमाणमयलोभा । जेहिं सया संतत्तं जरियमिव जयं कल-
 कलेइ ॥ ६ ॥ एएहिं जो खजइ चउहिवि आसीविसेहिं पावेहिं । अवसस्स नरयपडणं णत्थि सि आलंबणं किंचि ॥ ७ ॥ एएहिं अहं खइओ चउहिवि आसीविसेहिं पावे(घोरे)हिं । विस-
 निग्घायणहेउं चरामि विविहं तवोकम्मं ॥ ८ ॥ सेवामि सेलकाणणमुसाणमुन्नघरक्खमूलाइं । पावाहीणं तेसिं खणमवि न उवेमि वीसंभं ॥ ९ ॥ अच्चाहारो न सहइ अइनिद्रेण विसया
 उइजंति । जायामायाहारो तंपि पकामं न इच्छामि ॥ १२८० ॥ ओसन्नऽकयाहारो अहवा विगईविवज्जियाहारो । जंकिंचिकयाहारो अवउज्झियथोवमाहारो ॥ १ ॥ थोवाहारो थोवभ-
 णिओ य जो होइ थोवनिदो य । थोवोवहिउवगरणो तस्स हु देवावि पणमंति ॥ २ ॥ सिद्धे नमंसिउणं संसारत्था य जे महाविज्जा । वोच्छामि दंडकिरियं सव्वविसनिवारिणं विज्जं ॥ ३ ॥
 सव्वं पाणइवायं पच्चक्खाई मि अलियवयणं च । सव्वमदत्तादाणं अब्बंभ परिग्गहं स्वाहा ॥ १२८४ ॥ नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं नमो उवज्झायाणं नमो लोए सब-
 साहूणं, 'एसो पंचनमुक्कारो, सब्बपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥ करेमि भंते ! ०, चत्तारि मंगलं-अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवल्लिपणत्तो
 धम्मो मंगलं । सू० ३ । चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवल्लिपणत्तो धम्मो लोगुत्तमो । सू० ४ । चत्तारि सरणं पवज्जामि-अरिहंते सरणं पवज्जा-
 मि सिद्धे सरणं पवज्जामि साहू सरणं पवज्जामि केवल्लिपणत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि । सू० ५ । इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ, उ-
 स्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतितो अणायारो अणिच्छियव्वो असमणपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हं
 महव्वयाणं लण्हं जीवणिकायाणं सत्तण्हं पिडेसणाणं अट्टण्हं पवयणमाऊणं नवण्हं बंभचेरगुत्तीणं दसविहे समणधम्मे समणाणं जोगाणं जं खंडिअं जं विराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कडं
 । सूत्रं ६ । 'पडिसिद्धाणं करणे किच्चाणमकरणे य पडिक्कमणं । असदहणे य तथा विवरीयपरूवणाए य ॥ १२८५ ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं ईरियावहियाए विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे
 बीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसाउत्तिंगपणगदगमट्टिमक्कडासंताणासंक्रमणे जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया, अभिहया वत्तिआ लेसिया
 संघाइआ संघट्टिआ परिआविआ किलामिआ उद्विआ ठाणाओ ठाणं संकामिआ जीविआओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं । सूत्रं ७ । इच्छामि पडिक्कमिउं पगामसिज्जाए
 निगामसिज्जाए संथाराउव्वट्टणाए परियट्टणाए आउंटणपसारणाए छप्पइसंघट्टणाए कूइए कक्कराइए छिइए जंभाइए आमोसे ससरक्खामोसे आउलमाउलाए सोअणवत्तिआए इत्थी-
 विप्परिआसियाए दिट्ठीविप्परिआसियाए मणविप्परिआसियाए पाणभोयणविप्परिआसियाए जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं । सू० ८ । पडिक्कमामि गोयरचरियाए
 भिक्खायरियाए उग्घाडकवाडउग्घाडणाए साणावच्छादारासंघट्टणाए मंडीपाहुडिआए बलिपाहुडिआए ठवणापाहुडिआए संकिए सहसागारिए अणेसणाए पाणभोयणाए बीयभो-
 यणाए हरियभोयणाए पच्छेकम्मियाए पुरेकम्मियाए अदिट्टहडाए दगसंसट्टहडाए रयसंसट्टहडाए पारिसाडणियाए पारिठावणियाए ओहासणभिक्खाए जं उग्गमेणं उप्पायणेसणाए
 अपरिसुद्धं परिगहियं परिभुत्तं वा जं न परिट्टवियं तस्स मिच्छामि दुक्कडं । सू० ९ । पडिक्कमामि चाउक्कालं सज्झायस्स अकरणयाए उभओकालं भंडोवगरणस्स अप्पडिलेहणयाए
 दुप्पडिलेहणयाए अपमज्जणाए दुप्पमज्जणाए अइक्कमे वइक्कमे अइयारे अणायारे जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं । सू० १० । पडिक्कमामि एगविहे असं-
 जमे, पडिक्कमामि दोहिं बन्धणेहिं-रागबन्धणेणं दोसबंधणेणं, पडि० तिहिं दण्डेहिं-मणदण्डेणं वयदण्डेणं कायदण्डेणं पडि० तिहिं गुत्तीहिं-मणगुत्तीए वयगुत्तीए कायगुत्तीए । सू०
 ११ । पडिक्कमामि तिहिं सल्लेहिं-मायासल्लेणं नियाणसल्लेणं मिच्छादंसणसल्लेणं पडि० तिहिं गारवेहिं-इड्डीगारवेणं रसगारवेणं सायागारवेणं पडि० तिहिं विराहणाहिं-णाणविराहणाए
 १२०५ आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं, ~~अवश्यकं~~ अवश्यकं ३७५५५५-४

दंसणविराहणाए चरित्तविराहणाए, पडि० चउहिं कसाएहिं-कोहकसाएणं माणकसाएणं मायाकसाएणं लोहकसाएणं, पडि० चउहिं सण्णाहिं-आहारसण्णाए भयसण्णाए मेहुणस-
ण्णाए परिग्गहसण्णाए, पडि० चउहिं विकहाहिं-इत्थीकहाए भत्तकहाए देसकहाए रायकहाए, पडि० चउहिं ज्ञाणेहिं-अट्टेणं ज्ञाणेणं रुद्धेणं ज्ञाणेणं धम्मणेणं ज्ञाणेणं सुक्केणं ज्ञाणेणं
[सू० १२] पडिक्कमामि पंचहिं किरियाहिं-काइयाए अहिगरणियाए पाउसियाए पारितावणियाए पाणाइवायकिरियाए [सू० १३] पडिक्कमामि पंचहिं कामगुणेहिं-सद्धेणं रूवेणं
रसेणं गंधेणं फासेणं, पडिक्कमामि पंचहिं महब्रएहिं-पाणाइवायाओ वेरमणं मुसावायाओ वेरमणं अदिण्णादाणाओ वेरमणं मेहुणाओ वेरमणं परिग्गहाओ वेरमणं, पडिक्कमामि पंचहिं
समिईहिं-ईरियासमिईए भासासमिईए एसणासमिईए आयाणभंडमत्तनिकखेवणासमिईए उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिट्ठावणियासमिईए [सू० १४] पारिट्ठावणियविहिं वो-
च्छामि धीरपुरिसपण्णत्तं। जं णाऊण सुविहिया पवयणसारं उवलहंति ॥ ६ ॥ एगिंदियनोएगिंदियपारिट्ठावणिआ समासओ दुविहा। एएसिं तु पयाणं पत्तेय परूवणं वोच्छं ॥ ७ ॥
पुढवी आउक्काए तेऊ वाऊ वणस्सई चेव। एगिंदिय पंचविहा तज्जाया तह य अतज्जाया ॥ ८ ॥ दुविहं तु होइ गहणं आयसमुत्थं च परसमुत्थं च। एक्केकंपिय दुविहं आभोगे तह अ-
णाभोगे ॥ ९ ॥ तज्जायपरिट्ठवणा आगरमाईसु होई बोद्धवा। अतज्जायपरिट्ठवणा कप्परमाईसु बोद्धवा ॥ २०७ ॥ भाष्यं। णोएगिंदिएहिं जा सा सा दुविहा होइ आणुपुब्बीए। तसपाणेहिं
सुविहिया! नायवा नोतसेहिं च ॥ १२९० ॥ तसपाणेहिं जा सा सा दुविहा होइ आणुपुब्बीए। विगलिंदियतसेहिं जाणे पंचिंदिएहिं च ॥ १ ॥ विगलिंदिएहिं जा सा सा तिविहा होइ आणु-
पुब्बीए। वियतियचउरो यावि य तज्जाया तहा अतज्जाया ॥ २ ॥ पंचिंदिएहिं जा सा सा दुविहा होइ आणुपुब्बीए। मणुएहिं च सुविहिया! नायवा नोयमणुएहिं ॥ ३ ॥ मणुएहिं खलु
जा सा सा दुविहा होइ आणुपुब्बीए। संजयमणुएहिं तहा नायवाऽसंजएहिं च ॥ ४ ॥ संजयमणुएहिं जा सा सा दुविहा होइ आणुपुब्बीए। सच्चित्तेहिं सुविहिया! अच्चित्तेहिं च नायवा
॥ ५ ॥ अणभोग कारणेण व नपुंसमाईसु होइ सच्चित्ता। वोसिरणं तु नपुंसे सेसे कालं पडिक्खिज्जा ॥ ६ ॥ असिवे ओमोयरिए रायदुद्धे भए व आगाढे। गेलन्न उत्तिमद्धे नाणे तवदंसण-
चरित्ते ॥ ७ ॥ कडिपट्टए य छिहली कत्तरिया भंडु लोय पाढे य। धम्मकह सन्नि राउल ववहार विक्किचणं कुज्जा ॥ ८ ॥ अज्झाविओ मि एतेहिं चेव पडिसेहो किंचऽहीतं ते?। छ-
लियकहादी कड्ढति कत्थ जती कत्थ छलिताइं? ॥ ९ ॥ पुद्दावरसंजुत्तं वेरग्गकरं सतंतमविरुद्धं। पोरणमद्धमागहभासाणियतं हवइ सुत्तं ॥ १३०० ॥ जे सुत्तगुणाभिहिता तद्विवरीयाइं
गाहिओ पुब्बिं। निच्छि(त्थि)ण्णकारणाणं सा चेव विगिंचणे जयणा ॥ १ ॥ कावालिए सरक्खे तद्वणियवसहलिंगरूवेणं। वेडंबगपव्वइए कायव्व विहीए वोसिरणं ॥ २ ॥ निववल्लभ-
हुपक्खंमि वावि तरुणवसहा मिणं बेति। भिन्नकहाओ भट्टा! ण घडइ इह वच्च परतित्थी ॥ ३ ॥ तुमए समगं आमंति निग्गओ भिक्खमाइलक्खेणं। नासइ भिक्खुगमाइसु छोदूण
तओवि य पलाइ ॥ ४ ॥ तिविहो य होइ जड्डो भासा सरीरे य करणजड्डो य। भासाजड्डो तिविहो जल मम्मण एलमूओ य ॥ ५ ॥ दंसणणाणचरित्ते तवे य समिईसु करणजोए य।
उवइट्टंमि न गेण्हइ जलमूओ एलमूओ य ॥ ६ ॥ णाणायट्ठा दिक्खा भासाजड्डो अपच्चलो तस्स। सो य बहिरो य नियमा गाहण उड्डाह अहिगरणे ॥ ७ ॥ तिविहो सरीरजड्डो पंथे
भिक्खे य होइ वंदणए। एएहिं कारणेहिं जड्डस्स न कप्पई दिक्खा ॥ ८ ॥ अद्धाणे पलिमंथो भिक्खायरियाए अपरिहत्थो य। दोसा सरीरजड्डे गच्छे पुण सो अणुण्णाओ ॥ ९ ॥
उड्डस्सासो अपरक्कमो य गेलन्नअग्गिअहिउदये। जड्डस्स य आगाढे गेलण्ण असमाहिमरणं च ॥ १३१० ॥ सेएण कक्खमाई कुत्था धुवणुप्पिलावणे पाणा। नत्थि गलओ य चोरो
निंदियमुंडाइ (व) वाए य ॥ १ ॥ इरियासमिई भासेसणा य आयाणसमिइगुत्तीसु। नवि ठाइ चरणकरणे कम्मदएणं करणजड्डो ॥ २ ॥ एसोवि न दिक्खिज्जइ उस्सग्गेणमह दिक्खिओ
होज्जा। कारणगएण केणइ तत्थ विहिं उवरि वोच्छामि ॥ ३ ॥ मोत्तुं गिलाणकज्जं दुम्मेहं पडियरइ जाव छम्मासा। एक्केके छम्मासा जस्स व दट्टुं विगिंचणया ॥ ४ ॥ जो पुण करणे
जड्डो उक्कोसं तस्स होति छम्मासा। कुलगणसंघनिवेयण एवं तु विहिं तहिं कुज्जा ॥ ५ ॥ आसुक्कारगिलाणे पच्चक्खाए व आणुपुब्बीए। अच्चित्तसंजयाणं वोच्छामि विहीइ वोसिरणं
॥ ६ ॥ एव य कालगयंमी मुणिणा सुत्तत्थगहियसारेणं। न हु कायव्व विसाओ कायव्वं विहीइ वोसिरणं ॥ ७ ॥ पडिलेहणा दिसा णंतए य काले दिया य राओ य। कुसपडिमा पाणग
नियत्तणे य तण सीस उवगरणे ॥ ८ ॥ उट्टाण णामगहणे पयाहिणे काउसग्गकरणे य। खमणे अ असज्झाए तत्तो अवलोयणे चेव ॥ ९ ॥ जहियं तु मासकप्पं वासावासं च संवसे साहू।
गीयत्था पढमं चिय तत्थ महाथंडिलं पेहे ॥ प्र० २४ ॥ अवरदक्खिणा दक्खिणा य अवरा य दक्खिणापुद्दा। अवरुत्तरा अ पुद्दा उत्तरपुद्दुत्तरा चेव ॥ १३२० ॥ पउरन्नपाण पढमा बीयाए
भत्तपाण ण लहंति। तइयाए उवहिमाई नत्थि चउत्थीए सज्झाओ ॥ १ ॥ पंचमियाए असंखडि छट्ठीए गणविभेयणं जाण। सत्तमिए गेलन्नं मरणं पुण अट्टमी चिति ॥ २ ॥ पुब्बं दवा-
लोयण पुब्बिं गहणं च णंतकट्टस्स। गच्छंमि एस कप्पो अनिमित्ते होउवक्कमणं ॥ ३ ॥ सहसा कालगयंमी मुणिणा सुत्तत्थगहियसारेणं। न विसाओ कायव्वो कायव्व विहीइ वोसिरणं
१२०६ आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं, नित्यं विना + अस्वयं विना - ४

॥४॥ जं वेलं कालगओ निक्कारण कारणे भवि निरोहो । छेयण बंधण जग्गण काइयमत्ते य इत्थउडे ॥५॥ अन्नाविट्टु सरिरे पंता वा देवया उ उट्टेजा । काइयं डब्बहत्येण भा उट्टे बुज्झ गुज्झया ! ॥६॥ वित्तासेज हसेज व भीमं वा अट्टहास मुंचेजा । अभीएणं तत्थ उ कायब्व विहीइ वोसिरणं ॥७॥ दोसि य दिवइदखेत्ते दब्भमया पुत्तला उ कायब्व । समखेत्तंमि उ एक्को अवट्टडभीए ण कायब्वो ॥८॥ तिण्णेव उत्तराइं पुणब्वसू रोहिणी विसाहा य । एए छन्नक्खत्ता पणयालमुहुत्तसंजोगा ॥९॥ अस्सिणि कत्तिय मियसिर पुस्सो मह फग्गु इत्थ चित्ता य । अणुराह मूल साढा सवण धणिट्ठा य भइवया ॥ १३३० ॥ तह रेवइत्ति एए पन्नरस हवंति तीसइमुहुत्ता । नक्खत्ता नायब्व परिट्टवणविहीय कुसलेणं ॥ १ ॥ सयभिसया भरणीओ अहा अस्सेस साइ जेट्ठा य । एए छन्नक्खत्ता पन्नरसमुहुत्तसंजोगा ॥ २ ॥ सुत्तत्थतदुभयविऊ पुरओ घेत्तूण पाणय कुसे य । गच्छइ य जइ उड्डाहो (सागरियं) परिट्टवेऊण आयमणं ॥ ३ ॥ थंडिलवाघाएणं अहवावि अणिच्छिण्ण अणाभोगा । भमिऊण उवागच्छे तेणेव पहेण न नियत्ते ॥ ४ ॥ कुसमुट्ठी एगाए अब्बोच्छिण्णाइ एत्थ धाराए । संथारं संथरेजा सब्बत्थ समो उ कायब्वो ॥ ५ ॥ विसमा जइ होज तणा उवरिं मज्झे व हेट्टओ वावि । मरणं गेलणं वा तिण्हंपि उ निदिसे तत्थ ॥ ६ ॥ उवरिं आयरियाणं मज्झे वसहाण हेट्टि भिक्खूणं । तिण्हंपि रक्खणट्ठा सब्बत्थ समा उ कायब्वो ॥ ७ ॥ जत्थ व नत्थि तणाइं चुण्णेहिं तत्थ केसरेहिं वा । कायब्वोऽत्थ ककारो हेट्ट तकारं च बंधेजा ॥ ८ ॥ जाए दिसाएँ गामो तत्तो सीसं तु होइ कायब्वं । उट्टेतरक्खणत्था एस विही से समासेणं ॥ ९ ॥ चिण्हट्ठा उवगरणं दोसा उ भवे अचिंधकरणंमि । मिच्छत्त सो व राया व कुणइ गामाण वहकरणं ॥ १३४० ॥ वसहि निवेसण साही गाममज्झे य गामदारे य । अंतर उजाणंतर निसीहिया उट्टिए वोच्छं ॥ १ ॥ वसहि निवेसण साही गामदं चेव गाम मोत्तव्वो । मंडलकंडुहेसे निसीहिया चेव रज्जं तु ॥ २ ॥ वच्चंते जो उ कमो कलेवर पवेसणंमि वोच्चत्थो । णवरं पुण णाणत्तं गामदारंमि बोद्धव्वं ॥ २०८ ॥ भाष्यं । असिवाइकारणेहिं तत्थ वसंताण जस्स जो उ तवो । अभिगहियाणभिगहिओ सा तस्स उ जोगपरिवुड्ढी ॥ ३ ॥ गिण्हइ णामं एगस्स दोण्हमहवावि होज सव्वेसिं । खिप्पं तु लोयकरणं परिणणगणभेयवारसगं ॥ ४ ॥ जो जहियं सो तत्तो नियत्तइ पयाहिणं न कायब्वं । उट्टाणाई दोसा विराहणा बालवुद्धाणं ॥ ५ ॥ उट्टाणाई दोसा उ होंति तत्थेव काउसग्गंमि । आगम्मवस्सयं गुरुसगासे विहीए य उस्सग्गो ॥ ६ ॥ खमणे य असज्झाए राइणिय महाणिणाय नियगा वा । सेसेसु नत्थि खमणं नेव असज्झाइयं होइ ॥ ७ ॥ अवरज्जयस्स तत्तो सुत्तत्थविसारएहिं थिरएहिं । अवलोयण कायव्वा सुहासुहगइनिमित्तट्ठा ॥ ८ ॥ जं दिसि विकड्ढियं खलु सरिरयं अक्खुयं तु संचिक्खे । तं दिसि सिवं वयंती सुत्तत्थविसारया धीरा ॥ ९ ॥ एत्थ य-थलकरणे वेमाणिओ जोइसिओ वाणमंतर समंमि । ग(ख)इडाएँ भवणवासी एस गई से समासेणं ॥ १३५० ॥ एसो उ विही सव्वो कायव्वो सिवंमि जो जहिं वसइ । असिवे खमण विवड्ढी काउस्सग्गं च वज्जेज्जा ॥ १ ॥ एसो दिसाविभागो नायव्वो दुविहदव्वहरणं च । वो-सिरणं अवलोयण सुहासुहगइविसेसो य ॥ २ ॥ अस्संजयमणुएहिं जा सा दुविहा य आणुपुव्वीए । सच्चित्तेहिं सुविहिय ! अच्चित्तेहिं च नायव्वा ॥ ३ ॥ कप्पट्टगरूवस्स उ वोसिरणं संजयाण वसहीए । उदयपह बहुसमागम विपज्जाऽऽलोयणं कुज्जा ॥ ४ ॥ पडिणीयसरिरछुहणे वणीमगाईसु होइ अच्चित्तो । तो वेक्ख बोलकरणं विप्पजइ विगिचणं कुज्जा ॥ ५ ॥ णोमणुएहिं जा सा तिरिएहिं सा य होइ दुविहा उ । सच्चित्तेहिं सुविहिया ! अच्चित्तेहिं च नायव्वा ॥ ६ ॥ चाउलोयगमाईहिं जलचरमाईण होइ सच्चित्ता । जलथलखह कालगए अच्चित्त विगिचणं कुज्जा ॥ ७ ॥ नोतसपाणेहिं जा सा सा दुविहा होइ आणुपुव्वीए । आहारंमि सुविहिया ! नायव्वा नोयआहारे ॥ ८ ॥ आहारंमि उ जा सा सा दुविहा होइ आणुपुव्वीए । जाया चेव सुविहिया ! नायव्वा तह अजाया अ ॥ ९ ॥ आहाकम्मे अ तहा लोहविसे आभिओगिए गहिए । एएण होइ जाया वोच्छं से विहीएँ वेसिरणा ॥ १३६० ॥ एणंतमणावाए अच्चित्ते थंडिले गुरुवइट्टे । छारेण अक्कमित्ता तिट्ठाणं सावणं कुज्जा ॥ १ ॥ आयरिए य गिलाणे पाहुणए दुल्लहे सहसलाहे । एसा खलु अजाया वोच्छ से विहीएँ वोसिरणं ॥ २ ॥ एणंतमणावाए अच्चित्ते थंडिले गुरुवइट्टे । आलोएँ तिन्नि पुंजा तिट्ठाणं सावणं कुज्जा ॥ ३ ॥ नोआहारंमी जा सा सा दुविहा होइ आणुपुव्वीए । उवक्खणंमि सुविहिया ! नायव्वा नोयउवगरणे ॥ ४ ॥ उवगरणंमि उ जा सा सा दुविहा होइ आणुपुव्वीए । जाया चेव सुविहिया ! नायव्वा तह अजाया य ॥ ५ ॥ जाया य वत्थपाए वंका पाए य चीवरं कुज्जा । अजायवत्थपाए वोच्चत्थे तुच्छपाए य ॥ ६ ॥ २५ ॥ दुविहा जायमजाया अभिओग विसे य सुद्धऽसुद्धा य । एणं च दोण्णि तिण्णि य मुलुत्तरसुद्धजाणट्ठा (णाहि) ॥ ६ ॥ नोउवगरणे जा सा चउव्विहा होइ आणु-पुव्वीए । उच्चारे पासवणे खेले सिंघाणए चेव ॥ ७ ॥ उच्चारं कुव्वंतो छार्यं तसपाणरक्खणट्ठाए । कायदुयदिसाभिग्गहे य दो चेचऽभिगिण्हे ॥ ८ ॥ पुढवितसपाणसमुट्ठिएहिं एत्थं तु होइ चउभंगो । पढमं पयं पसत्थं सेसाणि उ अप्पसत्थाणि ॥ ९ ॥ गुरुमूलेवि वसंता अणुकूला जे न होंति उ गुरुणं । एएसिं तु पयाणं दूरंदूरेण ते होंति ॥ १३७० ॥ पारिट्ठावणिया । पडिक्क-मामि छहिं जीवनिकाएहिं-पुढवीकाएणं आउकाएणं तेउकाएणं वाउकाएणं वणस्सइकाएणं तसकाएणं, पडि० छहिं लेसाहिं-किण्हलेसाए नीललेसाए काउलेसाए तेउलेसाए पम्हले-

१२०७ आवश्यकं सनिर्यु- मूक्तिकं मूलमूत्रं, तिथिपत्रा

मुनि दीपरत्रसागर

साए मुक्कलेसाए । पढिकमामि सत्तहिं भयठाणेहिं । अट्टहिं मयठाणेहिं । नवहिं बंभचेरगुत्तीहिं । दसविहे समणधम्ममे । एक्कारसहिं उवासगपडिमाहिं । बारसहिं भिक्खुपडिमाहिं । तेरसहिं किरियाठाणेहिं सू० १५ इहपरलोयाऽऽदानं अकम्ह आजीव मरणमसिलोए । जाई कुल बल रूवे तव ईसरिए सुए लाहे ॥ १ ॥ (संगहणी) वसहिं कह निसिज्जिदिय कुड्डंतर पुव्वकीलिए पणीए । अइमायाहार विभूसणा य नव बंभगुत्तीओ ॥ २ ॥ खंती य महवऽज्जव मुत्ती तव संजमे य बोद्धवे । सच्चं सोयं आकिंचणं च बंभं च जइधम्मो ॥ ३ ॥ दंसण वय सामाइय पोसह पडिमा अबंभ सच्चित्ते । आरंभपेसउद्विट्ठवज्जए समणभूए य ॥ ४ ॥ मासाई सत्तंता पढमाबियतइय सत्तराइदिणा । अहराई एगराई भिक्खुपडिमाण बारसगं ॥ ५ ॥ अट्टाणट्टा हिंसाऽ-कम्हा दिट्ठी य मोसऽदिण्णे य । अब्भत्थ माण मेत्ते माया लोहे रियावहिया ॥ ६ ॥ (संग०) चउदसहिं भूयगामेहिं पन्नरसहिं परमाहम्मिएहिं सोल्लसहिं गाहासोल्लसएहिं सत्तरसविहे असंजमे अट्टारसविहे अबंभे एगुणवीसाए णायज्झयणेहिं वीसाए असमाहिंठाणेहिं सू० १६ एगिंदियसुहुमियरा सण्णियर पणिंदिया य सबीतिचउ । पज्जत्तापज्जत्ताभेएणं चोइस ग्गामा ॥ ७ ॥ (संग०) मिच्छदिट्ठी सासायणे य तह सम्ममिच्छदिट्ठी य । अबिरतसम्मदिट्ठी विरयाविरए पमत्ते य ॥ ८ ॥ तत्तो य अप्पमत्तो नियट्टिअनियट्टिवायरे सुहुमे । उवसंत खीणमोहे होइ सजोगी अजोगी य ॥ ९ ॥ अंबे अंबरिसी चेव, सामे अ सबले इय । रुद्धोवरूह काले य, महाकालेति आवरे ॥ १० ॥ असिपत्ते धणु कुंभे, बालू वेयरणी इय । खरस्सरे महाघोसे, एए पन्नरसाहिया ॥ ११ ॥ समयो वेयालीयं उवसग्गपरिणण थीपरिणणा य । निरयविभत्ती वीरत्थओ य कुसील्लण परिहासा ॥ २ ॥ वीरिय धम्म समाही मग्ग समोसरण अहतहं गंथो । जम-ईयं तह गाहा सोलसमं होइ अज्झयणं ॥ ३ ॥ पुढविदगअगणिमारूयवणस्सइबितिचउपणिंदिअजीवा । पेहुप्पेहपमज्जणपरिट्टवणमणोवईकाए ॥ ४ ॥ अउरालियं च दिव्वं मणवइकाएण करणजोएणं । अणुमोयणकारवणे करणे अट्टारसाबंभं ॥ ५ ॥ उक्खित्तणाए संघाडे, अंडे कुम्मे य सेलए । तुंबे य रोहिणी मल्ली, मागंदी चंदिमा इय ॥ ६ ॥ दावइवे उदगणाए, मंडुक्के ते-यली इय । नंदिफले अवरकंका, मायन्ने सुंसु पुंडरिया ॥ ७ ॥ दवदवचारऽपमज्जिय दुपमज्जियऽइरित्तसिज्जआसणिए । राइणिए परिभासिय थेरब्भूओवघाई य ॥ ८ ॥ संजलणकोहणो पिट्टिमंसिएऽभिक्खवऽभिक्खमोहारी । अहिकरणकरोईरण अकालसज्झायकारी य ॥ ९ ॥ ससरक्खपाणिपाए सहकरो कलहसंझकारी य । सूरप्पमाणभोती वीसइमे एसणाऽसमिए ॥ २० ॥ (संग०) एगवीसाए सबलेहिं बावीसाए परीसहेहिं तेवीसाए सुयगडज्झयणेहिं चउवीसाए देवेहिं पंच(पण)वीसाए भावणाहिं छव्वीसाए दसाकप्पववहाराणं उद्देसणकालेहिं सत्त-वीसविहे अणगारगुणे अट्टावीसइविहे आयारप्पकप्पे एगुणतीसाए पावसुयपसंगेहिं तीसाए मोहणियठाणेहिं एगतीसाए सिद्धाइगुणेहिं बत्तीसाए जोगसंगहेहिं सू० १७ तं जह उ हत्थकम्मं कुव्वंते मेहुणं च सेवंते । राइं च भुंजमाणे आहाकम्मं च भुंजंते ॥ २१ ॥ (संग०) तत्तो य रायपिंडं कीयं पामिच्च अभिहडंऽछेज्जं । भुंजंतं सबले ऊ पच्चक्खियऽभिक्ख भुंजंइ य(न्ते) ॥ २ ॥ छम्मासऽब्भंतरओ गणा गणं संकमं करंते य । मासऽब्भंतर तिण्णि य दगलेवा ऊ करेमाणो ॥ ३ ॥ मासऽब्भंतरओ वा माईठाणाइं तिन्नि कुणमाणो । पाणाइवाय उट्टिं कुव्वंत मुसं वयंते य ॥ ४ ॥ गिण्हंते य अदिण्णं आउट्टिं तह अणंतरहियाए । पुढवीय ठाणसेज्जं निसीहियं वावि चेतैइ ॥ ५ ॥ एवं ससिणिद्धाए ससरक्खा चित्तमंतसिललेलु । कोलावास-पइट्टा कोलघुणा तेसि आवासो ॥ ६ ॥ संडसपाणसबीए जाव उ संताणए भवे तहियं । ठाणाइ चेयमाणो सबले आउट्टिआए य ॥ ७ ॥ आउट्टि मूल कंदे पुप्फे य फले य बीय हरिए य । भुंजंते सबलेए तहेव संवच्छरस्संतो ॥ ८ ॥ दस दगलेवे कुव्वं तह माइट्टाण दस य वरिसन्तो । आउट्टिय सीओदग वग्घारिय हत्थमत्ते य ॥ ९ ॥ दव्वीए भायणेण व दिज्जंतं भत्तपाण घे-त्तुणं । भुंजइ सबलो एसो इगवीसो होइ नायव्वो ॥ ३० ॥ (व्याख्यान्तरं) वरिसंतो दस मासस्स तिन्नि दगलेव माइठाणाइं । आउट्टिया करंतो वहालियादिण्णमेहुण्णे ॥ १ ॥ निसिभत्त कम्म निवपिंड कीयमाई अभिक्खसंवरिए । कंदाई भुंजंते दउल्लहत्थाइगहणं च ॥ २ ॥ सच्चित्तसिलाकोले अइरावणिठाई ससिणिद्ध ससरक्खे । छम्मासंतो गणसंकमं च करकम्ममिइ सबले ॥ ३ ॥ खुहा पिवासा सीउण्हं दंसाचेलारइत्थिओ । चरिया निसीहिया सेज्जा अक्कोस वह जायणा ॥ ४ ॥ अलाभ रोग तणफासा मल सक्कारपरीसहा । पण्णा अण्णाण सम्मत्तं इइ बावीस परीसहा ॥ ५ ॥ पुंडरिय किरियठाणं आहारपरिणणऽपच्चखाणकिरिया य । अणगार अइ नालंद सोलसाइं च तेवीसं ॥ ६ ॥ भवणवणजोइवेमाणिया य दसअट्टपंचएगविहा । इह(इ) चउवीसं देवा केई पुण बेंति अरिहंता ॥ ७ ॥ इरियासमिए सया जए, उवेह भुंजेज्ज व पाणभोयणं । आयाणनिक्खेवदुगुंछ संजए, समाहिए संजमए मणोवई ॥ ८ ॥ अहस्ससच्चे अणुवीइभासए, जे को-हलोहे भयमेव क्जए । स दीहरायं समुपेहिया सिया, मुणी हु मोसं परिवज्जए सया ॥ ९ ॥ सयमेव उ उग्गहजायणे घडे, मइमं निसम्म सइ भिक्खु उग्गहं । अणुणविय भुंजिय पाणभोयणं, जाइत्ता साहम्मियाण उग्गहं ॥ ४० ॥ आहारगुत्ते अविभूसियप्पा, न इत्थि निज्झाइ न संथवेज्जा । बुद्धो मुणी खुड्डकहं न कुज्जा, धम्माणुपेही संघए बंभचेरं ॥ १ ॥ जे सहरूवरंसगंधमागए, फासे य संपप्प मणुण्णपावए । गिही पदोसं न करेज्ज पंडिए, स होइ दंते विरए अकिंचणे ॥ २ ॥ दस उद्देसणकाला दसाण कप्पस्स होंति छच्चेव । दस चेव य वव-हारस्स होंति सबेवि छव्वीसं ॥ ३ ॥ वयछक्कमिंदियाणं च निग्गहो भावकरणसच्चं च । खमया विरागयाविय मणमाईणं निरोहो अ ॥ ४ ॥ कायाण छक्क जोगाण(गंमि) जुत्तया (३०२) १२०८ आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं , 10/11/2017 + 31521201-8

वेयणाऽहियासणया । तह मारणंतियऽहियासणा य एएऽणगारगुणा ॥५॥ सत्यपरिण्णा लोगो विजओ अ सीओसणिज्ज सम्मत्तं । आवंति धुव विमोहो उवहाणसुयं महपरिण्णा ॥ ६ ॥
 पिंडेसण सिज्जिरिया भासजाया अ वत्थपाएसा । उग्गहपडिमासत्तेकसत्तयं भावण विमुत्ती ॥ ७ ॥ उग्घायमणुग्घायं आरुवणा तिविहमो णिसीहं तु । इय अट्टावीसविहो आयारपकप्प-
 णामोऽयं (उ) ॥ ८ ॥ अट्ट निमित्तंगाइं दिव्वुप्पायंतलिक्ख भोमं च । अंगं सर लक्खण वंजणं च तिविहं पुणोकेकं ॥ ९ ॥ सुत्तं वित्ती तह वत्तियं च पावसुय अउणतीसविहं । गंधबनट्टवत्थुं
 आउंधणुवेयसंजुत्तं ॥ ५० ॥ वारिमज्जेऽवगाहिता, तसे पाणे विहंसई । छाएउ मुहं हत्थेणं, अंतोनायं गलेखं ॥ १ ॥ सीसावेढेण वेढित्ता, संकिलेसेण मारए । सीसंमि जे य आहंतुं,
 दुहमारेण हिंसइ ॥ २ ॥ बहुजणस्स नेयारं, दीवं ताणं च पाणिणं । साहारणे गिलाणंमि, पहु किच्चं न कुबइ ॥ ३ ॥ साहू अक्कम्म धम्माओ जे भंसेइ उवट्टिए । णेयाउयस्स मग्गस्स,
 अबगारंमि वट्टइ ॥ ४ ॥ जिणाणं णंतणाणीणं, अवण्णं जो उ भासइ । आयरियउवज्झाए, खिंसई मंदबुद्धीए ॥ ५ ॥ तेसिमेव य णाणीणं, सम्मं नो पडितपपइ । पुणो पुणो अहिगरणं,
 उप्पाए तित्थभेयए ॥ ६ ॥ जाणं आहम्मिए जोए, पउंजइ पुणो पुणो । कामे वमित्ता पत्थेइ, इहऽन्नभविए इय ॥ ७ ॥ भिक्खुणं बहुसुएऽहंति, जो भासइऽबहुस्सुए । तहा य
 अतवस्सी उ, जो तवस्सित्तिऽहं वए ॥ ८ ॥ जायतेएण बहुजणं, अंतोधूमेण हिंसइ । अकिच्चमप्पणा काउं, कयमेएण भासइ ॥ ९ ॥ नियडुवहिपणिहीए पलिउंचे साइजोगजुत्ते य । बेई
 सव्वं मुसं वयसि, अक्खीणझंझए सया ॥ ६० ॥ अद्धानंमि पवेसित्ता, जो धणं हरइ पाणिणं । वीसंभित्ता उवाएणं, दारे तस्सेव लुब्भई ॥ १ ॥ अभिक्खमकुमारे उ, कुमारेऽहंति भासइ ।
 एवं अबंभयारीवि, बंभयारित्तिऽहं वए ॥ २ ॥ जेणेविस्सरियं णीए, वित्ते तस्सेव लुब्भई । तप्पभावुट्टिए वावि, अंतरायं करेइ से ॥ ३ ॥ सेणावइं पसत्थारं, भत्तारं वावि हिंसइ । रट्टस्स
 वावि निगमस्स, नायगं सेट्टिमेव वा ॥ ४ ॥ अपस्समाणो पस्साभि, अहं देवेत्ति वा वए । अवण्णेणं च देवाणं, महामोहं पकुव्वइ ॥ ५ ॥ पडिसेहण संठाणे वण्ण गंध रस फास वेए अ ।
 पणपणदुपणट्टतिहा इगतीसमकायसंगरूहा ॥ ६ ॥ अहवा कम्मे नव दरिसणंमि चत्तारि आउए पंच । आइमंते सेसे दो दो खीणभिलावेण इगतीसं ॥ ६७ ॥ (संग०) आलोयणा निरवलावे,
 आवइसु य दढधम्मया । अणिस्सिओवहाणे अ, सिक्खा णिप्पडिकम्मया ॥ १३७१ ॥ अण्णायया अलोहे अ, तित्तिक्खा अज्जवे सुई । सम्मदिट्ठी समाही अ, आयारे विणओवए ॥ २ ॥ धिई मई
 अ संवेगे, पणिही सुविही संवरे । अत्तदोसोवसंहारो, सव्वकामविरत्तया ॥ ३ ॥ पच्चक्खाणा विउस्सग्गे, अप्पमाए लवालवे । ज्ञाण संवर जोगे अ, उदए मारणंतिए ॥ ४ ॥ संगणं च परिण्णाए,
 पच्छित्तकरणे इय । आराहणा य मरणंते, बत्तीसं जोगसंगहा ॥ ५ ॥ उज्जेणि अट्टणे खलु सीहगिरि सोपारए अ पुहइवई । मच्छियमल्ले दूरल्लुकूविए फलिहमल्ले अ ॥ ६ ॥ दंतपुर दन्तचक्के
 सच्चवदी दोहले अ वणयरए । धणमित्त धणसिरी अ यउमसिरी चेव दढमित्ते ॥ ७ ॥ उज्जेणीए धणवसु अणगारे धम्मघोस चंपाए । अट्टीए सत्थ विब्भम वोसिरणं सिज्झणा चेव ॥ ८ ॥
 महराए जउणराया जउणावंके य दंडमणगारे । वहणं च कालकरणं सक्कागमणं च पव्वजा ॥ ९ ॥ पाडलिपुत्त महागिरि अज्जसुहत्थी य सेट्टि वसुभूती । वइदिसि उज्जेणीए जियपडिमा
 एलकच्छं च ॥ १३८० ॥ खिति चण उसभ कुसगं रायगिहं चंप पाडलीपुत्तं । नंदे सगडाले थूलभइ सिरिए वररुई य ॥ १ ॥ पइठाणे नागवसू नागसिरी नागदत्त पव्वजा । एगविहारुट्टाणे
 देवय साहू य बिह्गिरे ॥ २ ॥ कोसंबि अजियसेणे धम्मवसू धम्मघोस धम्मजसे । विगयभया विणयवई इडिठ विभूसा य परिकम्मे ॥ ३ ॥ उज्जेणिऽवंतिवद्धण पालगसुय रट्टवद्धणे चेव ।
 धारि(णि) अवंतिसेणे मणिप्पभो वच्छगातीरे ॥ ४ ॥ साएए पुंडरिए कंडरीए चेव देवि जसभहा । सावत्थि अजियसेणे कित्तिमई खुड्डगकुमारो ॥ ५ ॥ जसभहे सिरिकंता जयसंधी चेव
 कण्णपाले य । नट्टविही परिओसे दाणं पुच्छा य पव्वजा ॥ ६ ॥ सुट्टु वाइयं सुट्टु गाइयं सुट्टु नच्चियं साम सुंदरि ! । अणुपालिय दीहराइओ सुमिणंते मा पमायए ॥ ७ ॥ इंदपुर इंददत्ते
 बावीस सुया सुरिंददत्ते य । महराए जियसत्तू सयंवरु निव्वुईए उ ॥ ८ ॥ अग्गियए पव्वयए बहुली तह सागरे य बोद्धव्वे । एगदिवसेण जाया तत्थेव सुरिंददत्ते य ॥ ९ ॥ चंपाए को-
 सियजो अंगरिसी रूहए य आणत्ते । पंथग जोइजसाविय अब्भक्खाणे य(ण) संबोही ॥ १३९० ॥ सोरिअ सुरंबरेऽविय सिट्ठी य धणंजए सुभहा य । वीरे य धम्मघोसे धम्मजसेऽसो-
 गपुच्छा य ॥ १ ॥ सोरिय समुद्विजए जन्नजसे चेव जन्नदत्ते य । सोमित्ता सोमेजसा उंछविही नारदुप्पत्ती ॥ २ ॥ अणुकम्पा वेयड्ढे मणिकंचण वासुदेव पुच्छा य । सीमंधर जुगबाहू
 जुगंधरे चेव महबाहू ॥ ३ ॥ साएयम्मि महाबल विमलपहे चेव चित्तकम्मे य (परिकम्मे) । निप्फत्ति छट्टमासे भूमीकम्मस्स करणं च ॥ ४ ॥ णयरं सुदंसणपुरं सुमणाए सुजस सुवए
 चेव । पव्वज सिक्खमादी एगविहारे य फासणया ॥ ५ ॥ पाडलिपुत्त हुयासण जलणसिहा चेव जलणडहणे य । सोहम्म पलियपणए आमलकप्पाइ णट्टविही ॥ ६ ॥ उज्जेणी अंबरिसी
 मालुग तह निंबए य पव्वजा । संकमणं च परगणे अविणय विणए य पडिवत्ती ॥ ७ ॥ नगरी य पंडुमहुरा पंडववंसे मई य सुमई य । वारीवसभारुहणे उप्पाइय सुट्टियविभासा ॥ ८ ॥
 चंपाए मित्तपभ धणमित्ते धणसिरी सुजाते य । पियंगुय धम्मघोसे अरक्खुरे चेव चंदझए ॥ ९ ॥ चंदजसा रायगिहे वारत्तपुरे अभयसेण वारत्ते । सुसुमार धुंधुमारे अंगारवई य पजोए

१२०९ आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं, सौर्युक्ति

॥१४००॥ मरुयच्छे जिणदेवो भयंतमित्ते कुणाल्मिक्खु य । पइठाण सालवाहण गुग्गुलभगवं च णहवा(वाह)णो ॥१॥ बारवई वेयरणी धन्नंतरि भविय अभविए विजे । कहणा य पुच्छि-
यंमि य गइनिदेसे य संबोही ॥ २ ॥ सो वानरजूहवई कंतारे सुविहियाणुकंपाए । भासुरवरबोदिधरो देवो वेमाणिओ जाओ ॥ ३ ॥ वाराणसीय कोट्टे पासे गोवाल भइसेणे य । नंदसिरी
पउमसिरी रायगिहे सेणिए वीरो ॥ ४ ॥ बारवइ अरहमित्ते अणुद्धरी चेव तहय जिणदेवो । रोगस्स य उप्पत्ती पडिसेहो अत्तसंहारो ॥५॥ उज्जेणि देवलासुय अणुरत्ता लोयणा य पउम-
रहो । संगय ओम ऽणुमइया असियगिरी अद्धसंकासा ॥६॥ कोडीवरिस चिलाए जिणदेवो रयणपुच्छ कहणा य । साएए सत्तुंजे वीरकहणा य संबोही ॥ ७ ॥ वाणारसी य णयरी अणगारे
धम्मघोस धम्मजसे । मासस्स य पारणए गोउल गंगा व अणुकंपा ॥१४०८॥ करकंडु कल्लिगेसुं, पंचालेसु य दुम्मुहो । नमी राया विदेहेसु, गंधारेसु य णग्गती ॥२०९॥ भा० । वसभे य इंदकेउ-
वलए अंबे य पुप्फिए बोही । करकंडु दुम्मुहस्सा नमिस्स गंधाररत्तो य ॥२१०॥ भा० । सेयं सुजायं सुविभत्तसिंगं, जो पासिया वसभं गोट्टमज्जे । रिद्धिं अरिद्धिं समुपेहियाणं, कल्लिगरायावि
समिक्ख धम्मं ॥१॥ गोट्टंगणस्स मज्जे ढेक्कियसहेण जस्स भज्जंति । दित्तावि दरियवसहा सुतिक्खसिंगा समत्थावि ॥२॥ पोरणय गयदप्पो गलंतनयणो चलंतवस(ककु)भोट्टो । सो चेव इमो
वसहो पइडुयपरिघट्टणं सहइ ॥ ३ ॥ जो इंदकेउं समलंकियं तु, दट्टुं पडंतं पविलुप्पमाणं । रिद्धिं अरिद्धिं समुपेहियाणं, पंचालरायावि समिक्ख धम्मं ॥ ४ ॥ बहुयाणं सहयं सोच्चा,
एगस्स य असहयं । वलयाणं नमी राया, निक्खंतो मिहिलाहिवो ॥ ५ ॥ जो चूरुक्खं तु मणाहिरामं, समंजरिं पल्लवपुप्फचित्तं । रिद्धिं अरिद्धिं समुपेहियाणं, गंधाररायावि समिक्ख
धम्मं ॥२१६॥ भा० । जहा जलंताइं कट्टाइं, उवेहाइ चिरं जले । घट्टिया घट्टिया झत्ति, तम्हा सहसु घट्टणं ॥१४०९॥ सुचिरंपि वंकुडाइं होहिति अणुपमज्जमाणाइं । करमदिदारुयाइं गयंकुसा-
गारबेटाइं ॥१४१०॥ रायगिह मगहसुंदरि मगहसिरी पउमसत्थपक्खेवो । परिहरिय अप्पमत्ता नट्टं गीयं नविय चुक्का ॥१॥ पत्ते वसंतमासे आमोअ पमोअए पवत्तंमि । मुत्तूण कण्णिआरए
भमरा सेवंति चूअकुसुमाइं ॥२॥ भरुयच्छंमि य विजए नडपिडए वासवास नागघरे । ठवणा आयरियस्सा सामायारीपउंजणया ॥३॥ नगरं च सिंबवद्धण मुंडि(मूअ)म्भय अज्जपूसभूई
य । आयावण पूसमित्ते सुहुमे ज्ञाणे विवादो य ॥४॥ रोहीडगं च नयरं ललियागुट्टी य रोहिणी गणिया । धम्मरुइ कडुअदुद्धियदाणाइयणे य कम्मदए ॥५॥ नगरी य चंपनामा जिण-
देवो सत्थवाह अहिच्छत्ता । अडवी य तेण अगणी सावय संगण वोसिरणा ॥६॥ पायच्छित्तपरूवण आहरणं तत्थ होइ धणगुत्ता । आराहणाए मरुदेवा ओसप्पिणीए पढमसिद्धो ॥१४११॥
। जोगसंगहा । तेत्तीसाए आसायणाहिं सू० १८ पुरओ पक्खाऽऽसन्ने गंता चिट्टण निसीयणाऽऽयमणे । आलोयण पडिसुणणा पुब्बालवणे य आलोए ॥६८॥ (संग०) तह उवदंस निमंतण
स्वद्धाइयणे तह य अपडिसुणणे । खदंति य तत्थ गए किं तुम तज्जाइ णो सुमणे ॥९॥ णो सरसि कहं छेत्ता परिसं भित्ता अणुट्टियाइ कहे । संथारपायघट्टण चिट्टे उच्चासणाईसु (दट्टुच्चसमासणे
यावि) ॥७०॥ अहवा-अरिहंताणं आसायणादि सज्झाए किंचि नाहीयं । जा कंठसमुद्धिद्धा तेत्तीसासायणाए या (होति) ॥७१॥ (संग०) पडिक्कमणसंगहणी ॥ अरिहंताणं आसायणाए सि-
द्धाणं आसायणाए आयरियाणं आसायणाए उवज्झायाणं आसायणाए साहूणं आसायणाए साहुणीणं आसायणाए सावयाणं आसायणाए सावियाणं आसायणाए देवाणं आसायणाए
देवीणं आसायणाए इहलोगस्स आसायणाए परल्लेगस्स आसायणाए केवल्लिपन्नत्तस्स धम्मस्स आसायणाए सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स आसायणाए सवपाणभूयजीवसत्ताणं आसाय-
णाए कालस्स आसायणाए सुयस्स आसायणाए सुयदेवयाए आसायणाए वायणायरियस्स आसायणाए सू० १९ । जं वाइद्धं वच्चाभेलियं हीणक्खरं अच्चक्खरं पयहीणं (विणयहीणं
घोसहीणं जोगहीणं) सुट्टु दिन्नं दुट्टु पडिच्छियं अकाले कओ सज्झाओ काले न कओ सज्झाओ असज्झाइए सज्झाइयं सज्झाए न सज्झाइयं तस्स मिच्छामि दुक्कडं सू० २० ।
देवादीयं लोयं विवरीयं भणइ सत्त दीवुदही । तह कइ पयावईणं पयईपुरिसाण जोगो वा ॥ २१७ ॥ भाष्यं । उत्तरं-सत्तसु परिमिय सत्ता मोक्खो सुणत्तणं पयावइ य । केण कउत्तऽ-
णवत्था पयडीए कहं पवित्ति ? ॥८॥ जमचेयणत्ति पुरिसत्थनिमित्तं किल पवत्तत्ती सा य । तीसे चिय अपवित्ती परोत्ति सब्बं चिय विरुद्धं ॥२१९॥ भा० । असज्झाइयनिज्जुत्ति वुच्छामी
धीरपुरिसपणत्तं । जं नाऊण सुविहिया पवयणसारं उवलहंति ॥१४१८॥ अस्सज्झायं तु दुविहं आयसमुत्थं च परसमुत्थं च । जं तत्थ परसमुत्थं तं पंचविहं तु नायब्रं ॥ ९ ॥ संजमघाउप्पा-
(वघा)ए सादिबे वुग्गहे य सारीरे । घोसणय मिच्छरण्णो कोई छलिओ पमाएणं ॥१४२०॥ मिच्छभय घोसण निवे हियसेसा ते उ दंडिया रण्णा । एवं दुहओ दंडो सुर पच्छित्ते इह परे
अ ॥ १ ॥ राया इह तित्थयरो जाणवया साहु घोसणं सुत्तं । मेच्छो अ असज्झाओ रयणघणाइं च नाणाई ॥ २ ॥ थोवावसेसपोरिसिमज्झयणं वावि जो कुणइ सो उ । णाणाइसारर-
हियस्स तस्स छलणा उ संसारो ॥ ३ ॥ महिया अ भिन्नवासे सच्चित्तरए अ संजमे तिबिहं । दबे खित्ते काले जहियं वा जच्चिरं सब्बं ॥ ४ ॥ दुग्गाइतोसियनिवो पंचण्हं देइ इच्छियपयारं ।
गहिए अ देइ मुल्लं जणस्स आहारवत्थाई ॥ ५ ॥ इक्केण तोसियतरो गिहमगिहे तस्स सवहिं वियरे । रत्थाईसु चउण्हं एवं पढमं तु सब्बत्थ ॥ ६ ॥ महिया उ गब्भमासे सच्चित्तरओ अ

इंसिआयंओ । वासे तिभि पयारा बुष्पुअ तइज कुसिए अ ॥ २२० ॥ दवे तं चिय दवं खित्ते जहियं तु जच्चिरं कालं । ठाणाइ भास भावे मुत्तुं उस्सासउम्मेसे ॥ १ ॥ भाष्यं । वासत्ताणा-
 बरिया निष्कारण ठंति कजि जयणाए । हत्थत्यंगुलिसजा पुत्तावरिया व भासंति ॥ ७ ॥ पंसू य मंसरुहिरे केससिलावुट्टि तह रउग्घाए । मंसरुहिरे अहोरत्त अवसेसे जच्चिरं सुत्तं ॥ ८ ॥
 पंसू अब्बित्तरओ रयस्सत्त्रओ दिसा रउग्घाओ । तत्थ सवाए निष्वायए य सुत्तं परिहरंति ॥ ९ ॥ साभाविय तिभि दिणा सुगिम्हए निक्खिवंति जइ जोगं । तो तंमि पडंतमी करंति सं-
 वच्छरज्जायं ॥ १४३० ॥ गंधदिसाविज्जुक्कगजिएजूअजक्खआलित्ते । इक्किक्क पोरिसी गजियं तु दो पोरिसी हणइ ॥ १ ॥ दिसिदाह छिन्नमूलो उक्क सरेहा पगासजुत्ता वा । संझाछे-
 यावरणो उ जूवओ सुक्कि दिण तिभि ॥ २ ॥ केसिंचि हुंतिऽमोहा उ जूवओ ता य हुंति आइन्ना । जेसिं तु अणाइन्ना तेसिं किर पोरिसी तिभि ॥ ३ ॥ चंदिमसूरुवरागे निग्घाए गुंजिए
 अहोरत्तं । संझा चउ पाडिवया जं जहिं सुगिम्हए नियमा ॥ ४ ॥ आसाढी इंदमहो कत्तिय सुगिम्हए य बोद्धवे । एए महामहा खलु एएसिं चेव पाडिवया ॥ ५ ॥ कामं सुओवओगो
 तवोवहाणं अणुत्तरं भणियं । पडिसेहियंमि काले तहावि खलु कम्मबंधाय ॥ ६ ॥ छलया व सेसएणं पाडिवएसुं छणाऽणुसजंति । महवाउलत्तणेणं असारिआणं च सम्माणो ॥ ७ ॥
 अन्नयरपमायजुयं छलिज्ज अप्पिट्टिओ न उण जुत्तं । अद्धोदहिट्टिई पुण छलिज्ज जयणोवउत्तंपि ॥ ८ ॥ उक्कोसेण दुवात्स चंदु जहन्नेण पोरिसी अट्ट । सूरु जहन्न बारस पोरिसी उक्कोस
 दो अट्ट ॥ ९ ॥ सग्गह निबुड्ड एवं सूरुई जेण हुंतिऽहोरत्ता । आइन्नं दिणमुक्के सुच्चिय दिवसो अ राई य ॥ १४४० ॥ वुग्गह दंडियमादी संखोहं दंडिए य कालगए । अणरायए य सभए
 जच्चिर निदोच्चऽहोरत्तं ॥ १ ॥ सेणाहिवईभोइयमयहरपुंसित्थिमल्लजुद्धे य । लोटाइभंडणे वा गुज्जग उड्डाहमचियत्तं ॥ २ ॥ तद्विसभोइआई अंतो सत्तण्ह जाव सज्झाओ । अणहस्स य
 हत्थसयं दिट्टि विवित्तंमि सुद्धं तु ॥ ३ ॥ मयहर पगए बहुपक्खिए य सत्तघरअंतरमए वा (यंमि) । निदुक्खत्ति य गरिहा न पढंति सणीयगं वावि ॥ ४ ॥ सागारियाइकहणं अणिच्छ
 रत्ति वसहा विगिंचंति । विक्खित्ते व समंता जं दिट्ट सढेयरे सुद्धा ॥ ५ ॥ सारीरंपि य दुविहं माणुस तेरिच्छियं समासेणं । तेरिच्छं तत्थ तिहा जलथल्लखहजं चउद्धा उ ॥ ६ ॥ पंचिदि-
 याण दवे खेत्ते सट्टिहत्थ पुग्गलाइन्नं । ति कुरत्थ महंतेगा नगरे बाहिं तु गामस्स ॥ ७ ॥ काले तिपोरसिऽट्ट व भावे सुत्तं तु नंदिमाईयं । सोणिय मंसं चम्मं अट्टीविय हुंति चत्तारि ॥ ८ ॥
 अंतो बहिं च धोअं सट्टिहत्थाउ पोरिसी तिभि । महकाएँ अहोरत्तं रद्धे वूढे अ सुद्धं तु ॥ ९ ॥ बहिधोयरद्धपक्के अंतो धोए उ अवयवा हुंति । महकाय बिरालाई अविभिन्ने केइ इच्छंति
 ॥ १४५० ॥ मूसाइ महाकायं मज्जारुईहयाघयण केई । अविभिन्ने गिण्हेउं पढंति एगे जइऽपलोओ (इ पलाइ) ॥ २२२ ॥ भा० । अंतो बहिं च भिन्नं अंडगबिंदू तहा विआया अ । रायपह वूढ
 सुद्धे परवयणे साणमादीणं ॥ १ ॥ अंडगमुज्झिय कप्पे न य भूमि खणंति इहरहा तिन्नि । असज्झाइयपमाणं मच्छियपाओ जहिं (न) बुड्डे ॥ २२३ ॥ भा० । अजराउ तिभि पोरिसि जराउआणं
 जरे पडे तिभि । रायपह बिंदु पडिए कप्पइ वूढे पुणऽन्नत्थ ॥ ४ ॥ जइ फुसइ तहिं तुंडं अहवा लिच्छारिएण संचिक्खे । इहरा न होइ चोयग ! वंतं वा परिणयं जम्हा ॥ २२५ ॥ माणुस्सयं
 चउद्धा अट्टिं मुत्तूण सयमहोरत्तं । परिआवन्नविवन्ने सेसे तिय सत्त अट्टेव ॥ १४५२ ॥ रत्तुक्कडा उ इत्थी अट्ट दिणा तेण सत्त सुक्कहिए । तिन्नि दिणाण परेणं अणोउगं तम्मऽहोरत्तं ॥ ३ ॥
 दंते दिट्टि विगिंचण सेसट्टी बारसेव वासाइं । झामिय वूढे सीआण पाणरुद्धे य माइहरे ॥ ४ ॥ सीयाणे जं दिट्टं (दइढं) तं तं मुत्तूणऽनाहनिहयाणि । आडंबरे य रुद्धे माइसु हिट्टट्टिया बार
 ॥ ५ ॥ आवासियं च वूढं सेसे दिट्टंमि मग्गण विवेगो । सारीर गाम वाडग साहीइ न नीणियं जाव ॥ ६ ॥ असिवोमाघायणेसुं बारस अविसोहियंमि न करंति । झामिय वूढे कीरइ आवा-
 सिय सोहिए चेव ॥ २२६ ॥ भा० । डहरगलाममए वा न करंती जा ण नीणियं होइ । पुर गामे व महंते वाडगसाही परिहरंती । २२७ ॥ भा० । निजंतं मुत्तूणं परवयणे पुप्फमाइपडिसेहो । जम्हा
 चउप्पगारं सारीरमओ न वज्जंति ॥ ७ ॥ एसो उ असज्झाओ तच्चजिउऽज्झाउ तत्थिमा मेरा । कालपडिलेहणाए गंडगमरुएहिं दिट्टंतो ॥ ८ ॥ पंचविह असज्झायस्स जाणणट्टाय पेहए कालं ।
 चरिमा चउभागवसेसिसाइ भूमिं तओ पेहे ॥ ९ ॥ अहियासियाइं अंतो आसन्ने चेव मज्झि दूरे य । तिन्नेव अणहियासी अंतो छच्छच्च बाहिरओ ॥ १४६० ॥ एमेव य पासवणे बारस चउवी-
 सतिं तु पेहेत्ता । कालस्स य तिन्नि भवे अह सूरु अत्थमुवयाई ॥ १ ॥ अह (जइ) पुण निष्वाघाओ आवासं तो करंति सब्बेऽवि । सड्डाइकहणवाघाययाइ पच्छा गुरू ठंति ॥ २ ॥ सेसा
 उ जहासत्तिं आपुच्छित्ताण ठंति सट्टाणे । सुत्तत्थझरणहेउं आयरिएँ ठियंमि देवसियं ॥ ३ ॥ जो हुज्ज उ असमत्थो बालो बुड्डो गिलाण परितं (सं) तो । सो विकहाइविरहिओ अच्छिजा
 निजरापेही ॥ ४ ॥ आवासगं तु काउं जिणोवइट्टं गुरूवएसेणं । तिण्णि थुई पडिलेहा कालस्स इमो विही तत्थ ॥ ५ ॥ दुविहो उ होइ कालो वाघाइम एतरो य नायवो । वाघातो घंघसा-
 ल्पएँ घट्टणं सड्डकहणं वा ॥ ६ ॥ वाघाए तइओ सिं दिज्जइ तस्सेव ते निवेएंति । इयरा पुच्छंति दुवे जोगं कालस्स घेच्छामो ॥ ७ ॥ आपुच्छण किइकम्मे आवासिय पडियरिय
 (खलिय पडिय) वाघाते । इंदिय दिसा अ तारा वासमसज्झाइयं चेव ॥ ८ ॥ जइ पुण गच्छंतानं छीयं जोइं त(च)तो नियत्तंति । निष्वाघाए दोण्णि उ अच्छंति दिसा निरिक्खंता ॥ ९ ॥

१२११ आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं, सनिर्युत्तरं,

मुनि दीपरत्नसागर

सज्जायमचिंतता कणगं ददृण पडिनियत्तंति। पत्ते अ दंडधारी मा बोलं गंडए उवमा ॥ १४७० ॥ आघोसिए बहूहिं सुयंमि सेसेसु निवडए दंडो। अहं तं बहूहिं न सुयं दंडिज्जइ गंडओ ताहे ॥ १ ॥ पियधम्मो ददधम्मो संविग्गो चैव वज्जभीरू अ। खेयणो अ अभीरू कालं पडिलेहए साहू ॥ २ ॥ कालो संज्ञा य तथा दोवि सम्पंपति जहं समं चैव। तहं तं तुलेंति कालं चरिमं च दिसं असज्जाए ॥ ३ ॥ आउत्तपुव्वभणियं अणपुच्छा खलियपडियवाघाओ। भासंतं मूढं संकियं इंदियविसए तु अमणुण्णे ॥ ४ ॥ निसीहिया नमुक्कारे काउस्सग्गे अ पंचमंगलए। किडकम्मं च करिन्ती बीओ कालं तु पडियरइ ॥ ५ ॥ थोवावसेसियाए संज्ञाए ठाति उत्तराहुत्तो। चउवीसगदुमपुप्फियपुव्वगमेक्केकिय दिसाए ॥ ६ ॥ बिंदू छीए परिणय सगणे वा संकिए भवे तिण्हं। भासंतं मूढं संकियं इंदियविसए अ अमणुण्णे ॥ ७ ॥ मूढो व दिसिऽज्झयणे भासंतो यावि गिण्हति न सुज्जे। अन्नं च दिसऽज्झयणे संकंतोऽनिट्ठविसए वा ॥ ८ ॥ जो गच्छंतंमि विही आगच्छंतंमि होइ सो चैव। जं एत्थं णाणत्तं तमहं वोच्छं समासेणं ॥ ९ ॥ निसीहिआय आसज्ज अकरणे खलिय पडिय वाघाए। अपमज्जिय भीए वा छीए छिन्ने व कालवहो ॥ २६ ॥ प्र० सिद्धसेन०। गोणाइ कालभूमीइ हुज्ज संसपपगा व उट्टिजा। कविहसिय विज्जुयंमी गज्जिय उक्काइ कालवहो ॥ २७ ॥ इरियावहिया हत्थंतरेऽवि मंगल निवेयणा दारे। सब्बेहिवि पट्टविए पच्छा करणं अकरणं वा ॥ १४८० ॥ सन्निहियाण वडारो पट्टविय पमादि णो दए कालं। बाहि ठिए पडियरए पविसइ ताएऽवि दंडधरो ॥ १ ॥ पट्टविय वंदिए वा (य) तहिं पुच्छति केण किं सुयं? भंते!। तेवि य कहेंति सब्बं जं जेण सुयं व दिट्ठं वा ॥ २ ॥ इक्कस्स व दोण्ह व संकियंमि कीरइ न कीरती तिण्हं। सगणंमि संकिए परगणं तु गंतुं न पुच्छंति ॥ ३ ॥ कालचउक्के णाणत्तं तु पाओसियंमि सब्बेवि। समयं पट्टवयंती सेसेसु समं व विसमं वा ॥ ४ ॥ इंदियमाउत्ताणं हणंति कणगा उ तिन्नि उक्कोसं। वासासु य तिन्नि दिसा उउबद्धे तारगा तिन्नि ॥ ५ ॥ कणगा हणंति कालं ति पंच सत्तेव गिम्हि सिसिर वासे। उक्का उ सरेहागा रेहारहितो भवे कणगो ॥ ६ ॥ वासासु य तिन्नि दिसा हवंति पाभाइयंमि कालंमि। सेसेसु तीसु चउरो उडुंमि चउरो चउदिसिपि ॥ ७ ॥ तिसु तिन्नि तारगाओ उडुंमि पाभातिए अदिट्ठेऽवि। वासासु तारगाओ चउरो छन्ने निविट्ठोऽवि ॥ ८ ॥ ठाणा(गा)सइ बिंदूसु अ गिण्हे बिट्ठोवि पच्छिमं कालं। पडियरइ बहिं एक्को एक्को अंतट्ठिओ गिण्हे ॥ ९ ॥ पाओसिअड्ढरत्ते उत्तरदिसि पुव्व पेहए कालं। वेरत्तियंमि भयणा पुव्वदिसा पच्छिमे काले ॥ १४९० ॥ कालचउक्कं उक्को-सएण जहन्न तियं तु बोद्धवं। बीयपएणं तु दुगं मायामयविप्पमुक्काणं ॥ १ ॥ फिट्ठियंमि अड्ढरत्ते काले धित्तुं सुवंति जागरिया। ताहे गुरू गुणंती चउत्थि सब्बे गुरू सुअइ ॥ २ ॥ गहि-यंमि अड्ढरत्ते वेरत्तिय अगहिए भवइ तिन्नि। वेरत्तियअड्ढरत्ते अइउवओगा भवे दुण्णि ॥ ३ ॥ पडिजग्गियंमि पढमे बीयविवजा हवंति तिन्नेव। पाओसिय वेरत्तिय अइउवओगा उ दुण्णि भवे(ण्णेव) ॥ ४ ॥ पाभाइयकालंमि उ संचिक्खे तिन्नि छीयरुन्नाणि। परवयणे खरमाई पावासुय एवमाईणि ॥ ५ ॥ नवकालवेल सेसे उवग्गहिय अट्ट या पडिक्कमइ। न पडिक्कमइ वेगो नववारहए धुवमसज्जाओ ॥ २२८ ॥ भा०। इक्किक्क तिन्नि वारे छीयाइहयंमि गिण्हए कालं। चोएइ खरो बारस अणिट्ठविसए अ कालवहो ॥ ९ ॥ चोअग! माणुसऽणिट्ठे कालवहो सेस-गाण उ पहारो। पावासुआइ पुव्वि पन्नवणमणिच्छि उग्घाडे ॥ २३० ॥ वीसरसइ रुअंते अब्बत्तगडिंभगंमि मा गिण्हे। गोसे दरपट्टविए छीए छीए तियं पेहे ॥ २३१ ॥ भा०। आइन्न पिसिय महिया पेहिता तिन्नि तिन्नि ठाणाइं। नववारहए काले हउत्ति पढमाइ न पढंति ॥ ६ ॥ पट्टवियंमि सिलोगे छीए पडिलेह तिन्नि अन्नत्थ। सोणियमुत्तपुरीसे घाणाओअं परिहरिजा ॥ ७ ॥ आलोअंमि चिलमिणी गंधे अन्नत्थ गंतु पकरंति। वाघाइयकालंमी गंडगमरुआ नवरि नत्थि ॥ ८ ॥ एएसामन्नयरेऽसज्जाए जो करेइ सज्जायं। सो आणा अणवत्थं मिच्छत्त विराहणं पावे ॥ ९ ॥ आयसमुत्थमसज्जाइयं तु एगविध होइ दुविहं वा। एगविहं समणाणं दुविहं पुण होइ समणीणं ॥ १५०० ॥ धोयंमि उ निप्पगले बंधा तिन्नेव हुंति उक्कोसं। परि-गलमाणे जयणा दुविहंमि य होइ कायवा ॥ १ ॥ समणो उ वणिव्व (णी व) भगंदरिब्व (री व) बंधं करित्तु वाएइ। तहवि गलंते छारं दाउं दो तिन्नि बंधा उ ॥ २ ॥ एमेव य समणीणं वणंमि इयरंमि सत्त बंधा उ। तहविय अठायमाणे धोएउं अहव अन्नत्थ ॥ ३ ॥ एएसामन्नयरेऽसज्जाए अप्पणो उ सज्जायं। जो कुणइ अजयणाए सो पावइ आणमाईणि ॥ ४ ॥ मुअनाणंमि अ-भत्ती लोअविरुद्धं पमत्तल्लणा य। विजासाहणवइगुन्नधम्मया एव मा कुणसु ॥ ५ ॥ कामं देहावयवा दंताई अवज्जुआ तहवि वज्जा। अणवज्जुआ न वज्जा लोए तह उत्तरे चैव ॥ ६ ॥ अब्भितरमललित्तोवि कुणइ देवाण अच्चणं लोए। बाहिरमललित्तो पुण न कुणइ अवणेइ य तओ णं ॥ ७ ॥ आउट्टियाऽवराहं संनिहिया न खमए जहा पडिमा। इह परलोए दंडो पमत्तल्लणा इह सिया उ ॥ ८ ॥ रागेण व दोसेण वऽसज्जाए जो करेइ सज्जायं। आसायणा व का से? को वा भणिओ अणायारो? ॥ ९ ॥ गणिसहमाइमहिओ रागे दोसंमि न सहए (इहे) सहं। सब्बमसज्जायमयं एमाई हुंति मोहाओ ॥ १५१० ॥ उम्मायं व लभेज्जा रोगायकं व पाउणे दीहं। तित्थयरभासियाओ भस्सइ सो संजमाओ वा ॥ १ ॥ इहलोए फलमेयं परलोए फलं न दिंति विजाओ। आसायणा सुयस्स उ कुव्वइ दीहं च संसारं ॥ २ ॥ असज्जाइयनिज्जुत्ती कहिया भे धीरपुरिसपन्नत्ता। संजमतवइट्ठगाणं निग्गंथाणं महरिसीणं ॥ ३ ॥ असज्जाइयनिज्जुत्ति जुंजंता चरणकरणमाउत्ता। साहू खवंति कम्मं अणेगभवसंचियमणंतं ॥ ४ ॥ असज्जायनिज्जुत्ती। नमो चउवीसाए तित्थगराणं उसभादिमहावीरपज्जवसाणाणं।

सू० २१। इणमेव निगंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं केवलियं पडिपुणं नेआउयं संसुद्धं सल्लगतणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं निज्जाणमग्गं निव्वाणमग्गं अवितहमविसंधिं सब्बदुक्खप्पहीणमग्गं इत्थं ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिनिव्वायंति सब्बदुक्खाणमंतं करेति सू० २२। तं धम्मं सदहामि पत्तियामि रोएमि फासेमि (पालेमि)अणुपालेमि तं धम्मं सदहंतो पत्तिअंतो रोयंतो फासंतो (पालंतो) अणुपालंतो तस्स धम्मस्स (केवलिपन्नत्तस्स) अब्भुट्ठिओ मि आराहणाए विरओ मि विराहणाए असंजमं परिआणामि संजमं उवसंपज्जामि अबंभं परिआणामि बंभं उवसंपज्जामि अकप्पं परियाणामि कप्पं उवसंपज्जामि अण्णाणं परिआणामि नाणं उवसंपज्जामि अकिरियं परियाणामि किरियं उवसंपज्जामि मिच्छत्तं परियाणामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि अबोहिं परिआणामि बोहिं उवसंपज्जामि अमग्गं परियाणामि मग्गं उवसंपज्जामि सू० २३। जं संभरामि जं च न संभरामि जं पडिक्कमामि जं च न पडिक्कमामि तस्स सब्बस्स देवसियस्स अइयारस्स पडिक्कमामि समणोऽहं संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे अनियाणो दिट्ठिसंण्णो मायामोसविवज्जिओ सू० २४। अइटाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरसमु कम्मभूमीसु जावंत केई साहू रयहरणगुच्छपडिग्गहधारा पंचमहद्वयधारा अट्टारससहस्ससीलंगधारा अक्खयायारचरित्ता ते सब्बे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि सू० २५। 'खामेमि सब्बजीवे, सब्बे जीवा खमंतु मे। मेत्ती मे सब्बभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ ॥८॥ सूत्रगा०॥ एवमहं आलोइय निन्दिय गरहिय दुगुंछियं सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो वंदामि जिणे चउवीसं। सूत्रगा० ९॥ पडिक्कमणज्झयणं ४॥ आलोयण पडिक्कमणे मीस विवेगे तहा विउस्सग्गे। तव छेय मूल अणवट्टया य पारंचिए चेव ॥१५१५॥ दुविहो कायंमि वणो तदुब्भवागंतुओ य णायवो। आगंतुकस्स कीरइ सल्लुद्धरणं न इयरस्स ॥६॥ तणुओ अतिक्खतुंडो असोणिओ केवलं तए(या) लुगो। उद्धरिउं अवउज्झ(णिज्ज)ति सल्लो न मलिज्जइ वणो उ ॥७॥ लुग्गुद्धियंमि बीए मलिज्जइ परमअदूरगे सल्ले। उद्धरणमलणपूरण दूरयरगए तइयगंमि ॥८॥ मा वेअणा उ तो उद्धरित्तु गालंति सोणिय चउत्थे। रुज्झइ लहुंति चिट्ठा वारिज्जइ पंचमे वणिणो ॥ ९॥ रोहेइ वणं छट्ठे हियमियभोई य भुंजमाणो वा। तित्तिअमित्तं छिज्जइ सत्तमए पूइमंसाइ ॥१५२०॥ तहविय अठायमाणो गोणसखइआइ रूप्फए वावि। किरइ तयंगच्छेओ सअट्ठिओ सेसरक्खट्ठा ॥ १॥ मूलुत्तरगुणरूवस्स ताइणो परमचरणपुरिसस्स। अवराहसल्लपभवो भाववणो होइ नायवो ॥ प्र० २८॥ भिक्खायरियाइ सुज्झइ अइयारो कोइ वियडणाए उ। बीओ असमिओमित्ति कीस सहसा अगुत्तो वा? ॥ २॥ सदाइएसु रागं दोसं च मणा गओ तइयगंमि। नाउं अणेसणिज्जं भत्ताइविगिंचण चउत्थे ॥ ३॥ उस्सग्गेणवि सुज्झइ अइयारो कोइ कोइ उ तवेणं। तेणवि असुज्झमाणं छेयविसेसा विसोहिंति ॥ ४॥ निक्खेवेगट्टविहाणमग्गणाकालभेयपरिमाणे। असढसढे विहिदोसा कस्सत्ति फलं च दाराइं ॥५॥ काए उस्सग्गंमि य निक्खेवे हुंति दुन्नि उ विगप्पा। एएसिं दुण्हंपी पत्तेय परूवणं वुच्छं ॥२३२॥ भा०। कायस्स उ निक्खेवो बारसओ छक्कओ य उस्सग्गे। एएसिं तु पयाणं पत्तेय परूवणं वुच्छं ॥६॥ नामं ठवण सरीरे गई निकायत्थिकाय दविए यं। माउय संगह पज्जव भारे तह भावकाए य ॥७॥ काओ कस्सइ नामं कीरइ देहोवि वुच्चई काओ। कायमणिओवि वुच्चइ बद्धमवि निकायमाहंसु ॥ ८॥ अक्खे वराडए वा कट्टे पुत्थे य चित्तकम्मे य। सन्भावमसन्भावे ठवणाकायं वियाणाहि ॥ ९॥ लिप्पगहत्थी हत्थित्ति एस सन्भाविया भवे ठवणा। होइ असन्भावे पुण हत्थित्ति निरागिई अक्खो ॥ १५३०॥ ओरालियवेउव्वियआहारगतेयकम्मए चेव। एसो पंचविहो खलु सरीरकाओ मुणेयवो ॥ १॥ चउसुवि गईसु देहो नेरइयाईण जो स गइकाओ। एसो सरीरकाओ विसेसणा होइ गइकाओ ॥ प्र० २९॥ जेणुवगहिओ वच्चइ भवंतरं जच्चिरेण कालेण। एसो खलु गइकाओ सतेयगं कम्मगसरीरं ॥२॥ निययमहिओ व काओ जीवनिकाओ निकायकाओ य। अत्थित्ति बहुपएसो तेणं पंचत्थिकाया उ ॥ ३॥ जं तु पुरक्खडभावं दवियं पच्छाकडं व भावाओ। तं होइ दव्वदवियं जह भविओ दव्वदेवाई ॥ २३३॥ भा०। जइ अत्थिकायभावो अप(इय)एसो हुज्ज अत्थिकायाणं। पच्छाकडुव्व तो ते हविज्ज दव्वत्थिकाया व ॥२३४॥ भा०। तीयमणागयभावं जमत्थिकायाण नत्थि अत्थित्तं। तेन र केवलएसुं नत्थी दव्वत्थिकायत्तं ॥ ४॥ कामं भवियसुराइसु भावो सो चेव जत्थ वट्टेति। एस्सो न ताव जायइ तेन र ते दव्वदेवुत्ति ॥ ५॥ दुहओऽणंतररहिया जइ एवं तो भवा अणंतगुणा। एगस्स एगकाले भवा न जुज्जंति उ अणेगा ॥ ६॥ दुहओऽणंतरभवियं जह चिट्ठइ आउअं तु जं बद्धं। हुज्जियरेसुवि जइ तं दव्वभवा हुज्ज तो तेऽवि ॥ ७॥ संझासु दोसु सूरु अदिस्समाणोऽवि पप्प समईयं। जह ओभासइ खित्तं तहेव एयंपि नायव्वं ॥ ८॥ माउयपयंति नेमं नवरं अन्नोवि जो पयसमूहो। सो पयकाओ भन्नइ जे एगपए बहू अत्था ॥ २३५॥ भा०। संगहकाओ णेगाऽवि जत्थ एगवयणेण धिप्पंति। जह सालिगामसेणा जाओ वसही (ति) निविट्ठत्ति ॥९॥ पज्जवकाओ पुण हुंति पज्जवा जत्थ पिंडिया बहवे। परमाणुंमिविक्कंमिवि जह वन्नाई अणंतगुणा ॥१५४०॥ एक्को काओ दुहा जाओ एगो चिट्ठइ एगो मारिओ। जीवंतो मएण मारिओ तं लव माणव! केण हेउणा? ॥ १॥ दुग तिग चउरो पंच व भावा बहुआ व जत्थ वट्टंति। सो होइ भावकाओ जीवमजीवे विभासा उ ॥ २॥ काये सरीर देहे बुंदी य चय उवचए य संघाए। उस्सय समुस्सए वा कलेवेरं भत्थ तणु पाणू ॥ ३॥ नामं ठवणा दविए खित्ते

१२१३ आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं, जिथुवर्ग + अज्जयत्तु - ४

काले तहेव भावे य । एसो उस्सग्गस्स उ निक्खेवो छब्बिहो होइ ॥ ४ ॥ दब्बुज्झणा उ जं जेण जत्थ अवकिरइ दब्बभूओ वा । जं जत्थ वावि खित्ते जं जच्चिर जंमि वा काले ॥ ५ ॥ भावे पसत्थमियरं जेण व भावेण अवकिरइ जं तु । अस्संजमं पसत्थे अपसत्थे संजमं चयइ ॥ ६ ॥ खरफरुसई चेयणमचेयणं दुरभिगंधविरसाई । दवियमवि चयइ दोसेण जेण भावुज्झणा सा उ ॥ ७ ॥ उस्सग्ग विउस्सरणुज्झणा य अवगिरण छट्ठण विवेगो । वज्जण चयणुम्मुअणा परिसाडण साडणा चेव ॥ ८ ॥ उस्सग्गे निक्खेवो चउक्कओ छक्कओ अ कायवो । निक्खेवं काऊणं परूवणा तस्स कायवो ॥ ३० ॥ सो उस्सग्गो दुविहो चिट्ठाए अभिभवे य नायवो । भिक्खायरियाइ पढमो उवसग्गभिजुंजणे बिइओ ॥ ९ ॥ इयरहवि ता न जुज्जइ अभिओगो किं पुणाइ उस्सग्गे ? । नणु गव्वेण परपुरं अभिरुज्झइ एवमेयंति(पि) ॥ १५५० ॥ मोहपयडी भयं अभिभवित्तु जो कुणइ काउसग्गं तु । भयकारणे य तिविहे णाभिभवो नेव पडिसेहो ॥ १ ॥ आगारेऊण परं रणिच्च जइ सो करिज्ज उस्सग्गं । जुंजिज्ज अभिभवो ता तदभावे अभिभवो कस्स ? ॥ २ ॥ अट्टविहंपि य कम्मं अरिभूयं तेण तज्जयट्ठाए । अब्भुट्ठिया उ तवसं-जमंमि कृवंति निग्गंथा ॥ ३ ॥ तस्स कसाया चत्तारि नायगा कम्मसत्तुसिन्नस्स । काउस्सग्गमभग्गं करंति तो तज्जयट्ठाए ॥ ४ ॥ संबच्छरमुक्कोसं अंतमुहुत्तं च अभिभवुस्सग्गे । चिट्ठा-उस्सग्गस्स उ कालपमाणं उवरि वुच्छं ॥ ५ ॥ उस्सिउस्सिओ अ तह उस्सिओ अ उस्सियनिसन्नओ चेव । निसनुस्सिओ निसन्नओ चेव निसन्नगनिसन्नओ चेव ॥ ६ ॥ निवणुस्सिओ निवन्नो निवन्ननिवन्नगो अ नायवो । एएसिं तु पयाणं पत्तेय परूवणं वुच्छं ॥ ७ ॥ उस्सिअ निसन्नग निवन्नगे य इक्किक्कगंमि उ पयंमि । दव्वेण य भावेण अ चउक्कभयणा उ कायवो ॥ ८ ॥ देहमइजइडसुद्धी सुहदुक्खतित्तिक्खया अणुप्पेहा । झायइ य सुहं झ्णणं एगग्गो काउसग्गंमि ॥ ९ ॥ अंतोमुहुत्तकालं चित्तस्सेग्गया हवइ झ्णणं । तं पुण अट्टं रुहं धम्मं सुक्कं चं नायव्वं ॥ १५६० ॥ तत्थ य दो आइल्ला झ्णणा संसारवट्ठणा भणिया । दुन्नि य विमुक्खहेऊ तेसिऽहिगारो न इयरेसिं ॥ १ ॥ संवरियासवदारा अच्चावाहे अकंटए देसे । काऊण थिरं ठाणं ठिओ निसन्नो निवन्नो वा ॥ २ ॥ चेयणमचेयणं वा वत्थुं अवलंबित्तं घणं मणसा । झायइ सुअमत्थं वा दवियं तप्पज्जए वावि ॥ ३ ॥ तत्थ उ भणिज्ज कोई झ्णणं जो माणसो परीणामो । तं न हवइ जिणदिट्ठं झ्णणं तिविहेवि जोगंमि ॥ ४ ॥ वायाईधाऊणं जो जाहे होइ उक्कडो धाऊ । कुविओत्ति सो पवुच्चइ न य इयरे तत्थ दो नत्थि ॥ ५ ॥ एमेव य जोगाणं तिण्हवि जो जाहे उक्कडो जोगो (होइ) । तस्स तहिं निदेसो इयरे तत्थिक्क दो व नवा ॥ ६ ॥ काएविय अज्झप्पं वायाइ मणस्स चेव जह होइ । कायवयमणोजुत्तं तिविहं अज्झप्पमाहंसु ॥ ७ ॥ जइ एगग्गं चित्तं धारयओ वा निरुंभओ वावि । झ्णणं होइ नणु तहा इअरेसुवि दोसु एमेव ॥ ८ ॥ देसियदंसियमग्गो वच्चंतो नरवई लहे सहं । रायत्ति एस वच्चइ सेसा अणुगा-मिणो तस्स ॥ ९ ॥ पढमिल्लुयस्स उदए कोहस्सिअरेवि तिन्नि तत्थत्ति । न य ते ण संति तहियं न य पाहन्नं तहेयंमि ॥ १५७० ॥ मा मे एजउ काउत्ति अचलओ काइअं हवइ झ्णणं । एमेव य माणसियं निरुद्धमणसो हवइ झ्णणं ॥ १ ॥ जह कायमणनिरोहे झ्णणं वायाइ जुज्जइ न एवं । तम्हा वई उ झ्णणं न होइ को वा विसेसुत्थ ? ॥ २ ॥ मा मे चलउत्ति तणू जह तं झ्णणं निरेइणो होइ । अजयाभासविवज्जस्स वाइअं झ्णणमेवं तु ॥ ३ ॥ एवंविहा गिरा मे वत्तव्वा एरिसा न वत्तव्वा । इय वेयालियवक्कस्स भासओ वाइयं झ्णणं ॥ ४ ॥ मणसा वावारंतो कायं वायं च तप्परीणामो । भंगिअसुअं गुणंतो वट्ठइ तिविहेवि झ्णणंमि ॥ ५ ॥ धम्मं सुक्कं च दुवे झायइ झ्णणाइं जो ठिओ संतो । एसो काउस्सग्गो उस्सिउस्सिओ होइ नायवो ॥ ६ ॥ धम्मं सुक्कं च दुवे नवि झायइ नवि य अट्टरुहाइं । एसो काउस्सग्गो दब्बुसिओ होइ नायवो ॥ ७ ॥ पयलायंत सुसुत्तो नेव सुहं झायइ झ्णणमसुहं वा । अच्चावारियचित्तो जागरमाणोवि एमेव ॥ ८ ॥ अचिरोववन्नगाणं मुच्छियअवत्तमत्तसुत्ताणं । ओहाडियमव्वत्तं च होइ पाएण चित्तंति ॥ ९ ॥ गाढालंबणलग्गं चित्तं वुत्तं निरेयणं झ्णणं । सेसं न होइ झ्णणं मउअमवत्तं भमंतं वा ॥ १५८० ॥ उम्हासेसोवि सिही होउं लद्धिंघणो पुणो जलइ । इय अवत्तं चित्तं होउं वत्तं पुणो होइ ॥ १ ॥ पुव्वं च जं तदुत्तं चित्तस्सेग्गया हवइ झ्णणं । आवन्नमणेग्गं चित्तं चिय तं न तं झ्णणं ॥ २ ॥ मणसहिण उ काएण कुणइ वायाइ भासई जं च । एयं च भावकरणं मणरहियं दब्बकरणं च ॥ ३ ॥ जइ ते चित्तं झ्णणं एवं झ्णणमवि चित्तमावन्नं । तेन र चित्तं झ्णणं अह नेवं झ्णणमन्नं ते ॥ ४ ॥ नियमा चित्तं झ्णणं झ्णणं चित्तं न यावि भइयव्वं । जह खइरो होइ दुमो दुमो य खइरो अखयरो वा ॥ ५ ॥ अट्टं रुहं च दुवे झायइ झ्णणाइं जो ठिओ संतो । एसो काउस्सग्गो दब्बुसिओ भावउ निसन्नो ॥ ६ ॥ धम्मं सुक्कं च दुवे झायइ झ्णणाइं जो निसन्नो अ । एसो काउस्सग्गो निसन्नुसिओ होइ नायवो ॥ ७ ॥ धम्मं सुक्कं च दुवे नवि झायइ नवि य अट्टरुहाइं । एसो काउस्सग्गो निसण्णओ होइ नायवो ॥ ८ ॥ अट्टं रुहं च दुवे झायइ झ्णणाइं जो निसन्नो य । एसो काउस्सग्गो निसन्नगनिसन्नओ नाम ॥ ९ ॥ धम्मं सुक्कं च दुवे झायइ झ्णणाइं जो निवन्नो उ । एसो काउस्सग्गो निवनुसिओ होइ नायवो ॥ १५९० ॥ धम्मं सुक्कं च दुवे नवि झायइ नवि य अट्टरुहाइं । एसो काउस्सग्गो निवण्णओ होइ नायवो ॥ १ ॥ अट्टं रुहं च दुवे झायइ झ्णणाइं जो निवन्नो उ । एसो काउस्सग्गो निवन्नगनिवन्नओ नाम ॥ २ ॥ अतरंतो उ निसन्नो करिज्ज तहवि यऽसहू निवन्नो १२१४ आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं , सिर्युत्तरा

उ । संबाहुवस्सए वा कारणिय सहूवि य निसन्नो ॥ १५९३ ॥ करेमि भंते ! ०. इच्छामि ठाइउं काउस्सगं जो मे देवसिओ ० ॥ सू० २६ ॥ तरस उत्तरीकरणेण पायच्छित्तकरणेण विसोहीकरणेण विसाहीकरणेण पावाणं कम्माणं निग्घायणट्टाए ठामि काउस्सगं ॥ अन्नत्थ ऊससिएण नीससिएण खासिएण छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहु-
मेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेत्तसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सगो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि
ताव कायं ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० २७ ॥ 'काउस्सगंमि ठिओ निरेयकाओ निरुद्धवइपसरो । जाणइ सुहमेगमणो मुणि देवसियाइअइयारे ॥ प्र० ३१ ॥ परिजा-
णिऊण य जओ संमं गुरुजणपगासणेणं तु । सोहेइ अप्पगं सो जम्हा य जिणेहिं सो भणिओ ॥ प्र० ३२ ॥ काउस्सगं मुक्खपहदेसियं जाणिऊण तो धीरा । दिवसाइयारजाणणठयाइ
ठायंति उस्सगं ॥ १५९४ ॥ सयणाऽऽसणऽण्णपाणे चेइय जइ सेज्ज काय उच्चारे । समिती भावण गुत्ती वितहायरणंमि अइयारो ॥ ५ ॥ गोसमुहणंतगाई आलोए देसिए य अइयारे । सब्बे
समाणइत्ता हियए दोसे ठविज्जाहि ॥ ६ ॥ काउं हियए दोसे जहक्कमं जा न ताव पारेइ । ताव सुहुमाणुपाणू धम्मं सुक्कं च झाइज्जा ॥ ७ ॥ देसिय राइय पक्खिय चाउम्मासे तहेव वरिसे
य । इक्किक्के तिन्नि गमा नायवा पंचसेएसु ॥ ८ ॥ आइमकाउस्सगो पडिकमणे ताव काउ सामइयं । तो किं करेह बीयं तइयं च पुणोऽवि उस्सगो ? ॥ ९ ॥ समभावंमि ठियप्पा उस्सगं
करिय तो पडिकमइ । एमेव य समभावे ठियस्स तइयं तु उस्सगो ॥ १६०० ॥ सज्झायझाणतवओसहेसु उवएसथुइपयाणेसु । संतगुणकित्तणेसु अ न हुंति पुणरुत्तदोसा उ ॥ १ ॥ मित्ति
मिउमहवत्ते छत्ति अ दोसाण छायणे होइ । मित्ति य मेराइ ठिओ दुत्ति दुगुंछामि अप्पाणं ॥ २ ॥ कत्ति कडं मे पावं डत्ति य डेवेमि तं उवसमेणं । एसो मिच्छादुक्कडपयक्खरत्थो
समासेणं ॥ ३ ॥ खंडियविराहियाणं मूलगुणाणं सउत्तरगुणाणं । उत्तरकरणं कीरइ जह सगडरहंगेहाणं ॥ ४ ॥ पावं छिंदइ जम्हा पायच्छित्तं तु भन्नइ तेणं (तम्हा) । पाएण वावि चित्तं
विसोहए तेण पच्छित्तं ॥ ५ ॥ दब्बे भावे य दुहा सोही सहं च इक्कमिक्कं तु । सब्बं पावं कम्मं भामिज्जइ जेण संसारे ॥ ६ ॥ उस्सासं न निरुंभइ आभिग्गहिओवि किमुअ चिट्टाए ? ।
सज्जमरणं निरोहे सुहुमुस्सासं तु जयणाए ॥ ७ ॥ कासखुअजंभिए मा हु सत्थमणिलोऽनिलस्स तिबुण्हा । असमाही य निरोहे मा मसगाई अ तो हत्थो ॥ ८ ॥ वायनिसग्गुड्डोए
जयणासहस्स नेव य निरोहो । उड्डोए वा हत्थो भमलीमुच्छासु अ निवेसो ॥ ९ ॥ वीरियसजोगयाए संचारा सुहुमबायरा देहे । बाहिं रोमंचाई अंतो खेलाणिलाईया ॥ १६१० ॥
आलोअचलं चक्खु मणुव्व तं दुक्करं थिरं काउं । रूवेहिं तयं खिप्पइ सभावओ वा सयं चलइ ॥ १ ॥ न कुणइ निमेसजुत्तं तत्थुवओगे ण ज्ञाण झाइज्जा । एगनिसिं तु पवन्नो झायइ
साहू अणिमिसच्छो(ऽवि) ॥ २ ॥ अगणीओ छिंदिज्ज व बोहियखोभाइ दीहडक्को वा । आगारेहिं अभग्गो उस्सगो एवमाईहिं ॥ ३ ॥ ते पुण ससूरिए चिय पासवणुच्चारकालभूमीओ । पे-
हित्ता अत्थमिए ठंतुस्सगं सए ठाणे ॥ ४ ॥ जइ पुण निव्वाघाओ आवासं तो करिंति सब्बेवि । सड्डाइकहणवाघाययाइ पच्छा गुरू ठंति ॥ ५ ॥ सेसा उ जहासत्ति आपुच्छित्तान्ण ठंति
सट्टाणे । सुत्तत्थस(झ)रणहेउं आयरिएं ठियंमि देवसियं ॥ ६ ॥ जो हुज्ज उ असमत्थो बालो बुड्डो गिलाण परितंतो । सो विकहाइविराहिओ झाइज्जा जा गुरू ठंति ॥ ७ ॥ जा देवसिअं
दुगुणं चितइ गुरू अहिंंडओऽचिट्टं । बहुवावारा इअरे एगगुणं ताव चितंति ॥ ८ ॥ पवइयाण व चिट्टं नाऊण गुरू बहुं बहुविहीअं । कालेण तदुच्चिएणं पारेई थोवचित्तोऽवि ॥ प्र० ३३ ॥
नमोक्कार चउवीसग किइकम्मालोअणं पडिकमणं । किइकम्म दुरालोइअदुप्पडिकंते य उस्सगो ॥ ९ ॥ एस चरित्तुस्सगो दंसणमुद्धीइ तइयओ होइ । सुयनाणस्स चउत्थो सिद्धाण थुई
अ किइकम्मं ॥ १६२० ॥ सब्बलोए अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सगं वंदणवत्तियाए पूअणवत्तियाए सक्कारवत्तियाए सम्माणवत्तियाए बोहिल्लाभवत्तियाए निरुवसग्गवत्तियाए
सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्डमाणीए ठामि काउस्सगं ॥ सू० २८ ॥ 'पुक्खरवरदीवड्डे धायइसंडे य जंबुदीवे य । भरहेरवयविदेहे धम्माइगरे नमंसांमि ॥ सूत्रगा० १० ॥ तम-
तिमिरपडलविदंसणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स । सीमाधरस्स वंदे पप्फोडियमोहजालस्स ॥ ११ ॥ जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कट्टाणपुक्खलविसालसुहावहस्स । को देवदानवन-
रिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवल्लभ करे पमायं ? ॥ १२ ॥ सिद्धे भो ! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवंनागसुवण्णकिण्णरगणस्सअभूअभावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्टिओ
जगमिणं तेलुक्कमच्चसुरं, धम्मो वड्डउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्डउ ॥ १३ ॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सगं वंदण० अन्नत्थ० ॥ सू० २९ ॥ सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परं-
परगयाणं । लोअग्गमुवगयाणं नमो सया सब्बसिद्धाणं ॥ १४ ॥ जो देवाणवि देवो जं देवा पंजली नमंसंति । तं देवदेवमहियं सिरसा वंदे महावीरं ॥ १५ ॥ इक्कोऽवि नमुक्कारो जिणवर-
वसहस्स वद्धमाणस्स । संसारसागराओ तारेइ नरं व नारिं वा ॥ १६ ॥ उज्जितसेलसिहरे दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्ठिं अरिट्टनेमिं नमंसांमि ॥ १७ ॥ चत्तारि अट्ट
दस दो य वंदिआ जिणवरा चउवीसं । परमट्टनिट्टिअट्टा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ सूत्रगा० १८ ॥ सू० ३० ॥ सुकयं आणत्तिपिव लोगे काऊण सुकयकिइकम्मा । वड्डंतिया थुईओ गुरुथुइगहणे
१२१५ आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं, निर्युक्ति + अज्जयथा ५

कए तिन्नि ॥१॥ निहामत्तो न सरइ अइयारं मा य घट्टणंऽण्णोऽन्नं । किइअकरणदोसा वा गोसाई तिन्नि उस्सग्गा ॥२॥ एत्थ पढमो चरित्ते दंसणसुद्धीएँ बीयओ होइ । सुयनाणस्स य तनिओ नवरं चिंतति तत्थ इमं ॥३॥ तइए निसाइयारं चिंतइ चरमंमि किं तवं काहं ? । छम्मासा एगदिणाइहाणि जा पोरिसि नमो वा ॥४॥ अहमवि खामेमिचित्थि तुब्भेहिं समं अहंपि वंदामि । आयरियसंतियं नित्थारगा उ गुरुणो य वयणाइं ॥१६२५॥ इच्छामि खमासमणो ! उवट्टिओमि अम्भितरपक्खियं खामेउं, इच्छं, खामेमि अम्भितरपक्खियं पन्नर-सण्हं दिवसाणं पन्नरसण्हं राइणं जंकिंचि अपत्तियं परपत्तियं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए जंकिंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न याणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं । सू० ३१ । इच्छामि खमासमणो !, पिअं च मे जं भे हट्टाणं तुट्टाणं अप्पायंकाणं अभग्गजोगाणं सुसीलाणं मुच्चयाणं सायरियउवज्झायाणं नाणेणं दंसणेणं चरित्तेणं तवसा अप्पाणं भावेमाण्णं बहुसुभेण भे दिवसो पोसहो पक्खो वड्ढंतो अन्नो य भे कल्लाणेणं पज्जुवट्टिओ, सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि ॥ तुब्भेहिं समं । सू० ३२ । इच्छामि खमासमणो !, पुब्बिं चेइआइं वंदित्ता नमंसित्ता तुब्भण्हं पायमूले विहरमाणेणं जे केई बहुदेवसिया साहुणो दिट्ठा समाणा वा वसमाणा वा गामाणुगामं दूइज्जमाणा वा राइणिया संपुच्छंति ओमराइणिया वंदंति अज्जया वंदंति अज्जियाओ वंदंति सावया वंदंति सावियाओ वंदंति अहंपि निस्सल्लो निक्कसाओत्तिकट्टु सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि ॥ अहमवि वंदावेमि चेइआइं । सू० ३३ । इच्छामि खमासमणो !, उवट्टिओ मि तुब्भण्हं संतिअं अहा कप्पं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पाय-पुञ्जणं वा(रयहरणं वा)अक्खरं वा पयं वा गाहं वा सिलोगं वा(सिलोगद्धं वा)अट्टं वा हेउं वा पसिणं वा वागरणं वा तुब्भेहिं सम्मं चिअत्तेण दिन्नं मए अविणएण पडिच्छिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ आयरियसंतिअं । सू० ३४ । इच्छामि खमासमणो !, अहमपुब्बाइं कयाइं च मे किइकम्माइं आयारमंतरे विणयमंतरे सेहिओ सेहाविओ संगहिओ उवग्गहिओ सा-रिओ वारिओ चोइओ पडिचोइओ चिअत्ता मे पडिचोयणा उवट्टिओऽहं (अम्भुट्टिओऽहं) तुब्भण्हं तवतेयसिरीए इमाओ चाउरंतसंसारकंताराओ साहट्टु नित्थरिस्सामित्तिकट्टु सिरसा मणसा मत्थएणवदामि ॥ नित्थारगपारगा होह । सू० ३५ । चाउम्मासिय वरिसे आलोअण नियमसो हु दायवा । गहणं अभिग्गहाण य पुब्बगहिए निवेएउं ॥२३६॥ भा० । चाउम्मासियवरिसे उस्सग्गो खित्तदेवयाए य । पक्खिय सिज्जसुरीए करिंति चउमासिए वेगे ॥२३७॥ भा० । देसिय राइय पक्खिय चउम्मासे य तहेव वरिसे य । एएसु हुंति नियया उस्सग्गा अनिअया सेसा ॥१६२६॥ साय सयं गोसऽद्धं तिन्नेव सया हवंति पक्खंमि । पंच य चाउम्मासे अट्टसहस्सं च वारिसए ॥७॥ चत्तारि दो दुवालस वीसं चत्ता य हुंति उज्जोआ । देसिअ राइय पक्खिअ चाउम्मासे य वरिसे य ॥८॥ पणवीसमद्धतेरस सिलोग पन्नत्तरिं च बोद्धवा । सयमेगं पणवीसं वे बावन्ना य वारिसिए ॥९॥ गमणागमण विहारे सुत्ते वा सुमिणदंसणे राओ । नावानइसंतारे इरियावहियापडिक्कमणं ॥१६३०॥ भत्ते पाणे सथणासणे य अरिहन्तसमणसिज्जासु । उच्चरे पासवणे पणवीसं हुंति उस्सासा ॥ २३८ ॥ भा० । नियआलयाओ गमणं अन्नत्थ उ सुत्त-पोरिसिनिमित्तं । होइ विहारो एत्थवि पणवीसं हुंति ऊसासा ॥ प्र० ३४ ॥ उद्देससमुद्देसे सत्तावीसं अणुन्नवणियाए । अट्टेव य ऊसासा पट्टवणपडिक्कमणमाई ॥ १ ॥ जुज्जइ अकालप-ट्टियाइएसु दुट्टुअपडिच्छियाईसु । समणुन्नसमुद्देसे काउस्सग्गस्स करणं तु ॥२॥ जं पुण उद्दिसमाणा अणइक्कंता कुणह उस्सग्गं । एस अकओवि दोसो परिधिप्पइ किं मुहा ? भंते ! ॥ ३ ॥ पावुग्घाई कीरइ उस्सग्गो मंगलंति उद्देसे । अणुवहियमंगलाणं मा हुज्ज कहिंचि णे विग्घं ॥ ४ ॥ पाणवहमुसावाए अदत्तमेहुणपरिग्गहे चैव । सयमेगं तु अणूणं ऊसासाणं हवि-ज्जाहि ॥ ५ ॥ नावा(ए) उत्तरिउं वहमाई तह नइं च एमेव । संतारेण चलेण व गंतुं पणवीस ऊसासा ॥ प्र० ३५ ॥ पायसमा ऊसासा कालपमाणेण हुन्ति नायवा । एयं कालपमाणं उस्सग्गेणं तु नायव्वं ॥ ६ ॥ जोखलु तीसइवरिसो सत्तरिवरिसेण पारणाइ समो । विसमे व कूडवाही निच्चिआणे हु से जड्ढे ॥ २३९ ॥ भा० । समभूमेवि अइभरो उज्जाणे किमुअ कूडवा-हिस्स ? । अइभारेणं भज्जइ तुत्तयघाएहि अ मरालो ॥२४०॥ भा० । एमेव बलसमग्गो न कुणइ मायाइ सम्ममुस्सग्गं । मायावडियं कम्मं पावइ उस्सग्गकेसं च ॥ प्र० ३६ ॥ मायाए उस्सग्गं सेसं च तवं अकुब्बओ सहुणो । को अन्नो अणुहोही सकम्मसेसं अणिज्जरियं ? ॥ ७ ॥ निक्कूडं सविसेसं वयाणुरूवं बलाणुरूवं च । खाणुब्र उद्देहो काउस्सग्गं तु ठाइज्जा ॥ ८ ॥ तरुणो बलवं तरुणो य दुब्बलो थेरओ बलसमिद्धो । थेरो अबलो चउसुवि भंगेसु जहाबलं ठाई ॥ ९ ॥ पयलायइ पडिपुच्छइ कंटयवीयारपासवणधम्मे । नियडी गेलन्नं वा करेइ कूडं हवइ एयं ॥ १६४० ॥ पुब्बं ठंति य गुरुणो गुरुणा उस्सारियंमि पारंति । थायंति य सविसेसं तरुणा उ अनूणविरियागा ॥ १ ॥ चउरंगुल मुहपत्ती उज्जुए डब्बहत्थ रयहरणं । वोसट्टचत्तदेहो काउस्सग्गं करिज्जाहि ॥ २ ॥ घोडग लयाइ खंभे कुड्ढे माले य सवरिवहु नियले । लंबुत्तर थण उद्धी संजय खलि(णे य)वायस कविट्टे ॥ ३ ॥ सीसुकंपिय मूई अंगुलि भमुहा य वारुणी पेहा । नाही-करयलकुप्पर उस्सारिय पारियंमि थुई ॥ ४ ॥ वासीचंदणकप्पो जो मरणे जीविए य समसण्णो (दरिसी) । देहे य अपडिबद्धो काउस्सग्गो हवइ तस्स ॥ ५ ॥ तिविहाणुवसग्गाणं दिव्वाणं माणुसाण तिरियाणं । सम्ममहियासणाए काउस्सग्गो हवइ सुद्धो ॥ ६ ॥ इहलोगंमि सुभदा राया उइओद सिट्ठिभज्जा य । सोदासखग्गिथंभण सिद्धी सग्गो य परलोए ॥ ७ ॥ (३०५)

जह करगओ निकितइ दारुं इंतो पुणोवि वचंतो । इअ कंतंति सुविहिआ काउस्सग्गेण कम्माइं ॥२४१॥ भा०। काउस्सग्गे जह सुट्टियस्स भजंति अंगमंगाइं । इय भिंदंति सुविहिया अट्टविहं कम्मसंघायं ॥ ८ ॥ अन्नं इमं सरिरं अन्नो जीवुत्ति एव कयबुद्धी । दुक्खपरिकिलेसकरं छिंद ममत्तं सरिराओ ॥ ९ ॥ जावइया किर दुक्खा संसारे जे मया समणुभूया । इत्तो दुव्विसहतरा नरएसु अणोवमा दुक्खा ॥ १६५० ॥ तम्हा उ निम्ममेणं मुणिणा उवलद्धसुत्तसारेणं । काउस्सग्गो उग्गो कम्मखयट्टाय कायव्वो ॥ १ ॥ काउस्सग्गज्झयणं ५ ॥ पच्चखाणं पच्चखाओ पच्च-
क्खेयं च आणुपुत्रीए । परिसा कहणविही या फलं च आईइ छब्भेया ॥ २ ॥ नामं ठवणा दविए अइच्छ पडिसेहमेव भावे य । एए खलु छब्भेया पच्चक्खाणंमि नायव्वा ॥ २४२ ॥ भा० ।
दव्वनिमित्तं दव्वे दव्वभूओ व तत्थ रायसुआ । अइच्छापच्चक्खाणं बंभणसमणा न (अ) इच्छत्ति ॥ ३ ॥ अमुगं दिज्जउ मज्झं नत्थि मम तं तु होइ पडिसेहो । सेसपयाण य गाहा पच्चक्खाणस्स भावंमि ॥ ४ ॥ तं दुविहं सुअनोसुअ सुयं दुहा पुव्वमेव नोपुव्वं । पुव्वसुय नवमपुव्वं नोपुव्वसुयं इमं चेव ॥ ५ ॥ नोसुअपच्चक्खाणं मूलगुणे चेव उत्तरगुणे य । मूले सव्वं देसं इत्तरियं आवकहियं च ॥ ६ ॥ भा० । मूलगुणावि य दुविहा समणाणं चेव सावयाणं च । ते पुण विभज्जमाणा पंचविहा हुंति नायव्वा ॥ प्र० ३७ ॥ पाणिवह मुसावाए अदत्त मेहुण परिग्गहे चेव । समणाणं मूलगुणा तिविहंतिविहेण नायव्वा ॥ २४७ ॥ भा० । सावयधम्मस्स विहिं वुच्छामी धीरपुरिसपन्नत्तं । जं चरिऊण सुविहिया गिहिणोवि सुहाइं पावंति ॥ ३ ॥ साभिग्गहा य निरभिग्गहा य ओहेण सावया दुविहा । ते पुण विभज्जमाणा अट्टविहा हुंति नायव्वा ॥ ४ ॥ दुविहतिविहेण पढमो दुविहंदुविहेण बीयओ होइ । दुविहंएगविहेणं एगविहं चेव तिविहेणं ॥ ५ ॥ एगविहं दुविहेणं इक्किक्कविहेण छट्टओ होइ । उत्तरगुण सत्तमओ अविरयओ चेव अट्टमओ ॥ ६ ॥ पणय चउक्कं च तिगं दुगं च एगं च गिण्हइ वयाइं । अह-
वाऽवि उत्तरगुणे अहवाऽवि न गिण्हए किंची ॥ ७ ॥ निस्संकिय निक्कंखिय निव्वित्तिगिच्छा अमूढदिट्ठी यं । वीरवयणंमि एए बत्तीसं सावया भणिया ॥ १६५८ ॥ पंचण्हमणुवयाणं इक्क-
गदुगतिगचउक्कपणएहिं । पंचगदसदसपणइक्कगे य संजोग कायव्वा ॥ प्र० ३८ ॥ वयगिक्कगसंजोगाण हुंति पंचण्ह तीसई भंगा । दुगसंजोगाण दसण्ह तिन्नि सट्टा सया हुंति ॥ ९ ॥ तिगसंजोगाण दसण्ह भंगसया इक्कवीसई सट्टा । चउसंजोगाण पुणो चउसट्टिसयाणिऽसीयाणि ॥ ४० ॥ सत्तुत्तरिं सयाइं छसत्तराइं च पंच संजोए । उत्तरगुण अविरय मेलियाण जा-
णाहि सव्वग्गं ॥ १ ॥ सोलस चेव सहस्सा अट्ट सया चेव होंति अट्टहिया । एसो उवासगाणं वयगहणविही समासेणं ॥ प्र० ४२ ॥ तत्थ समणोवासओ पुव्वामेव मिच्छत्ताओ पडिक्कमइ सम्मत्तं उवसंपज्जइ, नो से कप्पइ अज्जप्पभिई अन्नउत्थिअदेवयाणि वा अन्नउत्थियपरिग्गहियाणि अरिहंतचेइयाणि वा वंदित्तए वा नमंसित्तए वा पुव्विं अणालत्तएणं आलवित्तए वा तेसिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दाउं वा अणुप्पयाउं वा, नन्नत्थ रायाभिओगेणं गणाभिओगेणं बलाभिओगेणं देवाभिओगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं, से य सम्मत्ते पसत्थसमत्तमोहणीयकम्माणुवेयणोवसमखयसमुत्थे पसमसंवेगाइलिंगे सुहे आयपरिणामे पन्नत्ते, सम्मत्तस्स समणोवासएणं इमे पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरिक्खा, तंजहा-
संका कंखा वित्तिगिच्छा परपासंडपसंसा परपासंडसंथवे । सू० ३६ । थूलगपाणाइवायं समणोवासओ पच्चक्खाइ, से पाणाइवाए दुविहे पन्नत्ते तंजहा-संकप्पओ अ आरंभओ अ, तत्थ समणोवासओ संकप्पओ जावजीवाए पच्चक्खाइ, नो आरंभओ, थूलगपाणाइवायवेरमणस्स समणोवासएणं इमे पंच अइयारा जाणियव्वा० तंजहा-बंधे वहे छविच्छेए अइभारे भत्त-
पाणवुच्छेए । सू० ३७ । थूलगमुसावायं समणोवासओ पच्चक्खाइ, से य मुसावाए पंचविहे पं० तं०-कन्नालीए गवालीए भोमालीए नासावहारे कूडसक्खिज्जे, थूलमुसावायवेरमणस्स समणोवासएणं इमे पंच० तंजहा-सहसऽभक्खाणे रहस्सभक्खाणे सदारमंतभेए मोसुवएसे कूडलेहकरणे २ । ३८ । अदत्तादाणं समणो०, से अदिन्नादाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा-स-
चित्तादत्तादाणे य अचित्तादत्तादाणे अ, थूलादत्तादाणवेरमणस्स समणोवासएणं इमे पंच अइयारा जाणियव्वा० तंजहा-तेनाहडे तक्करपओगे विरुद्धरज्जाइक्कमणे कूडतुलकूडमाणे तप्प-
डिरूवगववहारे । ३९ । परदारगमणं समणोवासओ पच्चक्खाति सदारसंतोसं वा पडिवज्जइ, से य परदारगमणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा-ओरालियपरदारगमणे य वेउव्वियपरदारगमणे य, सदा-
रसंतोसस्स समणोवा० इमे पंच० तंजहा-अपरिग्गहियागमणे इत्तरियपरिग्गहियागमणे अणंगकीडा परविवाहकरणे कामभोगतिव्वाभिलासे । ४० । अपरिमियपरिग्गहं समणो० इच्छाप-
रिमाणं उवसंपज्जइ, से परिग्गहे दुविहे पं० तंजहा-सच्चित्तपरिग्गहे य अचित्तपरिग्गहे य, इच्छापारिमाणस्स समणो० इमे पंच०-धणधन्नपमाणाइक्कमे खित्तवत्थुपमाणाइक्कमे हिर-
ण्णसुवण्णपमाणाइक्कमे दुपयचउप्पयपमाणाइक्कमे कुवियपमाणाइक्कमे । ४१ । दिसिवए तिविहे पण्णत्ते तंजहा-उड्ढदिसिवए अहोदिसिवए तिरियदिसिवए, दिसिवयस्स समणो० इमे पंच० तंजहा-उड्ढदिसिपमाणाइक्कमे अहोदिसिपमाणाइक्कमे तिरियदिसिपमाणाइक्कमे खित्तवुड्ढी सइअंतरद्धा । ४२ । उवभोगपरिभोगवए दुविहे पण्णत्ते तंजहा-भोअणओ कम्मओ अ, भोअणओ समणोवा० इमे पंच०-सचित्ताहारे सचित्तपडिबद्धाहारे अप्पउलिओसहिभक्खणया दुप्पउलिओसहिभक्खणया तुच्छोसहिभ० । ४३ । कम्मओ णं समणोवा०

१२१७ आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं, निर्युक्ति + अज्जपयणी-६

इमाइं पन्नरस कम्मादाणाइं जा० तंजहा-इंगालकम्मे वणकम्मे साडीकम्मे भाडीकम्मे फोडीकम्मे दंतवाणिज्जे लक्खवाणिज्जे रसवाणिज्जे केसवाणिज्जे विसवाणिज्जे जंतपीलणकम्मे
निहंछणकम्मे दवग्गिदावणया सरदहतलायसोसणया असईपोसणया ॥४४॥ अणत्थदंडे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा-अवज्झाणायरिए पमत्तायरिए हिंसप्पयाणं पावकम्मोवएसे, अणत्थदंड-
वेरमणस्स समणोवा० इमे पञ्च० तंजहा-कंदप्पे कुक्कुइए मोहरिए संजुत्ताहिगरणे उवभोगपरिभोगाइरेगे ॥४५॥ सामाइयं नाम साक्खजोगपरिवज्जणं निरवज्जजोगपडि(रि)सेवणं च, 'सिक्खा
दुविहा गाहा उववाय ठिइ गई कसाया य । बंधंता वेयंता पडिवज्जाइकमे पंच ॥१९॥ सूत्रगा० । सामाइअंमि उ कए समणो इव सावओ हवइ जम्हा । एएण कारणेणं बहुसो सामाइयं कुज्जा
॥२०॥ सव्वंति भाणिऊणं विरइं खलु जस्स सव्विया नत्थि । सो सव्वविरइवाइं चुक्कइ देसं च सव्वं च ॥२१॥ सामाइयस्स समणो० इमे पञ्च० तंजहा-मणदुप्पणिहाणे वइदुप्पणिहाणे
कायदुप्पणिहाणे सामाइयस्स सइअकरणया सामाइयस्स अणवट्टियस्स करणया ॥४६॥ दिसिद्वयगहियस्स दिसापरिमाणस्स पइदिणं परिमाणकरणं देसावगासियं नाम, देसावगा-
सियस्स समणो० इमे पञ्च० तंजहा-आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे सदाणुवाए रूवाणुवाए बहिया पुग्गलपक्खेवे ॥४७॥ पोसहोववासे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा-आहारपोसहे सरी-
रसक्कारपोसहे बंधचेरपोसहे अच्चावारपोसहे, पोसहोववासस्स समणो० इमे पञ्च० तंजहा-अप्पडिलेहियदुप्पडिलेहियसिज्जासंधारए अपमज्जियदुप्पमज्जियसेज्जासंधारए अपडिलेहियदु-
प्पडिलेहियउच्चारपासवणभूमी अप्पमज्जियदुप्पमज्जियउच्चारपासवणभूमी पोसहोववासस्स सम्मं अणणुपालणया ॥४८॥ अतिहिसंविभागो नाम नायागयाणं कप्पणिज्जाणं अन्नपाणा-
ईणं दव्वाणं देसकालसद्दासक्कारकमजुअं पराए भत्तीए आयाणुग्गहवुद्धीए संजयाणं दाणं, अतिहिसंविभागस्स समणो० इमे पञ्च० तंजहा-सच्चित्तनिकखेवणया सच्चित्तपिहणया
कालाइक्कमे परववएसे मच्छरिया य ॥४९॥ इत्थं पुण समणोवासगधम्मं पंचाणुव्वयाइं तिण्णि गुणव्वयाइं आवकहियाइं चत्तारि सिक्खावयाणि इत्तरियाइं, एयस्स समणोवासग-
धम्मस्स मूलवत्थुं सम्मत्तं तंजहा-तं निसग्गेण वा अभिगमेण वा पंचअइयारविसुद्धं, अणुव्वयगुणव्वयाइं अभिग्गहा अन्नेऽवि(य) अणेगा पडिमादओ विसेसकरणजोगा, अपच्छिमा
मारणंनिया संलेहणासुसणाराहणया, इमीए समणोवासएणं इमे पञ्च० तंजहा-इहलोगासंसप्पओगे परलोगासंसप्पओगे जीवियासंसप्पओगे मरणासंसप्पओगे कामभोगासंसप्पओगे
॥५०॥ सू० । 'पच्चक्खाणं उत्तरगुणेसु खमणाइयं अणेगविहं । तेण य इहयं पग्थं तंपिय इणमो दसविहं तु ॥ ९ ॥ अणागयमइकंतं कोडियसहिअं निअंतिअं चव । सागारमणागारं परिमाणकडं
निरवसेसं ॥ १६६० ॥ संकेयं चव अद्दाए, पच्चक्खाणं तु दसविहं । सयमेवऽणुपालणियं, दाणुवएसे जह समाही ॥ १ ॥ होही पज्जोसवणा मम य तथा अंतराइयं हुज्जा । गुरुवेयावच्चेणं
तवस्सि गेल्लयाए वा ॥ २ ॥ सो दाइ तवोकम्मं पडिवज्जे तं अणागए काले । एयं पच्चक्खाणं अणागयं होइ नायव्वं ॥ ३ ॥ पज्जोसवणाइ तवं जो खलु न करेइ कारणज्जाए । गुरुवेयावच्चेणं
तवस्सि गेल्लयाए वा ॥ ४ ॥ सो दाइ तवोकम्मं पडिवज्जइ तं अइच्छिइए काले । एयं पच्चक्खाणं अइकंतं होइ नायव्वं ॥ ५ ॥ पट्टवणओ य दिवसो पच्चक्खाणस्स निट्टवणओ य । जहियं
समिंति दुन्निवि तं भन्नइ कोडीसहियं तु ॥ ६ ॥ मासे मासे य तवो अमुगो अमुगे दिणंमि एवइओ । हट्टेण गिलाणेण व कायव्वो जाव ऊसासो ॥ ७ ॥ एयं पच्चक्खाणं नियंटियं धीरपु-
रिसपन्नत्तं । जं गिण्हंतऽणगारा अणिस्सिअप्पा अपडिवद्दा ॥ ८ ॥ चउदसपुब्बी जिणकप्पिएसु पढमंमि चव संघयणे । एयं विच्छिन्नं खलु थेरावि तथा करेसीय ॥ ९ ॥ मयहरमागारेहिं
अन्नत्थवि कारणंमि जायंमि । जो भत्तपरिच्चायं करेइ सागारकडमेयं ॥ १६७० ॥ निज्जाय कारणंमी मयहरगा नो करंति आगारं । कंतारवित्तिदुब्भिकखयाइ एयं निरागारं ॥ १ ॥ सव्वं
असणं सव्वं पाणगं सव्वखज्जभुज्जविहिं । वोसिरइ सव्वभावेण एयं भणियं निरवसेसं ॥ २ ॥ दत्तीहि उ कवलेहि व घरेहिं भिक्खाहिं अहव दव्वेहिं । जो भत्तपरिच्चायं करेइ परिमाणकडमेयं
॥ ३ ॥ अंगुट्टमुट्टिगंठीघरसेउस्सासथिबुगजोइक्खे । भणियं सकेयमेयं धीरेहिं अणंतनाणीहिं ॥ ४ ॥ अद्दापच्चक्खाणं जं तं कालप्पमाणछेएणं । पुरिमइढपोरिसीए मुहुत्तमासद्दमासेहिं
॥ ५ ॥ भणियं दसविहमेयं पच्चक्खाणं गुरुवएसेणं । कयपच्चक्खाणविहिं इत्तो वुच्छं समासेणं ॥ ६ ॥ आह जह जीवघाए पच्चक्खाए न कारए अन्नं । भंगभयाऽसणदाणे धुव कारवणे
य नणु दोसे ॥ ७ ॥ तो (नो) कयपच्चक्खाणो आयरियाइण दिन्न (ज) असणाइं । न य विरइपालणाओ वेयावच्चं पहाणयरं ॥ ८ ॥ नो तिविहं तिविहेणं पच्चक्खइ अन्नदाणकारवणं । सुद्धस्स तओ
मुणिणो न होइ तन्भंगहेउत्ति ॥ ९ ॥ सयमेवऽणुपालणियं दाणुवएसो य नेह पडिसिद्धो । ता दिज्ज उवइसिज्ज व जहासमाहीइ अच्चेसिं ॥ १६८० ॥ कयपच्चक्खाणोऽविय आयरियगि-
लाणबालवुड्ढाणं । दिज्जासणाइ संते लाभे कयवीरियायारो ॥ १ ॥ संविग्गअण्णसंभोइयाण देसेज्ज सइढगकुलाइं । अतरंतो वा संभोइयाण देज्जा जहसमाही ॥ २४८ ॥ भा० । सोही पच्च-
क्खाणस्स छव्विहा समणसमयकेऊहिं । पन्नत्ता तित्थयेरेहिं तमहं वुच्छं समासेणं ॥ ९ ॥ भा० । सा पुण सइहणा जाणणा य विणयाणुभासणा चव । अणुपालणाविसोही भावविसोही भवे
छट्टा ॥ २ ॥ पच्चक्खाणं सव्वभुदेसियं जं जहिं जया काले । तं जो सइहइ नरो तं जाणसु सइहणमुद्धं ॥ २५० ॥ भा० । पच्चक्खाणं जाणइ कप्पे जं जंमि होइ कायव्वं । मूलगुणे उत्तरगुणे तं

जाणसु जाणणासुद्धं ॥ २५१ ॥ किइकम्मस्स विसोहीं पउंजई जो अहीणमइरित्तं । मणवयणकायगुत्तो तं जाणसु विणयओ सुद्धं ॥ २ ॥ अणुभासइ गुरुवयणं अक्खरपयवजणेहिं परि-
सुद्धं । पंजलिउडो अभिमुहो तं जाणऽणुभासणासुद्धं ॥ ३ ॥ कंतारे दुब्बिक्खे आयंके वा महई समुप्पन्ने । जं पालियं न भग्गं तं जाणऽणुपालणासुद्धं ॥ ४ ॥ रागेण व दोसेण व परिणा-
मेण व न दूसियं जं तु । तं खलु पच्चक्खाणं भावविसुद्धं मुणेयव्वं ॥ ५ ॥ एएहिं छहि ठाणेहिं पच्चक्खाणं न दूसियं जं तु । तं सुद्धं नायव्वं तप्पडिवक्खे असुद्धं तु ॥ ६ ॥ थंभा कोहा अ-
णाभोगा, अणापुच्छा असंतई । परिणामओ असुद्धो, अवाउ जम्हा विउ पमाणं ॥ २५७ ॥ भाष्यं । सूरे उग्गए णमोक्कारसहितं पच्चक्खाति चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं
साइमं, अण्णत्थ अणाभोगेणं सहसाकारेणं वोसिरामि ॥ ५१ ॥ 'असणं पाणगं चैव, खाइमं साइमं तथा । एसो आहारविही, चउव्विहो होइ नायव्वो ॥ १६८३ ॥ आसुं खुहं समेई असणं
पाणाणुवग्गहे पाणं । खे माइ खाइमंति य साएइ गुणे तओ साई ॥ ४ ॥ सब्बोऽविय आहारो असणं सब्बोऽवि वुच्चई पाणं । सब्बोऽवि खाइमंतिय सब्बोऽविय साइमं होइ ॥ ५ ॥ जइ
असणमेव सब्बं पाणग अविवज्जणंमि सेसाणं । हवइ ण सेसविवेगो तेण विहत्ताणि चउरोऽवि ॥ ६ ॥ असणं पाणगं चैव, खाइमं साइमं तथा । एवं परूवियंमी, सहहिउं जे सुहं होइ
॥ ७ ॥ अन्नत्थ निवडिय वंजणंमि जो खलु मणोगओ भावो । तं खलु पच्चक्खाणं न पमाणं वंजण च्छलणा ॥ ८ ॥ फासियं पालियं चैव, सोहियं तीरियं तथा । किट्टिअमाराहिअं चैव,
एरिसयंमी पयइयव्वं ॥ ९ ॥ पच्चक्खाणंमि कए आसवदाराइं हुंति पिहियाइं । आसववुच्छेएणं तण्हावुच्छेअणं होइ ॥ १६९० ॥ तण्हावोच्छेदेण य अउलोवसमो भवे मणुस्साणं । अउ-
लोवसमेण पुणो पच्चक्खाणं हवइ सुद्धं ॥ १ ॥ तत्तो चरित्तधम्मो कम्मविवेगो तओ अपुव्वं तु । तत्तो केवलनाणं तओ अ मुक्खो सयासुक्खो ॥ २ ॥ नमुकारपोरिसीए पुरिमइडेगासणे-
गठाणे य । आयंबिल अभत्तट्टे चरमे य अभिग्गहे विगई ॥ ३ ॥ दो छच्च सत्त अट्ट य सत्तऽट्ट य पंच छच्च पाणंमि । चउ पंच अट्ट नव य पत्तेयं पिंडए नवए ॥ ४ ॥ दोच्चेव नमुक्कारे आगारा
छच्च पोरिसीए उ । सत्तेव य पुरिमइडे एगासणगंमि अट्टेव ॥ ५ ॥ सत्तेगट्टाणस्स उ अट्टेवायंबिलंमि आगारा । पंचेव अभत्तट्टे छप्पाणे चरिमि चत्तारि ॥ ६ ॥ पंच चउरो अभिग्गहि निव्वीए
अट्ट नव य आगारा । अप्पाउराण पंच उ हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ १६९७ ॥ पोरुसिं पच्चक्खाति उग्गते सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं ० अण्णत्थऽणाभोगेणं सहसागारेणं पच्चक्खाणं
दिसामोहेणं साधुवयणेणं सब्बसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ ५२ ॥ एक्कासणमित्यादि, अण्णत्थ अणाभोगेणं सहसागारेणं सागारियागारेणं आउंटणपसारणेणं गुरुअब्भुट्टाणेणं पारिट्ठाव-
णियागारेणं महत्तरागारेणं सब्बसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरति ॥ ५३ ॥ 'नवणीओगाहिमए अहवदवपिसियघयगुले चैव । नव आगारा तेसिं सेसदवाणं च अट्टेव ॥ १६९८ ॥ णिव्वियतियं
पच्चक्खातीत्यादि, अण्णत्थऽणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसट्टेणं उक्खित्तविवेगेणं पट्टुच्चमक्खिएणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सब्बसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरति
॥ ५४ ॥ 'गोन्नं नामं तिविहं ओअण कुम्मास सत्तुआ चैव । इक्किक्कंपिय तिविहं जहन्नयं मज्झिमुक्कोसं ॥ ९ ॥ दव्वे रसे गुणे वा जहन्नयं मज्झिमं च उक्कोसं । तस्सेव य पाउग्गं छलणा पंचेव
य कुडंगा ॥ १७०० ॥ लोए वेए समए अन्नाणे खलु तहेव गेलन्ने । एए पंच कुडंगा नायव्वा अंबिलंमि भवे ॥ १ ॥ पंचेव य खीराइं चत्तारि दहीणि सप्पि नवणीता । चत्तारि य तिह्ठाइं
दो वियडे फाणिए दुब्बि ॥ २ ॥ महपुग्गलाइं तिन्नि उ चलचलओगाहिमं तु जं पक्कं । एएसिं संसट्टं वुच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥ ३ ॥ खीरदहीवियडाणं चत्तारि उ अंगुलाइं संसट्टं । फाणिय-
तिह्ठाघयाणं अंगुलमेगं तु संसट्टं ॥ ४ ॥ महपुग्गलरसयाणं अद्वंगुलयं तु होइ संसट्टं । गुलपुग्गलनवणीए अद्वामलयं तु संसट्टं ॥ ५ ॥ आयंबिलमणयंबिल चउद्धा बालवुड्डसहुअसहु । अ-
णहिंडियहिंडियए पाहुणयनिमंतणाऽऽवलिया ॥ ६ ॥ विहिगहियं विहिभुत्तं उव्वरियं जं भवे असणमाई । तं गुरुणाऽणुन्नायं कप्पइ आयंबिलाईणं ॥ ७ ॥ (विहिगहिअं विहिभुत्तं) तह
गुरुहिं (जं भवे) अणुन्नायं । ताहे वंदणपुव्वं भुंजइ से संदिसावेउं (पाठान्तरम् ॥ १ ॥) ॥ चउरो य हुंति भंगा पढमे भंगंमि होइ आवलिया । इत्तो य तइयभंगो आवलिया होइ नायव्वा ॥ ८ ॥
पच्चक्खाणेण कया पच्चक्खावित्तएवि सूयाए (उ) । उभयमवि जाणगेअर चउभंगो गोणिदिट्टंतो ॥ ९ ॥ मूलगुणउत्तरगुणे सब्बे देसे य तहय सुद्धीए । पच्चक्खाणविहिन्नू पच्चक्खाया गुरु
होइ ॥ १७१० ॥ किइकम्माइविहिन्नू उवओगपरो य असढभावो य । संविग्गथिरपइन्नो पच्चक्खावित्तओ भणिओ ॥ १ ॥ इत्थं पुण चउभंगी जाणगइअरंमि गोणिनाएणं । सुद्धासुद्धा
पढमंतिमा उ सेसेसु अ विभासा ॥ २ ॥ दव्वे भावे य दुहा पच्चक्खायव्वयं हवइ दुविहं । दव्वंमि य असणाई अन्नाणाई य भावंमि ॥ ३ ॥ सोउं उवट्टियाए विणीयऽवक्खित्ततदुवउत्ताए ।
एवंविहपरिसाए पच्चक्खाणं कहेयव्वं ॥ ४ ॥ आणागिज्झो अत्थो आणाए चैव सो कहेयव्वो । दिट्टंतिउ दिट्टंता कहणविहिविराहणा इअरा ॥ ५ ॥ पच्चक्खाणस्स फलं इह परलोए अ
होइ दुविह तु । इहलोइ धम्मलाई दामन्नगमाइ परलोए ॥ ६ ॥ पच्चक्खाणमिणं सेविऊण भावेण जिणवरुद्धिं । पत्ता अणंतजीवा सासयसुक्खं लहुं मुक्खं ॥ ७ ॥ नायंमि गिण्हि-
यव्वे अगिण्हियव्वंमि चैव अत्थंमि । जइयव्वमेव इइ जो उवएसो सो नओ नाम ॥ ८ ॥ सव्वेसिंपि नयाणं बहुविहवत्तव्वयं निसामित्ता । तं सब्बनयविसुद्धं जं चरणगुणट्टिओ साहु

१२१९ आवश्यकं सनिर्यु- सूक्तिकं मूलसूत्रं, निर्दुष्कृता + अस्सयव्वी-६

॥१७१९॥ इति पञ्चकखाणऽज्झयणनिजुत्ती समत्ता ६॥ भाष्यं २५७॥ सूत्राणि ५४॥ सूत्रगाथाः ३१॥ प्रक्षिप्ताः ४२॥ संग्रहण्यः ७१॥ श्रीभद्रबाहुस्वामिविरचितं श्रीमदावश्यकं मूलसूत्रं १॥